एक दशक

Systems Unit,
... of Educational
... ation
... Marg, New Delhi-110016
DOC. No. ....
Date..............................

NIEPA DC
D06414

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
उत्तर प्रदेश
1991

प्रथम प्रस्तुति

1991

5542
370.78
UTT-A

Sub. National Systems Unit,
National Institute of Educational
Planning and Administration
17-B, Sri Aurobindo Marg, New Delhi-110016
DOC. No. D-6414
Date 3-10-91

राज्य शैक्षिक अनुसंधान
और
प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक :

निदेशक,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
और
प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश

प्रेरणा और परामर्श :

श्री हरिप्रसाद पाण्डेय
निदेशक,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
उत्तर प्रदेश

सुझाव और समीक्षा :

श्री महानन्द मिश्र निदेशक, शैक्षिक तकनीकी विभाग	अध्यक्ष
श्री श्याम नारायण राय निदेशक, मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग	सदस्य
श्री गौरीशंकर मिश्र, प्राचार्य, प्रारम्भिक शिक्षा विभाग	सदस्य
श्री रवि चन्द्र कुमार निदेशक, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग	सदस्य

सम्पादन :

श्री ज्ञानदत्त पाण्डेय प्राचार्य, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग	सदस्य सचिव

पुरोवाक्

प्रदेश की शिक्षा में गुणवत्ता के विकास एवं सम्बर्द्धन हेतु सितम्बर 1981 में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश का सृजन हुआ। तब से अब तक परिषद ने एक दशक की महत्वपूर्ण यात्रा की है और इस अवधि में प्रदेश की शिक्षा के विभिन्न आयामों—शैक्षिक शोध, प्रशिक्षण, शिक्षा का गुणात्मक स्तरोन्नयन, अभिनव शैक्षिक प्रयोगों का संचालन और सम्बर्द्धन, शिक्षा का सार्वजनीकरण आदि को मूर्तरूप प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों, विचार-गोष्ठियों, कार्यशालाओं के माध्यम से परिषद सतत् क्रियाशील रही है।

अपने इस एक दशकीय अभियान में परिषद ने जहाँ एक ओर शिक्षा में गुणात्मकता के सम्बर्द्धक के रूप में अपने को प्रतिष्ठित किया है वहीं दूसरी ओर प्रदेश को विशिष्ट शैक्षिक संस्थाओं की प्रगतिशील, कार्यपरक और उद्‌देश्यनिष्ठ अधुनातन स्वरूप प्रदान करने का भरपूर प्रयास किया है। परिणामस्वरूप शैक्षिक नवोन्मेष के क्षेत्र में प्रदेश स्तर पर इसकी व्यापकता के प्रभाव परिलक्षित होने लगे है।

प्रस्तुत 'एक दशक' के प्रकाशन का मूल उद्‌देश्य शिक्षा जगत और जन सामान्य के समक्ष परिषद और उसके विभिन्न विभागों के विगत एक दशक के क्रियाकलापों की प्रस्तुति है। यह इसलिए वांछनीय है कि इस विशाल प्रदेश की शैक्षिक समस्याओं का वास्तविक परिज्ञान तभी सम्भव हो सकता है, जब इस क्षेत्र में लगे कर्मियों की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके।

इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए मैं परिषद के विभिन्न विभागाध्यक्षों, इसे मूर्तरूप देने में प्रयासरत शोधकर्त्ताओं एवं अन्य सम्बन्धित महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार प्रगट करता हूँ। आशा एवं विश्वास है कि इस प्रकाशन से परिषद के समन्वित क्रियाकलापों का दिग्दर्शन प्राप्त होगा तथा शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत अभिकर्मियों, प्रशासकों, छात्रों एवं शिक्षकों को प्रेरणा मिलेगी।

सुधी अध्येयताओं एवं विचारकों के सुझाव एवं उनकी सम्मतियों का स्वागत है।

लखनऊ
दिनांक : 17-6-91

हरिप्रसाद पाण्डेय
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
उत्तर प्रदेश

पुरोवाक्

प्रदेश की शिक्षा में गुणवत्ता के विकास एवं सम्बर्द्धन हेतु सितम्बर 1981 में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश का सृजन हुआ। तब से अब तक परिषद ने एक दशक की महत्वपूर्ण यात्रा की है और इस अवधि में प्रदेश की शिक्षा के विभिन्न आयामों—शैक्षिक शोध, प्रशिक्षण, शिक्षा का गुणात्मक स्तरोन्नयन, अभिनव शैक्षिक प्रयोगों का संचालन और सम्बर्द्धन, शिक्षा का सार्वजनीकरण आदि को मूर्तरूप प्रदान करने के लिए। प्रशिक्षण कार्यक्रमों, विचार-गोष्ठियों, कार्यशालाओं के माध्यम से परिषद सतत् क्रियाशील रही है।

अपने इस एक दशकीय अभियान में परिषद ने जहाँ एक ओर शिक्षा में गुणात्मकता के सम्बर्द्धक के रूप में अपने को प्रतिष्ठित किया है वहीं दूसरी ओर प्रदेश की विशिष्ट शैक्षिक संस्थाओं को प्रगतिशील, कार्यपरक और उद्देश्यनिष्ठ अधुनातन स्वरूप प्रदान करने का भरपूर प्रयास किया है। परिणामस्वरूप शैक्षिक नवोन्मेष के क्षेत्र में प्रदेश स्तर पर इसकी व्यापकता के प्रभाव परिलक्षित होने लगे हैं।

प्रस्तुत 'एक दशक' के प्रकाशन का मूल उद्देश्य शिक्षा जगत और जन सामान्य के समक्ष परिषद और उसके विभिन्न विभागों के विगत एक दशक के क्रियाकलापों की प्रस्तुति है। यह इसलिए वांछनीय है कि इस विशाल प्रदेश की शैक्षिक समस्याओं का वास्तविक परिज्ञान तभी सम्भव हो सकता है, जब इस क्षेत्र में लगे कर्मियों की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके।

इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए मैं परिषद के विभिन्न विभागाध्यक्षों, इसे मूर्तरूप देने में प्रयासरत शोधकर्त्ताओं एवं अन्य सम्बन्धित महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार प्रगट करता हूँ। आशा एवं विश्वास है कि इस प्रकाशन से परिषद के समन्वित क्रियाकलापों का दिग्दर्शन प्राप्त होगा तथा शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत अभिकर्मियों, प्रशासकों, छात्रों एवं शिक्षकों को प्रेरणा मिलेगी।

सुधी अध्येताओं एवं विचारकों के सुझाव एवं उनकी सम्मतियों का स्वागत है।

लखनऊ
दिनांक : 17-6-91

हरिप्रसाद पाण्डेय
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
उत्तर प्रदेश

अनुक्रम

1. पुरोवाक्   श्री हरिप्रसाद पाण्डेय, निदेशक,
राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश

2. प्रारम्भिक शिक्षा विभाग एवं अनौपचारिक शिक्षा एकक 1

3. मानविकी और समाजिक विज्ञान विभाग 17

4. विज्ञान और गणित विभाग 26

5. मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग 40

6. शैक्षिक तकनीकी विभाग 64

7. श्रव्य-दृश्य और शिक्षा प्रसार विभाग 82

8. हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा विभाग 98

9. अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषा विभाग 108

10. प्रकाशन विभाग 120

प्रारम्भिक शिक्षा विभाग एवं अनौपचारिक शिक्षा एकक

(राज्य शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद)

स्थापना :

देश में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मकता लाने हेतु स्वाधीनता प्राप्ति के बाद से निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर 1, सितम्बर 1961 को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की स्थापना, स्वायत्तशासी संगठन के रूप में नयी दिल्ली में की गयी। इसी के अनुरूप प्रदेश स्तर पर राज्य शिक्षा संस्थानों की स्थापना की गयी। प्रदेश में राज्य शिक्षा संस्थान की स्थापना राजाज्ञा संख्या डी० आई०/4682/-×v—/38/1963 के अनुसार 1, फरवरी 1964 में की गयी।

शिक्षा आयोग (1964-65) ने अपने प्रतिवेदन में संस्थान को महत्व देते हुए यह अनुशंसा की थी कि राज्य शिक्षा संस्थान, राज्य के शिक्षा निदेशालय का "मुख्य शैक्षिक अंग" होगा। अपनी इस भूमिका के अन्तर्गत यह संस्थान, विभाग एवं शासन के तकनीकी परामर्शदाता का कार्य भी करता रहा है। संस्थान के प्राचार्य, बेसिक एवं माध्यमिक शिक्षा परिषदों के पदेन सदस्य होते हैं। इससे प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा के सम्बन्ध में नीतियों के निर्धारण एवं कार्यान्वयन की दिशा में संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है अप्रैल 1981 में प्रदेश में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की स्थापना की गयी। इसके पश्चात यह संस्थान परिषद के अधीन "प्रारम्भिक शिक्षा विभाग" के नाम से अभिहित किया गया है।

भौतिक परिवेश :

यह संस्थान प्रयाग रेलवे स्टेशन के निकट एलनगंज में स्थित है। मुख्य भवन में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के दो विभाग कार्यरत हैं :—प्रारम्भिक शिक्षा विभाग (राज्य शिक्षा संस्थान) तथा विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान)। इसी प्रांगण में अनौपचारिक शिक्षा एकक भी स्थित है। संस्थान के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु आने वाले विभिन्न जनपदों के प्रतिभागियों हेतु छात्रावास की व्यवस्था है जिसमें लगभग 60 प्रतिभागियों को आवासीय सुविधा उपलब्ध करायी जा सकती है। संलग्न-शोध आदर्श विद्यालय का अपना पृथक भवन तथा प्रांगण है। संस्थान के प्रांगण में अपना ट्यूबवेल, पृथक-पृथक महिला एवं पुरुष प्रसाधन, हरे-भरे छायादार वृक्ष, फूलों के पौधे, लॉन तथा दो मैदान हैं।

उद्देश्य :

प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक विकास हेतु स्थापित इस संस्थान के मुख्य उद्देश्य निम्नवत् हैं—

- ० शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों तथा निरीक्षक वर्ग के अधिकारियों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की व्यवस्था करना ।
- ० क्रियात्मक शोध कार्यक्रमों द्वारा शिक्षण विधाओं एवं मूल्यांकन प्रणाली आदि में सुधार करना ।
- ० प्रसार कार्यक्रमों का आयोजन करना ।
- ० प्रारम्भिक शिक्षा से सम्बन्धित राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करना ।
- ० प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों के कार्यक्रमों के मूल्यांकन सम्बन्धी अनुशीलन कार्यक्रमों का संचालन करना ।
- ० प्रारम्भिक शिक्षा के विकास का मूल्यांकन करना ।
- ० प्रारम्भिक शिक्षा से सम्बन्धित विषयों के पाठ्यक्रम एवं शिक्षक-संदर्शिकाओं का निर्माण करना ।
- ० उपयोगी एवं महत्वपूर्ण शैक्षिक-सामग्री का प्रकाशन करना ।
- ० केन्द्र तथा राज्य पुरोनिधानित प्रारम्भिक स्तरीय योजनाओं का संचालम करना ।

प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के कार्य :

इस संस्थान के मुख्य कार्यो को निम्नवत् वर्गीकृत किया गया है :—

- ० शोध
- ० प्रशिक्षण
- ० प्रकाशन एवं
- ० प्रसार

इन कार्यक्रमों को मुख्य संस्थान, प्राविधिक इकाई प्रकोष्ठ, पत्राचार प्रशिक्षण अनुभाग अनौपचारिक शिक्षा एकक, सांख्यिकी इकाई तथा राज्य शोध आदर्श विद्यालय की सहायता से सम्पन्न किया जाता है। इसके अतिरिक्त युनिसेफ एवं यू० एन० एफ० पी० ए० की वित्तीय सहायता एवं एन० सी० ई० आर० टी० के शैक्षिक मार्गदर्शन से भी कतिपय शैक्षिक परियोजनाएँ संचालित की जाती हैं।

1,. शोध कार्य :

युगीन परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा एवं शैक्षिक कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने के लिए शोध कार्यों का महत्व निर्विवाद है। अतः निर्धारित कार्यक्रम के

अनुसार संस्थान अपने विविध अनुभागों द्वारा पाठ्यक्रम निर्माण-संशोधन, पुस्तक लेखन, कक्षा शिक्षण, निरीक्षण, विद्यालय प्रबन्ध, मूल्यांकन आदि क्षेत्रों में वास्तविक स्थिति का आकलन कर व्यावहारिक कठिनाइयों के परिप्रेक्ष्य में उनके निवारणार्थ क्रियात्मक शोध करके प्राप्त निष्कर्षों को क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं (शिक्षक, प्रशिक्षक, निरीक्षक) तक पहुँचाकर, उसके द्वारा आवश्यक मार्ग दर्शन किया जाता है जिनका विवरण निम्नवत् है :—

1. प्रारम्भिक स्तरीय पाठ्यक्रम :—विगत दस वर्षों में यहाँ दो बार कक्षा 1 से 8 तक के पाठ्यक्रम का संशोधन एवं परिमार्जन किया गया है । तृतीय बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में संस्तुत दस केन्द्रक बिन्दुओं तथा नवीन सम्बोधों को दृष्टिगत रखते हुए प्रारम्भिक तथा जूनियर स्तरीय पाठ्यक्रम का विकास किया गया है ।

2. बी० टी० सी० सेवापूर्व तथा सेवारत प्रशिक्षण पाठ्यक्रम :—1981 में बी० टी० सी० द्विवर्षीय पाठ्यक्रम का निर्माण एवं पुनः राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में इसका संशोधन, परिमार्जन एवं प्रवर्द्धन किया गया । 15 दिवसीय सेवारत (पुनर्बोधात्मक) प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का निर्माण एवं पुनः संशोधन कार्य किया गया है ।

3. 40 दिवसीय बी० टी० सी० पाठ्यक्रम :—उच्च शिक्षा प्राप्त, प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों के लिए तैयार किया गया है ।

4. यू० टी० सी० अलीगढ़ के पाठ्यक्रम से बी० टी० सी० पाठ्यक्रम की तुलना एवं निष्कर्ष निष्पादन का कार्य किया गया ।

5. राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तक लेखन :—विगत दस वर्षों में दो बार राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तकों का लेखन कार्य किया गया है जिसमें सामाजिक अध्ययन (कक्षा एक से आठ), बेसिक उर्दू रीडर (कक्षा 1 से 3), हमारी जुबान भाग-1 (कक्षा 6) कृषि विज्ञान (कक्षा 6 से 8) भाग 1,2 और 3, स्काउटिंग (कक्षा 6 से 8) का निर्माण किया गया तत्पश्चात् राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में नवविकसित पाठ्यक्रमानुसार कक्षा 1 से 8 तक के विषयों पर नवीन सम्बोधों तथा दसों केन्द्रक बिन्दुओं का समावेश करते हुए पाठ्य-पुस्तकों की संरचना की गयी । कक्षा 1 से 3 तथा 6 के लिए विभिन्न विषयों की राष्ट्रीयकृत पुस्तकों का पुनर्लेखन किया गया है । इसके अतिरिक्त कक्षा 6,7,8 की हमारा इतिहास और नागरिक जीवन भाग 1,2,3 का उर्दू अनुवाद किया गया है । कक्षा 1-2 के लिए उर्दू-गणित पुस्तक का निर्माण किया गया । कक्षा 3 एवं 6 की उर्दू पुस्तकों का पुनर्लेखन एवं कक्षा 3-6 के विभिन्न विषयों की पुस्तकों का उर्दू अनुवाद किया गया ।

6. ह्रास एवं अवरोध निवारण परियोजना :—यह योजना प्राथमिक स्तर पर ह्रास एवं अवरोध के कारणों का अध्ययन करने और उनके निवारणार्थ उपयुक्त विधियों तथा उपायों को खोजने के उद्देश्य से इलाहाबाद जनपद के शंकरगढ़ विकास क्षेत्र में 75-76 से आरम्भ की गयी । तदनन्तर इसका विस्तार रायबरेली के [illegible] जनपद के

जर्मा विकास क्षेत्रों में किया गया । 1981 से 86 तक यह परियोजना पुनः इलाहाबाद जनपद के सिराथू और कौड़िहार विकास खण्डों के सभी प्राथमिक विद्यालयों में चलायी गयी । परियोजना सम्बन्धी आख्या एवं संस्तुतियाँ "प्रगति और प्रेरणा" तथा "प्राथमिक कक्षाओं में ह्रास एवं अवरोध सम्बन्धी अध्ययन" नामक पुस्तकों के रूप में प्रकाशित की गयीं ।

7. अन्य शोध कार्य :—संस्थान द्वारा निम्नांकित क्षेत्रों में भी शोध कार्य किये गये-कक्षा शिक्षण, निरीक्षण, मूल्यांकन, बालिका शिक्षा, विद्यालयीय व्यवस्था सम्बन्धी सामान्य सुधार, अनौपचारिक शिक्षा, उत्प्रेरक निरीक्षण, अभिस्वीकृत विद्यालय, विद्यालयीय समस्याओं पर आधारित 104 क्रियात्मक शोध, छात्रों में नैतिक मूल्यों की अवधारणा, पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण के प्रति शिक्षकों में रुचि उत्पन्न करना, वर्तमान शिक्षक-प्रशिक्षण की उपादेयता, प्राथमिक एवं जूनियर स्तरीय पाठ्यक्रमों का 40 सप्ताह में विभाजन, सेवारत प्रशिक्षण का शिक्षकों पर प्रभाव, वर्तनी सुधार, नैतिक मूल्यों के विकास का मूल्यांकन तथा 23 विभिन्न विषयों पर शोध कार्य किये गये ।

2. प्रशिक्षण :

प्राथमिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों तथा निरीक्षकों के अभिनवीकरण कार्यक्रम आयोजित किये गये ताकि उन्हें प्राथमिक शिक्षा की अभिनव प्रवृत्तियों, नवीन विधाओं एवं संकल्पनाओं तथा शैक्षिक प्रशासन आदि से अवगत कराया जा सके ।

1. शिक्षक एवं शिक्षक-प्रशिक्षक-क्षेत्र में क्रियान्वित की जाने वाली शैक्षिक योजनाओं, अभिनव प्रवृत्तियों, नवीन संकल्पनाओं, बी० टी० सी० पाठ्यक्रम के विषय एवं विधागत संशोधनों, पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण, कार्यानुभव आदि से अवगत कराने के लिये शिक्षक-प्रशिक्षण केन्द्रों के प्रधानाध्यापकों, विषय-अध्यापकों एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों को प्राविधिक इकाई द्वारा अभिनवीकृत किया गया है । यूनिसेफ सहायता प्राप्त परियोजनाओं, जनसंख्या शिक्षा परियोजना तथा अन्य योजनाओं के अन्तर्गत भी इन्हें यथावश्यक अभिनवीकृत किया गया है ।

2. निरीक्षक एवं पर्यवेक्षक-इन अधिकारियों को दिये जाने वाले प्रशिक्षण के दो प्रकार हैं यथा—

(i) सेवापूर्व प्रशिक्षण :—इसके अन्तर्गत नवनियुक्त बेसिक शिक्षा अधिकारियों, उप बालिका विद्यालय निरीक्षिकाओं तथा उप विद्यालय निरीक्षकों को शिक्षा की नवीन योजनाओं, विद्यालय सुधार के कार्यक्रमों, सेवा सम्बन्धी नियम-विनियमों, वित्तीय नियमों तथा शिक्षा की नवीनतम संकल्पनाओं से अवगत कराया गया है ।

(ii) सेवारत अभिनवीकरण :—विगत दस वर्षों में प्राविधिक इकाई द्वारा उन्हें प्रति वर्ष उपयोगितापरक प्रशिक्षण दिया गया है। निरीक्षण की उपयुक्त विधाओं, दायित्वों, शैक्षिक प्रशासन, माइक्रोलेविल प्लानिंग, सेवा सम्बन्धी नियम-विनियम एवं नवीन सम्बोधों से अवगत कराया गया है।

(iii) प्राथमिक स्तरीय शिक्षक :—संस्थान द्वारा संचालित विभिन्न परियोजनाओं के अन्तर्गत इन अध्यापकों को परियोजना के क्रियान्वयन से समय-समय पर अभिनवीकृत किया गया है। प्रतिवर्ष राष्ट्रीय तथा राज्य स्तरीय पुरस्कृत शिक्षकों की गोष्ठियों का आयोजन भी किया गया है।

(iv) बी० टी० सी० पत्राधारित प्रशिक्षण :—शिक्षा के गुणात्मक पक्ष के उन्नयन की दृष्टि से अप्रशिक्षित अध्यापकों को प्रशिक्षित करना अनिवार्य समझा गया। अतः पत्राचार अनुभाग द्वारा विगत वर्षों में बी० टी० सी० पाठ्य-क्रमानुसार पाठ लिखवाये गये तथा उन्हें सेवारत प्रशिक्षार्थियों हेतु सम्बद्ध दीक्षा विद्यालयों (परामर्श केन्द्रों) के माध्यम से उपलब्ध कराया गया। सम्प्रति बेसिक शिक्षा परिषदीय विद्यालयों के लगभग 1754 अप्रशिक्षित उर्दू अध्यापक/अध्यापिकाओं को, जिनकी सेवाएँ 30-6-89 को 5 वर्ष से कम थीं, प्रशिक्षित किया जा रहा है।

1. प्रकाशन :

शैक्षिक उन्नयन सम्बन्धी कार्यक्रमों, संस्थान के क्रिया-कलापों, शैक्षिक महत्व के नवीन ज्ञान, शिक्षा की अभिनव प्रवृत्तियों, संकल्पनाओं, विधाओं आदि से शिक्षा के अभि-कर्मियों को अवगत कराने के उद्देश्य से संस्थान द्वारा प्रासंगिक साहित्य का प्रकाशन किया गया है। संस्थान के प्रकाशन मुख्यतः दो प्रकार के हैं—

1. स्थायी प्रकाशन तथा 2. अस्थायी प्रकाशन

1. स्थायी प्रकाशन—इसके अन्तर्गत 'संस्थान समाचार', 'संस्थान विचार', 'प्रतिभा की किरण', 'मनीषा' तथा 'चेतना' आते हैं।

0 संस्थान समाचार :—इसका प्रकाशन 1964 से प्रारम्भ होकर 1985 तक किया गया। इसके 84 अंक प्रकाशित किये गये जिसमें शैक्षिक महत्व की सामग्री यथा-आयोजित गोष्ठियों की आख्या, लेख, विशिष्ट कार्यों की आख्या आदि प्रकाशित की गयी थीं।

0 संस्थान विचार :—इसका प्रकाशन वर्ष 69-70 से प्रारम्भ किया गया। 1986 तक इसके 17 अंक प्रकाशित किये गये। इसमें शिक्षा के गुणात्मक सुधार सम्बन्धी शैक्षिक साहित्य का प्रकाशन किया गया।

0 प्रतिभा की किरण :—इसमें प्रतिवर्ष राष्ट्रीय तथा राज्य पुरस्कार प्राप्त प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के शिक्षा सम्बन्धी अनुभव एवं सुझावों पर आधारित लेखों का प्रकाशन किया गया है।

0 मनीषा :—शैक्षिक महत्व के विषयों पर, मासिक विचार गोष्ठियों में हुए विचार-विमर्श तथा पढ़े हुए पत्रकों पर आधारित सामग्री का प्रकाशन किया गया है। यह वार्षिक प्रकाशन वर्ष 1986 से 88 के बीच ही किया गया।

0 चेतना :—जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी इस पत्रिका का त्रैमासिक प्रकाशन किया गया है।

2. अस्थायी प्रकाशन—इसके अन्तर्गत किये जाने वाले प्रकाशन निम्नवत् हैं—

0 उत्तर प्रदेश के प्राइमरी एवं जूनियर हाई स्कूलों का पाठ्यक्रम।

0 प्रशिक्षण इकाई द्वारा बी० टी० सी० द्विवर्षीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (1981), 15 दिवसीय पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों तथा अपर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों का सैद्धान्तिक अभिनवीकरण, संशोधित बी० टी० सी० पाठ्यक्रम, बी० टी० सी० अध्यापन विज्ञान सम्बन्धी पाँच संदर्शिकाएँ, प्राब्लम्स ऑफ ड्राप आउट एण्ड स्टैगनेशन इन उ० प्र०, नैतिक शिक्षा संदर्शिका, कार्यानुभव की प्रायोगिक परियोजनाएँ भाग 1, 2, 3, एवं 4, शिक्षा की नवीन संकल्पनाएँ, प्रति उप विद्यालय निरीक्षक एवं सहायक बालिका विद्यालय निरीक्षिकाओं का पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण, 40 दिवसीय बी० टी० सी० पाठ्यक्रम, पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण संदर्शिका, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य संदर्शिका, बी० टी० सी० संशोधित पाठ्यक्रम, संशोधित पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, हिन्दी, इतिहास, नागरिक शास्त्र, भूगोल, गणित, मनोविज्ञान की पृथक-पृथक पुनर्बोधात्मक संदर्शिकाएँ, पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण विशेषांक, शिक्षण एवं शैक्षिक प्रशासन के नवीन आयाम, कार्यानुभव (नैतिक शिक्षा, स्काउटिंग गाईडिंग) संदर्शिका, शिक्षक संदर्शिका (सामाजिक अध्ययन, हिन्दी, नैतिक शिक्षा) पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण क्यों और कैसे ? शैक्षिक शोध परियोजनाएँ, कार्यानुभव शिक्षक संदर्शिका, पर्यावरण संदर्भ पुस्तिका, संस्कृत, उर्दू, बंगला कैसे पढ़ाएँ ? अपने आप करो, बी० टी० सी० की पाँचों संदर्शिकाओं का संशोधन, गूँजते स्वर का प्रकाशन किया गया।

0 पत्राचार प्रशिक्षण अनुभाग :—द्वारा पत्राधारित प्रशिक्षण साहित्य का प्रकाशन, उर्दू अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु पाँचों प्रश्न पत्रों पर आधारित साहित्य का प्रकाशन किया गया।

6 यूनिसेफ सहायताप्राप्त परियोजनाएँ :—

0 पोषण स्वास्थ्य शिक्षा एवं पर्यावरणीय स्वच्छता :—पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं पर्यावरणीय स्वच्छता, पाठ्यपुस्तक कक्षा 1—5, शिक्षक संदर्शिका, संदर्भ व्यक्तियों के लिए हस्तपुस्तिका, प्राइमरी एवं मिडिल स्तरीय 30-40 सप्ताह का पाठ्यक्रम, फोल्डर्स, चार्ट, पोस्टर एवं कैलेन्डरों का प्रकाशन किया गया।

0 पाठ्यक्रम नवीनीकरण परियोजना—भाषादीप 1, 2, 3, 4 और 5, बाल गणित भाग 2, 3, 4, 5, परिवेशीय अध्ययन (सामाजिक) भाग 1, 2, 3, परिवेशीय अध्ययन भाग 1, 2, 3 कक्षा 3 के लिए 15 जनपदों के अलग-अलग पाठ एवं 15 शिक्षक संदर्भ, वर्णित सभी विषयों की शिक्षक संदर्शिकाएँ प्रकाशित की गयीं।

0 सामुदायिक शिक्षा एवं सहभागिता :—मातृ शिशु की देखभाल, प्राथमिक चिकित्सा, एवं गृह परिचर्या, गुड़िया एवं बांस के खिलौने बनाना, संतुलित भोजन-क्या, क्यों और कितना खाएँ ? मिट्टी और पेपर मेशी के खिलौने, भाषा भारती, फल संरक्षण, चमड़े का झोला और थैला बनाना, वृक्ष हमारे साथी, बाल भवित, उजाले की ओर, अब और नहीं, धुंआ उगलता चूल्हा, घर फूंक तमाशा क्यों देखें, नन्हें मुन्नों को बहरा होने से बचाएँ का प्रकाशन किया गया।

0 पूर्व प्राथमिक शिक्षा :—द्वारा शिशु गीत, बोल री कठपुतली, इलाहाबाद की सैर, पोल खुल गई, प्यारी-प्यारी मेरी माँ, हमारे मददगार, हमारे मत्र, शिक्षक संदर्शिकाएँ आदि प्रकाशित की गयी हैं।

0 प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम :—द्वारा प्राइमरी स्तर के 77 माड्यूल (436 कैप्सूल) प्राइमरी स्तरीय पाठ्यक्रम, मूल्यांकन हेतु प्रश्न बैंक एवं हस्तपुस्तिका का प्रकाशन किया गया।

0 जनसंख्या शिक्षा परियोजना :—द्वारा जनसंख्या शिक्षा का परिचय, डिस्ट्रिक्ट ट्रेनिंग प्रोग्राम इन पापुलेशन एजूकेशन, फेस टू फेस ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन पापुलेशन एजूकेशन, तीन जनसंख्या दिग्दर्शिकाएँ, जनसंख्या शिक्षा पाठ्यक्रम कक्षा 8, 10, 11, 12 बी० टी० सी०, एल० टी० एवं अनौपचारिक शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा संदर्शिका-प्राइमरी, मिडिल तथा अनौपचारिक शिक्षा हेतु, जनसंख्या शिक्षा-नई दिशा, पापुलेशन एजूकेशन गाइड बुक, अनौपचारिक अनुदेशकों की संदर्शिका आदि का प्रकाशन किया गया है।

1. प्रसार—शैक्षिक उन्नयन को दृष्टिगत रखते हुए संस्थान द्वारा निर्मित विविध सामग्री, एन० सी० ई० आर० टी० तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त सामग्री आदि का क्षेत्रों में प्रसार किया जाता है।

पुस्तकालय—संस्थान में एक पुस्तकालय की व्यवस्था भी है जिसमें विभिन्न विषय पर लगभग 8430 पुस्तकें हैं, एन० सी० ई० आर० टी० से प्राप्त पत्रिकाएँ भी हैं। हिन्दी के समाचार पत्र और पत्रिकायें यथा वामा, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, कादम्बिनी, धर्मयुग, इण्डिया टुडे आदि भी ली जाती हैं।

उपर्युक्त कार्यों के सम्पादन में संस्थान के विभिन्न अनुभाग एवं परियोजनाएँ महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नवत् हैं :—

1. प्राविधिक इकाई प्रकोष्ठ :

शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन को दृष्टिगत रखते हुए राजाज्ञा संख्या 3419/15 (13)-1462-73 द्वारा 3 फरवरी 1975 को इस इकाई की स्थापना की गयी ताकि प्रदेश के समस्त जनपदों के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों का प्रत्येक पाँचवें वर्ष पुनर्बोधन कर, उनकी कार्य क्षमता का विकास किया जा सके। इस इकाई द्वारा पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण केन्द्रों हेतु साहित्य सृजन, शोध, प्रकाशन, प्रसार, केन्द्रों का व्यक्तिगत निरीक्षण तथा मार्ग दर्शन का कार्य किया गया। साथ ही सेवारत तथा सेवापूर्व पाठ्यक्रमों का निर्माण विभिन्न प्रदेशों के पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन, संशोधन, प्रवर्द्धन, विषयगत तथा विधागत विभिन्न संदर्शिकाओं तथा संदर्भ पुस्तिकाओं का निर्माण, क्रियात्मक शोध, मूल्यांकन की विधाओं, नैतिक शिक्षा सम्बन्धी साहित्य सृजन एवं वृहत सेवारत प्रशिक्षण, आपरेशन ब्लैक बोर्ड प्रशिक्षण तथा अद्युनातन विधाओं से शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं निरीक्षक अधिकारियों को अभिनवीकृत किया गया है।

2. पत्राचार प्रशिक्षण अनुभाग :

बेसिक परिषदीय सेवारत अप्रशिक्षित अध्यापकों को शिक्षण सम्बन्धी आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाना शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन हेतु आवश्यक समझा गया। अतः इस अनुभाग द्वारा पत्राचार विधि से सेवारत बी० टी० सी० प्रशिक्षण दिया गया। पाठ्यक्रमाधारित पाठों को सम्बद्ध दीक्षा विद्यालयों (परामर्श केन्द्र) के माध्यम से, रजिस्टर्ड सेवारत प्रशिक्षार्थियों को दिया गया। तत्पश्चात् सम्पर्क शिविरों का आयोजन करके उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन भी दिया गया। भेजे गये पाठों के अंत में दिये गये प्रश्नों के 30 प्रतिशत उत्तर संस्थान को तथा 70% उत्तर सम्बन्धित परामर्श केन्द्रों को भेजे गये। जिन्हें मूल्यांकनोपरान्त प्रशिक्षार्थियों को वापस कर दिया गया। प्रशिक्षण के बाद रजिस्ट्रार विभागीय परीक्षाओं द्वारा प्रथम तथा द्वितीय वर्ष के अन्त में सामान्य प्रशिक्षार्थियों के साथ इनकी परीक्षा ली गयी। सम्प्रति बेसिक शिक्षा परिषदीय विद्यालयों के 1754 अप्रशिक्षित उर्दू अध्यापक/अध्यापिकाओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

3. सांख्यिकी अनुभाग :

इस अनुभाग द्वारा शैक्षिक महत्व की सूचनाओं को संकलित करके क्षेत्र में गुणात्मक एवं संख्यात्मक विकास का कार्य प्रशस्त किया गया है।

4. युनिसेफ सहायताप्राप्त योजनाएँ :

गत दस वर्षों में युनिसेफ की वित्तीय सहायता तथा एन० सी० ई० आर० टी० के सहयोग से इस संस्थान द्वारा कई शैक्षिक परियोजनाएँ चलायी गयीं जिनमें से कुछ का कार्य पूर्ण हो चुका है तथा कुछ परियोजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इनसे सम्बन्धित विवरण इस प्रकार है—

1. परियोजना संख्या-1 (पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं पर्यावरणीय स्वच्छता) :

इस योजना द्वारा बच्चों एवं अभिभावकों के उत्तम स्वास्थ्य, शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु पोषण की आवश्यकता समझाने, पौष्टिक भोजन के चयन, तैयारी एवं संरक्षण सम्बन्धी ज्ञान दिया तथा पर्यावरणीय स्वच्छता की वांछनीय प्रवृत्तियों का विकास किया गया। इस परियोजना का क्रियान्वयन 1982 से 1989 तक की अवधि में कौड़िहार तथा चायल विकास खण्डों के 100 प्राथमिक विद्यालयों में किया गया। उपर्युक्त उद्देश्यों की क्षति पूर्ति हेतु प्राथमिक स्तरीय पाठ्यक्रम, पाठयपुस्तकों एवं शिक्षक संदर्शिकाओं में अपेक्षित सम्बोधों का समावेश किया गया तथा 30-40 सप्ताह के कार्यक्रम से सम्बन्धित संदर्शिकाओं का निर्माण तथा विद्यालयों में वितरण किया गया। चित्र, पोस्टर, चार्ट, कैलेन्डर और शैक्षिक सामग्री का विकास एवं प्रसार किया गया।

2. परियोजना संख्या-2 (प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम नवीनीकरण) :

यह परियोजना दो चक्रों में, प्रदेश के 15 जनपदों के 150 प्राथमिक विद्यालयों में वर्ष 1976 से 1986 तक चलायी गयी। इसके अन्तर्गत क्षेत्रों की सामाजिक, आर्थिक व प्राकृतिक परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए कक्षा 1 से 5 तक का पाठ्यक्रम विकास, पाठ्यपुस्तकों, कार्यपुस्तकों, शिक्षक संदर्शिकाओं का निर्माण कर प्रयोग व परीक्षण किया गया। पाठ्यपुस्तकें, प्रदेश की बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा स्वीकृत की गयी हैं।

3. परियोजना संख्या-3 (सामुदायिक शिक्षा तथा सहभागिता) :

1977 से प्रारम्भ इस योजना द्वारा समुदाय के उन सभी लोगों की न्यूनतम शैक्षिक आवश्यकताओं की क्षति पूर्ति हेतु कार्यक्रमों का विकास, प्रयोग और परीक्षण किया गया जो विद्यालय से बाहर थे। समुदाय के प्रत्येक वय वर्ग हेतु (3-6, 6-14, 15-35) जीवनोपयोगी, व्यावहारिक शैक्षणिक सामग्री केन्द्रों को उपलब्ध करायी गयी। 1986 से युनिसेफ की वित्तीय सहायता बन्द होने के बावजूद स्थानीय सहयोग से काम चलाया गया।

4. परियोजना संख्या-4 (पूर्व प्राथमिक शिक्षा योजना) :

1983 से प्रारम्भ इस परियोजना द्वारा 3-5 वय वर्ग के शिशुओं को रचनात्मक खेलों, गीतों, विकासात्मक क्रियाओं द्वारा प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार किया जाता है।

इसे इलाहाबाद जनपद के चायल एवं मूरतगंज विकास खण्डों के चयनित 64 प्राथमिक विद्यालयों में, नवनियुक्त पूर्व प्राथमिक शिक्षिकाओं को द्विमासीय सघन प्रशिक्षण देकर संचालित किया गया। कक्षा 1 एवं 2 के शिक्षकों हेतु भाषा, गणित, पर्यावरणीय शिक्षा तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति पर संदर्शिकाएँ एवं शिशु गीतों के कैसेट तैयार किये गये।

5. परियोजना संख्या-5 (प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम) :

इस परियोजना का लक्ष्य 6-14 वय वर्ग के विद्यालय छोड़ देने या प्रवेश ही न लेने वाले बच्चे थे। 1978 से इस परियोजना का क्रियान्वयन 121 दीक्षा विद्यालयों तथा 7 क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के माध्यम से किया गया। परियोजना के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु अधिगम केन्द्र सहायकों, दीक्षा विद्यालय के शिक्षकों, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के केप प्रभारियों, संस्थानों के प्रधानों तथा सम्बन्धित पर्यवेक्षकों आदि को अपेक्षित प्रशिक्षण दिया गया। कार्य समाप्ति के पश्चात् इस योजना का मूल्यांकन किया जाने वाला है।

6. यूनिसेफ सहायता प्राप्त क्षेत्र सघन शिक्षा परियोजना :

1988 से इलाहाबाद जनपद के चायल विकास खण्ड में चलायी गयी। इस परियोजना द्वारा विकास खण्ड के प्रत्येक वय वर्ग हेतु शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन प्रशिक्षण, स्वास्थ्य एवं पेय जल की सुविधा, समुदाय की सहभागिता, ग्राम स्तरीय शिक्षा एवं माइक्रोलेविल प्लानिंग करके कार्यक्रम आयोजित किये गये। कार्यक्रमों के संचालन हेतु सिलाई मशीन, खेल, सामग्री, आय वृद्धि के उपकरण, वाद्ययन्त्र दिये गये हैं।

7. जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम :

यू० एन० एफ० पी० ए० की वित्तीय सहायता तथा एन० सी० ई० आर० टी० के सहयोग से यह कार्यक्रम 1981 से प्रारम्भ किया गया है। इसके द्वारा समुदाय के सभी वय वर्गों के लोगों में जनसंख्या समस्या के प्रति चेतना जागृत की गयी।

कक्षा 1 से 12 तथा प्रशिक्षण सामग्री में जनसंख्या सम्बोध समाहित किये गये। चित्रकला एवं निबन्ध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। सीमित परिवार के मानक के सम्बन्ध में अनुकूल अभिवृत्ति का विकास करने हेतु अनेक प्रयास किये गये।

विकलांग बच्चों के लिए समेकित शिक्षा योजना—आंशिक रूप से विकलांग बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए समेकित शिक्षा प्रदान करने के निमित्त यह योजना चलायी गयी। इसमें 6-11 वय वर्ग के बच्चों को शिक्षा प्रदान की जायगी। प्रदेश के 15 जनपदों के 15 प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक, प्रधानाध्यापक, सम्बन्धित प्रति उप विद्यालय निरीक्षक, सहायक बालिका विद्यालय निरीक्षिकाओं को त्रिदिवसीय बोधात्मक प्रशिक्षण दिया गया तथा प्रदेश स्तर पर 300 विकलांग बच्चों का चयन किया गया।

आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा प्रोग्राम ऑफ एक्शन के अन्तर्गत, प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण हेतु बेसिक शिक्षा परिषदीय मिश्रित जू० बे० स्कूलों को सुदृढ़ एवं साधन सम्पन्न बनाने हेतु यह योजना चलायी गयी। भौतिक एवं शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विविध प्रकार की 37 वस्तुएँ सुलभ करायी गयीं (87-88 में 20 प्रतिशत, 88-89 में 30 प्रतिशत तथा 89-90 में शेष 50 प्रतिशत)। दीक्षा विद्यालयों के शिक्षक-प्रशिक्षकों को दस दिवसीय सघन प्रशिक्षण एवं संदर्शिकाएँ आदि भी उपलब्ध करायी गयीं।

कार्यानुभव योजना :

प्राथमिक स्तर पर इसे प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए 121 प्रशिक्षण केन्द्रों को वित्तीय सहायता एवं प्रशिक्षण दिया गया तथा प्रत्येक विकास खण्ड के 2-2 जू० हाईस्कूलों में टाट-पट्टी का निर्माण, चाक, मोमबत्ती, आदि बनायी गयी। प्राइमरी एवं जूनियर स्तरों हेतु कार्यानुभव शिक्षक संदर्शिका का निर्माण भी किया गया।

पर्यावरणीय शिक्षा कार्यक्रम :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुपालन में प्रदेश शासन के निर्णयानुसार प्राइमरी स्तरीय (जनपद स्तर) तथा मिडिल स्तरीय (क्षेत्र तथा मण्डल स्तर) पाठ्यक्रम एवं पूरक पाठ्य पुस्तकें विकसित की जा रही हैं।

राष्ट्रीय पर्यावरण चेतना अभियान : के अन्तर्गत प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के हेतु एप्रोप्रियेट टेक्नॉलाजी डेवेलपमेंट एसोसियेशन लखनऊ की नोडल एजेन्सी बना कर कई चक्रों में अभिनवीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

स्कूली शिक्षा के पर्यावरणीय शिक्षा में समायोजन की केन्द्र पुरोनिधानित योजना : हेतु शासन से स्वीकृति मिल गयी है और बुन्देलखण्ड मण्डल के झांसी, हमीरपुर, बांदा, जालौन और ललितपुर का चयन किया गया है। विद्यालयी पौधशाला की स्थापना हेतु इसी मण्डल के 236 प्राइमरी तथा जूनियर हाईस्कूलों का चयन किया गया है।

जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थानों (डी० आई० ई० टी०) की स्थापना :

इसमें राज्य के प्रत्येक जनपद में एक प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की जानी है। इस केन्द्र पुरोनिधानित योजना के प्रथम चरण (87-88) में 20, द्वितीय चरण में (88-89) 20 तथा तृतीय चरण में (89-90) 22 जनपदों में डायट की स्थापना का लक्ष्य था। 40

डायट स्थापित कर दिये गये हैं। 22 के प्रस्ताव बनाकर भारत सरकार की स्वीकृति हेतु भेजा गया है।

नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण :

वर्तमान समाज में नैतिक मूल्यों के ह्रास को रोकने के लिए वर्ष 1985-87 के मध्य, 121 दीक्षा विद्यालयों, 7 क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के शिक्षक-प्रशिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, मण्डलीय अधिकारियों, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों (पुरूष एवं महिला) उप बालिका विद्यालय निरीक्षिकाओं, उप विद्यालय निरीक्षकों, प्रति उप विद्यालय निरीक्षकों एवं जिला बालिका विद्यालय निरीक्षिकाओं को प्रशिक्षित कर उनके व्यक्तित्व का परिष्कार एवं उनके माध्यम से छात्रों को लाभान्वित करने हेतु नैतिक शिक्षा संदर्शिका एवं कैसेट्स तैयार कर वितरित किये गये।

दूर संचार माध्यम द्वारा अध्यापक प्रशिक्षण :

शिक्षकों हेतु आवश्यक विभिन्न कौशल एवं शैक्षिक तकनीकों पर बिन्दुवार 42 वार्ताएँ, प्रसारण हेतु तैयार कर निदेशक, एस० सी० ई० आर० टी० को भेजी गयीं जिनका प्रसारण आकाशवाणी लखनऊ से किया गया।

अन्य कार्यक्रम :

भारत सरकार, उ०प्र० शासन एवं शिक्षा विभाग द्वारा समय-समय पर दिये गये कार्यक्रमों का सम्पादन किया गया यथा शिक्षा संहिता में संशोधन, सामुदायिक गायन शिविर, उर्दू शिक्षा, विभिन्न योजनाओं का निर्माण, प्रत्येक पढ़ाये एक, विविध पत्रकों का लेखन, आपत्तियों के निवारण, कार्यशालाओं में सहभागिता आदि कार्य सम्पन्न किये गये।

राजकीय शोध आदर्श विद्यालय :

इसकी स्थापना 1890 में हुई थी। यह पहले रा० दी० विद्यालय, फिर जूनियर बेसिक ट्रेनिंग कालेज और 1964 से राज्य शिक्षा संस्थान के साथ संलग्न कर दिया गया है। इसमें 1 से 8 तक कक्षाएँ हैं तथा सामान्य विषयों के अतिरिक्त कला, कृषि, कताई-बुनाई तथा संगीत शिक्षण की व्यवस्था है। संस्थान द्वारा प्रस्तावित शैक्षिक उन्नयन सम्बन्धी योजनाओं, सुधार कार्यक्रमों के प्रयोग-परीक्षण, शोध परियोजनाओं आदि के प्रयोग-परीक्षण के निकटतम सुलभ स्थल की भूमिका का निर्वहन इस विद्यालय द्वारा सदैव किया गया है।

अनौपचारिक शिक्षा एकक

प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्त करने के लिए भारत सरकार के सहयोग से प्रदेश में वर्ष 1979-80 से अनौपचारिक शिक्षा योजना, औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के

पूरक के रूप में प्रारम्भ की गयी । इस योजना के अन्तर्गत 9-14 वय वर्ग के ऐसे बालक-बालिकाओं को शिक्षा देने की व्यवस्था की गयी है जो आर्थिक, सामाजिक एवं अन्य किन्हीं कारणों से विद्यालयी शिक्षा नहीं प्राप्त कर सके हैं अथवा किन्हीं कारणों वश बीच में ही शिक्षा छोड़ चुके हैं । ये सदैव वंचित न रह जाएँ अत: उनकी सुविधानुसार शिक्षा देने की व्यवस्था इस योजना के अन्तर्गत की गयी है ।

राज्य शिक्षा संस्थान में अनौपचारिक शिक्षा के विविध कार्यों के सम्पादन हेतु 1980 में एक एकक स्थापित किया गया तथा इसे राज्य शिक्षा संस्थान से संलग्न किया इस एकक में एक वरिष्ठ परामर्शी और 4 परामर्शी कार्यरत हैं ।

अनौपचारिक शिक्षा प्रकोष्ठ द्वारा निम्नांकित कार्य सम्पादित किये गये हैं—

1. पाठ्यपुस्तकें-ज्ञानदीप भाग 1, 2, 3, 4 एवं 5 (3, 4, 5 दो खण्डों में);
2. पाठ्यक्रम एवं अन्य साहित्य-प्राइमरी एवं मिडिल स्तरीय पाठ्यक्रम, शिक्षक निर्देशिका, नॉन फारमल एलिमेन्ट्री एजूकेशन इन उ० प्र०, उ० प्र० में अनौपचारिक शिक्षा, शिक्षक संदर्शिका, पर्यवेक्षण, प्रेरणा, पोस्टर, फोल्डर, वर्णमाला चार्ट ।
3. अनुदेशकों, नवनियुक्त महिला पर्यवेक्षिकाओं, प्रोजेक्ट अधिकारियों आदि का प्रशिक्षण ।
4. विभिन्न स्तर पर मूल्यांकन (छात्र, केन्द्र, कार्यक्रम, पाठ्यवस्तु) कार्य किया गया ।
5. कार्यक्रम का अनुश्रवण विभिन्न स्तरों पर किया गया है ।

प्राचार्य तालिका

क्र० सं०	प्राचार्य	अवधि
1.	श्री वी० पी० सकलानी	मार्च 64 से 25-11-65
2.	श्री सुकदेव पन्त	1-12-65 से 13-6-66
3.	श्री रामहित राम	14-6-66 से 25-8-66
4.	श्री पी० के० शुक्ला	26-8-66 से 24-10-66
5.	श्री एस० एम० बाकर	5-11-66 से 13-2-68
6.	श्री सुधाकर शर्मा	4-5-68 से 23-8-68
7.	श्री श्रीनिवास शर्मा	9-9-68 से 31-7-71

8.	श्री सुधाकर शर्मा	1-8-71 से 23-8-75
9.	श्री शिवदत्त त्रिवेदी	16-12-75 से 31-7-78
10.	श्री एस० एन० धौलाखण्डी	1-8-78 से 8-2-84
11.	डॉ० राधा मोहन मिश्र	8-2-84 से 9-9-88
12.	श्री राजपति तिवारी	10-9-88 से 31-7-89
13.	श्री गौरी शंकर मिश्र	1-8-89

स्टाफ की स्थिति

प्राचार्य (3000-4750)	1
उपाचार्य (3000-4500)	1
सहयुक्त निदेशक (3000-4500)	1
सहायक उप निदेशक (2200-4000)	5
वरिष्ठ शोध प्राध्यापक (2200-4000)	2
सांख्यिकी अधिकारी (2200-4000)	1
शोध प्राध्यापक (2000-3500)	6
जनसंख्या शिक्षा परियोजना अधिकारी (2000-3500)	1
प्रोफेसर (2000-3500)	2
शोध पार्षद (1600-2660)	4
प्रवक्ता (1600-2660)	18
सांख्यिक (570-1100 पुराना)	1
सांख्यिकी सहायक (620-820 पुराना)	1
योग—	45

तृतीय श्रेणी कर्मचारी :

वरिष्ठ सहायक (1400-2600)	1
वरिष्ठ सहायक (1400-2300)	2

वरिष्ठ सहायक (1200-2040)	3
आशुलिपिक (1200-2040)	3
वरिष्ठ लिपिक (1200-2040)	8
पुस्तकालयाध्यक्ष (1200-2040)	1
कनिष्ठ लिपिक (950-1500)	2
योग—	20

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी :

दफ्तरी (775-1025)	2
ड्राइवर (950-1500)	5
मैकेनिक (750-1025)	1
परिचारक (750-940)	13
योग—	21

रा० शोध आदर्श विद्यालय :

प्रधानाध्यापक (1400-2300)	1
सहायक अध्यापक (1200-2040)	12
कार्यालय लिपिक (1200-2040)	1
चतुर्थ वर्ग कर्मचारी (750-940)	2
योग—	16

अनौपचारिक शिक्षा एकक :

वरिष्ठ परामर्शी (3000-4750)	1
परामर्शी (3000-4500)	4
कार्यालय लिपिक (1200-2040)	1
आशु लिपिक (1400-2300)	1
चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी (750-940)	1
योग—	8

मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग

(राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान)

इलाहाबाद

गौरवपूर्ण अतीत और उज्जवल भविष्य :

वर्ष 1896 में गवर्नमेन्ट ट्रेनिंग कालेज के रूप में स्थापित इस संस्था की राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग तक की गौरवपूर्ण यात्रा में अनेक स्मरणीय मोड़ हैं। माध्यमिक स्तरीय अध्यापकों के उच्च स्तरीय प्रशिक्षण हेतु संचालित यह संस्थान प्रारम्भ में प्रयाग विश्वविद्यालय से सम्बद्ध था और एल० टी० प्रशिक्षण का प्रमाणपत्र प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया जाता था। 1927 में प्रयाग विश्वविद्यालय से सम्बद्धता को समाप्त कर दिया गया और इसे शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश के नियंत्रण में रख दिया गया।

इस संस्था की जीवन यात्रा में आचार्य नरेन्द्रदेव समिति का प्रतिवेदन एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ। इस समिति ने राज्य की शिक्षा व्यवस्था को गति और निर्देशन प्रदान करने के लिए जिस प्रकाश स्तम्भ को परिकल्पना की थी वह इस संस्थान के केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान के रूप में उच्चीकृत होने से साकार हुई। यह नाम परिवर्तन संस्था से की जाने वाली अपेक्षाओं की प्रतिध्वनि थी। परिकल्पित यह था कि इस संस्था में उपलब्ध विशेषज्ञता का लाभ शैक्षिक चिन्तन, मनन, शोध और परीक्षण के क्षेत्र में विभाग को मिले जिससे राज्य के शैक्षिक स्तरोन्नयन हेतु नवाचारों के प्रयोग और परीक्षण को प्रोत्साहित किया जा सके और संस्था को शोध क्षेत्र और क्षेत्रीय समस्याओं को शोधशाला तक पहुँचाने में सेतु बन सके।

संस्था के गौरवपूर्ण अतीत के वातायन में झांकते ही हमें अपने पूर्व छात्राध्यापकों का भी सहसा स्मरण हो आता है। हमें गर्व है कि गोदान, कफन, कर्मभूमि जैसी कृतियों के यशस्वी लेखक मुंशी प्रेमचन्द्र, भारतीय संस्कृति के प्रसिद्ध अध्येता और राजनेता पं० दीन दयाल उपाध्याय इस संस्था के छात्र रहे। श्री चन्द्र मोहन नाथ चक, डा० चन्द्रमोहन भाटिया, डा० सीतावर सरन, डा० डी० डी० तिवारी, डा० गुरु मौज प्रकाश प्रभृति विभाग के उच्च पदों को सुशोभित करने वाले इस संस्थान से सम्बद्ध रहे हैं।

परिषद का गठन और विभागों का पुनर्गठन :

राज्य की शैक्षिक व्यवस्था को गति देने और गुणवत्ता में वृद्धि हेतु निर्देशन, परामर्श और समन्वयन के लिए वर्ष 1981 में राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद,

उत्तर प्रदेश का गठन होने पर मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान को परिषद् का मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग बनाया गया ।

बदलते परिवेश और नूतन अपेक्षाएँ :

गवर्नमेन्ट ट्रेनिंग कालेज से परिषद् के मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग तक की लम्बी यात्रा में इस संस्था से की जाने वाली अपेक्षाएँ भी युगीन आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहीं । इन अपेक्षाओं का आभास निम्नांकित रेखाचित्र से मिल सकता है—

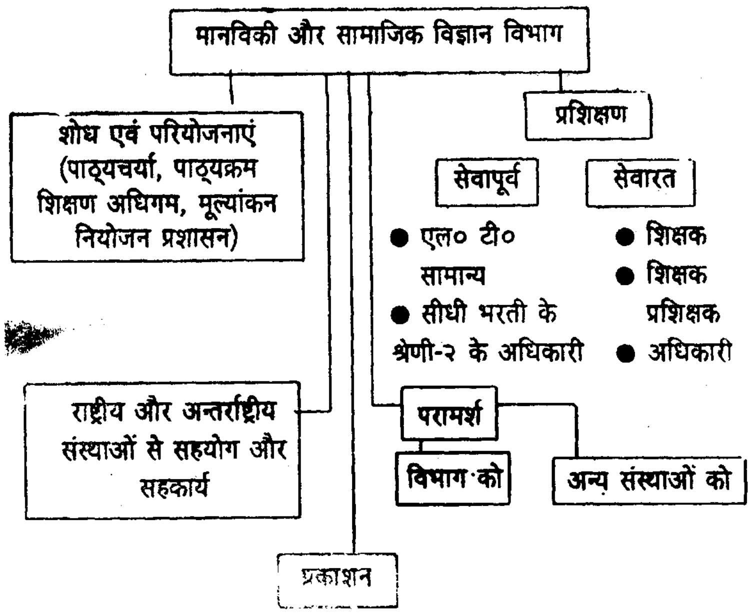

इन अभिसिप्त उद्देश्यों की प्राप्ति, विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता अर्जन-विकास एवं दायित्वों के सुचारु निष्पादन एवं निर्वहन हेतु विभिन्न अनुभागों/इकाइयों का गठन किया गया था । वर्ष 1990 तक संस्थान का संरचनात्मक ढाँचा निम्नवत् था :

(क) प्रशिक्षण अनुभाग

(ख) पठ्यचर्या एवं अध्यापन विज्ञान-शोध अनुभाग

(ग) श्रव्य-दृश्य शिक्षा अनुभाग

(घ) उपचारात्मक शिक्षा अनुभाग

(ङ) शारीरिक शिक्षा अनुभाग

वर्ष 1990 में विभाग के कार्यों का पुनर्गठन शिक्षा की बहु आयामी प्राथमिकताओं के आधार पर किया गया । सम्प्रति विभाग का संगठनात्मक ढाँचा इस प्रकार है :—

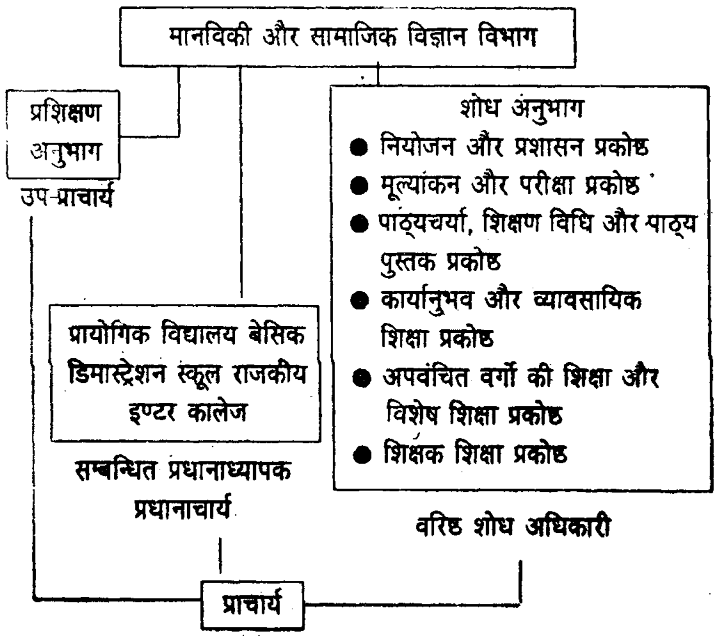

मूर्तिमंत संकल्पना : उपलब्धियाँ :

आचार्य नरेन्द्रदेव कमेटी ने राज्य की शैक्षिक व्यवस्था की गति और निर्देशन प्रदान करने के लिए जिस प्रकाश स्तंभ की संकल्पना की थी और जिसके आधार पर इस प्रशिक्षण महाविद्यालय को एक संस्थान के रूप में उच्चीकृत किया गया था, वह संकल्पना आज मूर्तिमन्त हो रही है । आज इस संस्था को प्रशिक्षण, शोध और परामर्श—प्रत्येक क्षेत्र में एक अग्रणी संस्था का स्थान प्राप्त है । यद्यपि संस्था की सशक्त एवं सुस्पष्ट पहचान उसकी उच्चस्तरीय प्रशिक्षण व्यवस्था से ही होती रही हैं किन्तु परिषद् के मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग के रूप में अन्य क्षेत्रों में भी इस विभाग की उपलब्धियाँ इसके सशक्त हस्ताक्षर हैं । गत एक दशक की कतिपय महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं :—

प्रशिक्षण :

प्रशिक्षण कार्यक्रम इस संस्था की प्रमुख गतिविधि रही है । प्रशिक्षण कार्यक्रम राज्य के शैक्षिक उन्नयन हेतु किये जा रहे प्रयासों की एक महत्वपूर्ण कड़ी है । शोध संस्था से सम्बद्ध होने से इस प्रशिक्षण का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि अभिनव प्रवृत्तियों एवं शैक्षिक समस्याओं के निराकरण हेतु किये जा रहे अनुसन्धान कार्यों का परीक्षण अपनी

प्रयोगशालाओं—राजकीय बेसिक डिमान्स्ट्रेशन स्कूल और राजकीय इन्टर कालेज, इलाहाबाद में प्रशिक्षणार्थियों के माध्यम से ही किया जाता है। संस्था के प्रशिक्षणार्थी हमारी सफल कार्यनीतियों के व्यापक संचारण के संवाहक बनते हैं।

सेवापूर्व एल० टी० प्रशिक्षण का दशकीय परीक्षाफल हमारे प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणवत्ता का द्योतक है।

सीधी भर्ती के श्रेणी-2 के अधिकारियों का प्रशिक्षण :

सेवापूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम की शृंखला में शिक्षा विभाग के सीधी भर्ती के श्रेणी—2 के अधिकारियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम भी इस विभाग को सौंपा गया है। इस प्रशिक्षण में अध्यापन विज्ञान के अतिरिक्त शैक्षिक नियोजन, प्रशासन, मूल्यांकन की अधुनातन तकनीकों से परिचित कराने के अतिरिक्त विभागीय कार्यक्रमों एवं कार्यप्रणाली से भी परिचित कराया जाता है। इस शृंखला में वर्ष 1984 में तीन, 85 में पाँच, 86 में एक, 87 में एक और 89 में चार अधिकारियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी।

सेवारत प्रशिक्षण-यावज्जीवमधीते विप्र :

"शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली सतत् प्रक्रिया है" इस आदर्श को मानते हुए विभागीय अधिकारियों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन समय-समय पर किया जाता है जिससे वे शिक्षा क्षेत्र की नवीन गतिविधियों, कार्यक्रमों, अभिनव प्रवृत्तियों एवं अधुनातन तकनीकों से परिचित हो सकें।

इस शृंखला में सीधी भर्ती एवं प्रोन्नति से नियुक्त प्रधानाचार्यों/प्रधानाचार्याओं का तेरह दिवसीय वित्तीय, प्रबन्धकीय एवं अकादमिक प्रशिक्षण का शुभारम्भ वर्ष 1984 से प्रारम्भ किया गया। अब तक 282 प्रधानाचार्यों को यह प्रशिक्षण/अभिनवीकरण सुविधा उपलब्ध करायी गयी है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न विषयों के प्रतिपादन हेतु विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों, लब्ध प्रतिष्ठ शिक्षाविदों एवं ख्यातिलब्ध प्रशासकों को आमन्त्रित किया जाता है।

सेवारत प्रशिक्षण कार्यकमों की शृंखला में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अन्तर्गत आयोजित प्रशिक्षण, व्यावसायिक शिक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण एवं स्काउटिंग एवं नैतिक शिक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षणों का आयोजन भी सम्मिलित है।

उत्कृष्ता हेतु जिजीविषा : शैक्षिक शोध :

राज्य की माध्यमिक स्तरीय शैक्षिक व्यवस्था को गति देने, शैक्षिक और प्रबन्धकीय समस्याओं के निराकरण एवं शिक्षा को युगीन आकांक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए निरन्तर प्रयास इस विभाग का आदर्श रहा है। शैक्षिक शोध और अध्ययन

विभाग की इसी जिजीविषा के द्योतक हैं। गत दशक में विभाग के विशेषज्ञों द्वारा किये गये शोध/अध्ययन इस विभाग की अनुसन्धानवृत्ति के परिचायक हैं :

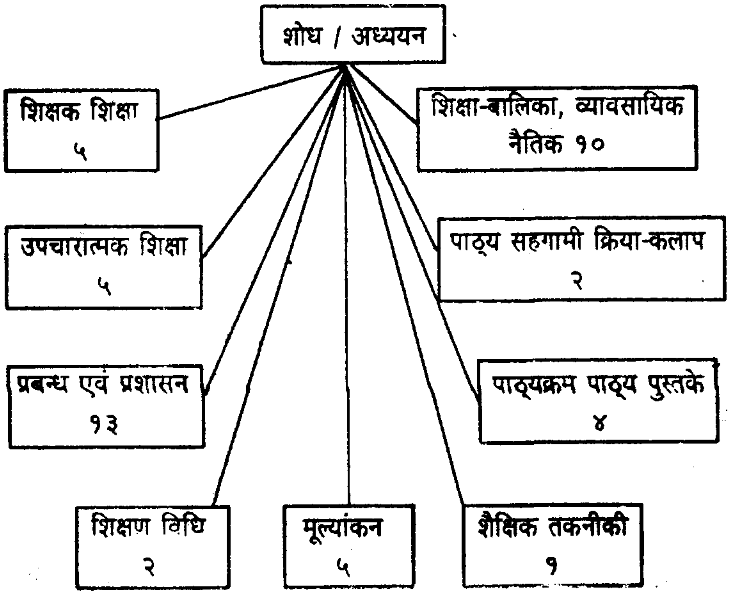

गत दशक में सम्पादित इन शोध/अध्ययनों में से कतिपय अत्यन्त महत्वपूर्ण अध्ययन हैं जिन्हें शिक्षण/प्रशिक्षण की मूल धारा में समाहित कर शिक्षा विभाग ने इस विभाग के चिन्तन, मनन एवं श्रम को सफल किया है।

उपचारात्मक शिक्षा : प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का अंग :

यद्यपि अल्पार्जक छात्रों के लिए उपचारात्मक शिक्षा को एक सशक्त विधा के रूप में मान्यता पहले ही मिल चुकी थी किन्तु प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में उसे वांछित महत्व नहीं प्राप्त हो सका था। इस विभाग के संयोजकत्व में संशोधित एल० टी० सामान्य के पाठ्यक्रम में विशेषज्ञता हेतु उपचारात्मक शिक्षा को सम्मिलित कर एक सफल कार्यनीति का व्यापक संचारण करने का प्रयास किया गया।

शनैः शनैः तैयारी—माइक्रोटीचिंग :

शिक्षण प्रविधि के मूल कौशलों के विकास हेतु "माइक्रोटीचिंग" पद्धति का विकास किया गया था। इस विभाग द्वारा छात्राध्यापकों को वास्तविक कक्षा शिक्षण से पूर्व माइक्रो-टीचिंग द्वारा आधारभूत कौशलों में प्राप्त सफलता से प्रेरणा लेकर एल० टी० सामान्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में माइक्रोटीचिंग पर आधारित तीस पाठों का शिक्षण अभ्यास निर्धारित किया गया है।

समलयता का सृजन—सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम :

प्रदेश में दस वर्षीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा के अनुसार सामाजिक विज्ञान विषय अनिवार्य विषय के रूप में रखा गया है। माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश द्वारा विकसित पाठ्यक्रम में सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित विषयों से सामग्री लेकर सामाजिक विज्ञान का रूप दिया गया था। वस्तुतः यह एक "पैच वर्क" था जिसमें विभिन्न अनुशासनों से ली गयी सामग्री एक दूसरे से असम्पृक्त सी थी। इससे सामाजिक जीवन का वह एकीकृत स्वरूप उभर कर नहीं आ पाता था जिसमें विषयों का अपना अस्तित्व विलीन होकर सामाजिक जीवन में समा जाय। इस अभाव को दूर करने के लिए संस्थान में एक कार्यशाला के माध्यम से एक ऐसे पाठ्यक्रम का प्रारूप विकसित किया गया जिसमें सामाजिक जीवन के विविध पक्षों से सम्बन्धित ज्ञान में लम्बीय और सामान्तर सह सम्बन्ध को इस प्रकार समाहित किया गया है कि आर्केस्ट्रा की भाँति समलयता का सृजन हो सके।

वसुधैव कुटुम्ब की शिक्षा :

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव से ही विश्व में एक ऐसे वातावरण का सृजन हो सकता है जिसमें मानव गरिमा के साथ अपना समग्र विकास कर सके। अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव को बच्चों में प्रारम्भ से ही विकसित करने में शिक्षा की अप्रतिम भूमिका को स्वीकार किया गया है। बच्चों को विभिन्न राष्ट्रों, संस्कृतियों और विचारधाराओं का कक्षास्तर के अनुसार परिचय देकर यह अपेक्षा की जाती रही है कि इससे बच्चों में दूसरों के प्रति सद्भाव और सहिष्णुता का विकास होगा। समग्र रूप में मानव संस्कृति में विभिन्न राष्ट्रों, विभिन्न राष्ट्रों के महापुरुषों, संस्कृतियों एवं विचारधाराओं का क्या योगदान रहा है—इसका प्रस्तुतीकरण स्वतंत्र इकाइयों के रूप में किया जाता रहा है। इससे संस्कृति का वह समष्टि भाव विकसित नहीं हो पाता जिसकी आवश्यकता है। इस विभाग द्वारा इस दिशा में अध्यापकों के निर्देशन हेतु एक शिक्षक संदर्शिका का विकास किया गया जिसमें कुछ मुख्य विचारों को लेकर उनमें विभिन्न संस्कृतियों के योगदान को स्पष्ट करने के लिए सुझाव दिये गये हैं।

1. अन्तः सम्बन्धों का सेतु : शैक्षिक समारोह

एल० टी० और डी० पी० एड० प्रशिक्षण संस्थाओं में निकटता और छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं में स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना के विकास तथा वैचारिक आदान-प्रदान हेतु सार्थक मंच उपलब्ध कराने तथा समृद्ध अनुभव प्रदान करने के उद्देश्य से शैक्षिक समारोह के आयोजन की परम्परा को पुनः प्रारम्भ करना इस दशक की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। वरिष्ठतम प्रशिक्षण संस्था के नाते इस विभाग को ही इस समारोह के आयोजन का सौभाग्य वर्ष 1989 और 1990 में प्राप्त हुआ। वर्ष 1990 में दिनांक 5

से 7 फरवरी की अवधि में आयोजित इस शैक्षिक समारोह में एल० टी० और डी० पी० एड० प्रशिक्षण संस्थाओं के 304 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। समारोह का उद्घाटन श्री बी० पी० खण्डेलवाल, शिक्षा निदेशक (माध्यमिक) उत्तर प्रदेश की अध्यक्षता में माननीय सच्चिदानन्द बाजपेयी, शिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश द्वारा किया गया। तीन दिनों के इस समारोह में विभिन्न क्रीड़ा एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त कक्षा शिक्षण प्रतियोगिता तथा परिचर्चा का आयोजन भी किया गया। समारोह का समापन श्री हरि प्रसाद पाण्डेय, निदेशक, रा० शै० अनु० और प्रशि० परिषद, उ० प्र० द्वारा सम्पन्न हुआ।

2. साध्य नहीं साधन भी :

शैक्षिक समारोह का आयोजन अपने आप में साध्य तो है ही, इस संस्था ने उसका उपयोग साधन के रूप में भी किया है। कार्यक्रम के नियोजन और प्रबन्ध के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्राप्त होता है।

3. संगीत से राष्ट्रीय एकता : सामुदायिक गायन :

संगीत के माध्यम से राष्ट्रीय भावना के विकास के लिए संचालित सामुदायिक गायन के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत इस विभाग में उत्तर भारत के सन्दर्भ व्यक्तियों के प्रशिक्षण का आयोजन इस संस्थान में किया गया।

वादे वादे जायते तत्व बोध : शिक्षा संसद

विचार-विमर्श से विचारणाओं और धारणाओं की स्पष्ट अवधारणा के अतिरिक्त नवीन विचार भी प्रस्फुटित होते हैं। प्रशिक्षणार्थियों में इस वैचारिक मंथन की प्रक्रिया के विकास हेतु संस्थान की शिक्षा संसद सजग है। शैक्षिक समस्याओं, नवीन उद्भावनाओं, अभिनव प्रयोगों, नवाचारों पर समय-समय पर विचार-विमर्श के माध्यम से छात्राध्यापकों को गहन चिन्तन-मनन और भावाभिव्यक्ति का अवसर दिया जाता है। प्रसिद्ध शिक्षाविदों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, नियोजकों एवं प्रशासकों को भी आमंत्रित किया जाता है जिससे शिक्षा के स्तरोन्नयन हेतु चिन्तन धारा अविराम चलती रहे। पिछले वर्षों से प्रो० यू० एन० सिंह, कुलपति, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रो० आर० पी० मिश्र, कुलपति, प्रयाग विश्वविद्यालय, डा० ए० डी० पन्त, निदेशक, गोविन्द बल्लभ पन्त, सामाजिक विज्ञान संस्थान, डा० राम शकल पाण्डेय, प्रमुख, शिक्षा संकाय प्रयाग विश्वविद्यालय प्रभृत शिक्षाविद एवं विचारक संस्थान की संसद को सम्बोधित कर चुके हैं।

और हमारी प्रयोगशालाएँ :

किसी भी अभिनव प्रवृत्ति के व्यापक संचारण से पूर्व उसका विधिवत प्रयोग और परीक्षण कर लिया जाना आवश्यक होता है। जितनी निष्ठा, गहनता और वस्तुनिष्ठता से परीक्षण किये जायेंगे परिणाम उतने ही वैध एवं विश्वसनीय होंगे। संस्थान के प्रयोग परीक्षणों एवं अभ्यास हेतु निम्नलिखित दो संस्थाएँ सम्बद्ध हैं।

(क) बेसिक डिमान्स्ट्रेशन स्कूल :

लगभग एक हजार छात्र संख्या वाला यह विद्यालय जूनियर हाईस्कूल स्तर तक है जिसके निर्देशन एवं प्रशासकीय प्रबन्ध का दायित्व इस विभाग पर है।

(ख) राजकीय इन्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद :

प्रदेश का ख्याति प्राप्त यह विद्यालय संस्थान के माध्यमिक स्तरीय कार्यक्रमों की प्रयोगशाला है, लगभग 6000 नामांकन वाला यह विद्यालय राज्य के उत्कृष्ट विद्यालयों में से एक है। इस संस्था से निकले हुए अनेक विद्यार्थी ज्ञान-विज्ञान, प्रशासन, सुरक्षा आदि क्षेत्रों में उच्च पदों पर आसीन हैं। समाज के अपवंचित और पिछड़े वर्ग के छात्रों को ऐसा वातावरण देने का प्रयास किया जाता है जिससे वे अपना इष्टतम विकास कर सकें।

व्यापक संचारण : प्रकाशन

विभाग द्वारा अपने अभिनव प्रयोगों, सफल कार्यनीतियों एवं शोध निष्कर्षों को क्षेत्र तक पहुँचाने के लिए प्रकाशन किये जाते हैं। गत दशक में परिणामात्मक दृष्टि से प्रकाशन क्षेत्र की उपलब्धियाँ दृष्टव्य हैं :

प्रकाशन (संख्यात्मक)

समग्रतः इस दशक में 31 प्रकाशन किये गये। इन प्रकाशनों के अतिरिक्त कार्य-पत्रक, पत्रक आदि विशिष्ट उद्देश्यों के लिए यथा समय प्रकाशित किये जाते रहे हैं। विषय वस्तु की दृष्टि से प्रकाशनों का वर्गीकरण :

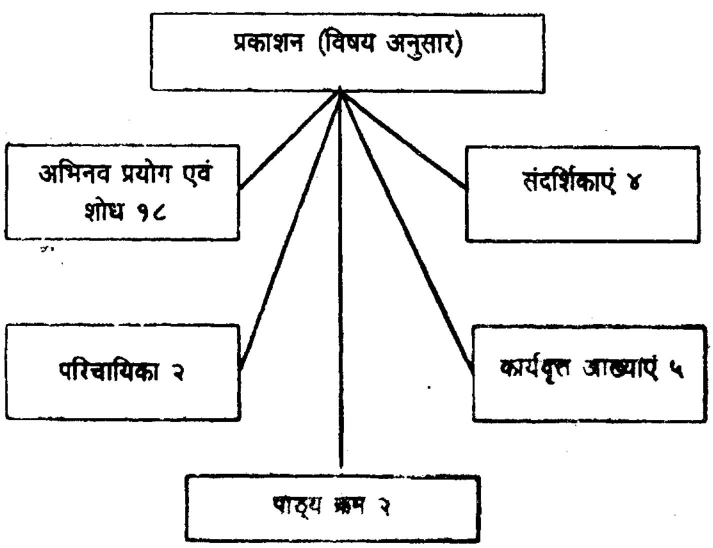

• यह तो पारस है •

प्रशासनिक राजधानी लखनऊ को छोड़ने के बाद शैक्षिक राजधानी इलाहाबाद में इस संस्थान को संस्थान की गरिमा के उपयुक्त एक विशाल परिसर प्राप्त हुआ। महात्मा गाँधी मार्ग पर उन्मुक्त परिसर में हरीतिमा के बीच स्थित पाश्चात्य वास्तु शैली में निर्मित लाल भवन संस्थान की गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु है। संस्थान के परिसर में पत्राचार शिक्षा संस्थान, मनोविज्ञानशाला, अभिलेखागार भी स्थित है। इसी परिसर में पोषित आँग्ल भाषा शिक्षण संस्थान और राज्य हिन्दी संस्थान अब अपने परिसरों में कार्यरत हैं। विभाग का बृहत कक्ष शिक्षा विभाग की शान और अनेक राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय सम्मेलनों और समारोहों का साक्षी है।

यह जानकर हर्ष हुआ कि "परिषद : एक दशक" का प्रकाशन किया जा रहा है जिसमें राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद के विभिन्न विभागों का इतिवृत्त एवं उनकी उपलब्धियाँ उल्लिखित की जायेंगी।

वस्तुत: राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान में प्राचार्य के रूप में कार्य करने का अनुभव अत्यधिक सुखद एवं स्मरणीय रहा है। संस्थान का स्वर्णिम अतीत सदैव ही नवनियुक्त प्रचार्यों को अनुप्राणित करता रहा है और यह स्मरण दिलाता रहा है कि संस्थान की गरिमामयी परम्पराओं को अक्षुण्ण रखना है।

व्यक्ति और संस्था का सम्बन्ध सामान्यत: परिभाषित नहीं किया जा सकता है। अधिकतर यह देखा गया है कि व्यक्ति संस्था का निर्माण करता है परन्तु संस्थान व्यक्तियों का निर्माण करता आया है और उन्हें विशिष्टता प्रदान करता रहा है। यह तो पारस है। जिसने भी इसका संस्पर्श पाया सोना बन गया।

संस्थान के सामने कदाचित् सबसे बड़ी चिंता यह है कि यह राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद का मात्र एक अंग बनकर न रह जाय वरन् अंगी बनकर अपने वैशिष्ट्य को समुन्नत रखे और प्रेरणा का अजस्र स्रोत बना रहे।

आप सहमत होंगे कि इस उपलब्धि तक पहुँचने के लिए अनवरत साधना अनिवार्य है।

शिव दत्त त्रिवेदी
निदेशक
राज्य संसाधन केन्द्र, उ० प्र०
साक्षरता निकेतन, लखनऊ।
4-9-1990

• •

विज्ञान और गणित विभाग

(राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद)

"विज्ञान की अट्टालिका का निर्माण एक धैर्यापेक्षी एवं श्रम साध्य कार्य है।"

(फिण्डले)

1. आधुनिकीकरण के लिए विज्ञान और गणित शिक्षा के प्रचार-प्रसार का शुभारम्भ :

वर्तमान समाज में विज्ञान न केवल विशेषज्ञों, छात्र-छात्राओं एवं विज्ञान शिक्षकों की जिज्ञासा का विषय है वरन् अपनी व्यापकता में वह समस्त जागरूक नागरिकों के ज्ञान का विषय बन चुका है। विज्ञान विषयक शिक्षण कार्य इतना सूक्ष्म और तकनीकी है कि इस विषय को शिक्षकों-छात्रों व शिक्षा जगत से सम्बद्ध निरीक्षक वर्ग के अधिकारियों तक पहुँचाने से पूर्व उसके समुचित सम्प्रेषण के विविध पक्षों का विवेचन और विश्लेषण कर लिया जाना आवश्यक है।

प्रदेश में प्राथमिक स्तर से इण्टरमीडिएट स्तर तक विज्ञान/गणित शिक्षा के विकास, उन्नयन, आधुनिकीकरण एवं गुणात्मक सुधार हेतु वर्ष 1965 में राजाज्ञा सं० सी० आई०/-8846/15-75 (17)/1964 दिनांक 12-2-65 द्वारा राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान की स्थापना की गयी जिसके प्रथम निदेशक सुविख्यात शिक्षाविद् डा० सीतावर सरन थे। भारत सरकार की नीति एवं सुझाव के अनुपालन में प्रदेश सरकार द्वारा सितम्बर 1981 में प्रदेश में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद का गठन किया गया और राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान को विज्ञान और गणित विभाग के रूप में इसकी एक इकाई बनाया गया।

2. विविध आयाम :

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शोध/अध्ययन/सर्वेक्षण, प्रशिक्षण, प्रसार, प्रकाशन और विशिष्ट कार्य, शीर्षकों के अन्तर्गत विज्ञान और गणित विभाग के प्रमुख क्रियाकलाप निम्नवत् हैं :—

प्रशिक्षण—लतीफे के माध्यम से देखें कि "फेरे" (प्रशिक्षण) का कितना अधिक

महत्व है। यदि निम्नलिखित चार को बार-बार फेरा न जाय तो सभी बर्बाद ही जायेंगे :—

प्रश्न—"घोड़ा क्यों अड़ा, !
पान क्यों सड़ा, !
रोटी क्यों जली, !
विद्या क्यों भूली !"
उत्तर—"फेरा न गया"

अर्थात् घोड़ा, पान, रोटी एवं विद्या को बार-बार फेरना आवश्यक है।

इस वैज्ञानिक युग में विज्ञान एवं गणित के ज्ञान क्षेत्र का विस्तार बड़ी ही द्रुत गति से हुआ है। इनमें अनेक नवीन सम्बोधों एवं आयामों का समावेश हुआ है। विज्ञान एवं गणित शिक्षा के उन्नयन एवं इनके शिक्षण में गुणात्मक सुधार की दृष्टि से यह आवश्यक है कि सम्बंधित अध्यापकों/अधिकारियों को शिक्षण की नवीन विधाओं से अवगत कराया जाय और क्लिष्ट प्रकरणों को बोधगम्य बनाने हेतु समय-समय पर प्रशिक्षित किया जाय। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान प्रतिवर्ष विभिन्न स्तर (प्राथमिक, माध्यमिक तथा +2 स्तर) के अधिकारियों एवं अध्यापकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है।

प्रारम्भिक स्तरीय विज्ञान/ गणित अध्यापकों के पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण, हाई स्कूल विज्ञान-1 के अध्यापकों के प्रशिक्षण, हाई स्कूल विज्ञान-2/गणित-2 एवं जीव विज्ञान अध्यापकों के पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण, दीक्षा विद्यालयों के अध्यापकों के पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण, शिक्षा विभाग के अधिकारियों/निरीक्षकों (प्रति उप विद्यालय निरीक्षक/-निरीक्षिकाएँ, उप विद्यालय निरीक्षक/उपबालिका विद्यालय निरीक्षिकाएँ, बेसिक शिक्षा अधिकारी व मण्डलीय विज्ञान प्रगति अधिकारी आदि) के त्रिदिवसीय/पाँच दिवसीय प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है। इन प्रशिक्षणों में विज्ञान एवं गणित के विभिन्न किटों, सहायक शिक्षण सामग्रियों, वर्तमान पाठ्यक्रमों तथा वैज्ञानिक क्रियाकलापों का ज्ञान कराया जाता है।

(अ) हाई स्कूल/इण्टर के अध्यापकों के पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण

वर्ष	प्रतिभागियों की संख्या
1980-81	87
1981-82	243
1982-83	228
1983-84	278
1984-85	159
1985-86	117
1986-87	67
1987-88	28
1988-89	460
1989-90	180

(ब) दीक्षा विद्यालयों के अध्यापकों का प्रशिक्षण

वर्ष	प्रतिभागी
1984-85	71
1985-86	11
1986-87	29
1987-88	30
1988-89	106
1989-90	291

(स) निरीक्षक अधिकारियों का प्रशिक्षण

वर्ष	प्रतिभागी
1984-85	36
1985-86	20
1987-88	33
1988-89	50
1989-90	64—संस्थान में 966—अन्य केन्द्रों पर

उपर्युक्त की भाँति ही प्रतिवर्ष अध्यापकों व अधिकारियों के प्रशिक्षण फेरे आयोजित कर उनकी कार्य-शैली में निखार लाया जाता है।

3. शोध/अध्ययन :

"संसार मेरे अनुसन्धानों के सम्बन्ध में कुछ भी कहे, लेकिन मुझे ऐसा प्रतीत होता हैं कि मैं समुद्र तट पर खेलने वाले उस बच्चे के समान हूँ जिसको कभी-कभी अपने साथियों की अपेक्षा कुछ अधिक सुन्दर पत्थर, सीप व शंख मिल जाते हैं। वास्तविकता तो यह है कि सत्य का अथाह समुद्र मेरे समक्ष अब भी बिना खोजे पड़ा हुआ है।"

—सर आइजक न्यूटन

विज्ञान/गणित विषय को सरल, रोचक तथा इसे आधुनिक बनाने के लिए विभिन्न प्रकरणों पर प्रतिवर्ष संस्थान में शोध कार्य चलता रहता है। इस दशक में संस्थान द्वारा किये गये शोध कार्यों का विवरण निम्नवत् है :—

1. दस वर्षीय सामान्य शिक्षा के अन्तर्गत हाई स्कूल विज्ञान—1 के अध्यापकों हेतु शिक्षण निर्देशिका का विकास किया गया। इस निर्देशिका में पाठ्यक्रम का विस्तार, कठिन सम्बोधों का विस्तार, शिक्षकों के लिए दिशा-निर्देशन बिन्दु एवं नवीन प्रकरण सम्बन्धी सामग्री का विवरण निहित है। (1982-83)

2. पर्यावरण एवं स्थानीय साधनों के उपयोग पर आधारित प्राथमिक विज्ञान किट एवं किट संदर्शिका का विकास किया गया है। इस किट में अधिकांश सामग्री निर्मूल्य अथवा कम मूल्य पर स्थानीय साधनों से प्राप्त की जा सकती है। इस किट संदर्शिका की सहायता से प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण से सम्बन्धित सभी प्रयोगों का प्रदर्शन हो सकता है। (1982-83)

3. हाई स्कूल विज्ञान—1 की पाठ्यपुस्तकों की रचना हेतु आधारभूत सिद्धान्तों एवं निर्देशों का विकास किया गया। विज्ञान—1 की पाठ्यपुस्तकों की रचना हेतु कतिपय आधारभूत सिद्धान्तों एवं उसके अनुपालन हेतु संस्थान के प्रोफेसर्स ने विज्ञान—1 पाठ्यक्रम का गहन अध्ययन किया और विचार-विमर्श के उपरांत आवश्यक निर्देशों का विकास किया। (1982-83)

4. राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा हेतु एक दिग्दर्शिका का विकास किया गया। विज्ञान संस्थान द्वारा विगत वर्षों के राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के प्रश्न-पत्रों का अध्ययन कर विचार-विमर्श किया गया और एक दिग्दर्शिका का विकास किया गया जिसमें प्रश्न-पत्रों, प्रश्नों के स्वरूप से परिचित होने, परीक्षा के नियमों, छात्र-वृत्तियों के विवरण, प्रश्न-पत्रों को सरलता से हल करने की विधियों आदि का वर्णन है। ((1982-83, 1983-84)

5. नये दस वर्षीय विज्ञान—1 पाठ्यक्रम के लिए शिक्षक-संदर्शिका का विकास किया गया। विज्ञान संस्थान द्वारा विज्ञान—1 के पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विषय वस्तु, शिक्षण प्रक्रम, क्रियाकलाप एवं मूल्यांकन संकेत के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन एवं विचार-विमर्श के पश्चात् इस संदर्शिका का विकास कर मुद्रित कराया गया। यह विज्ञान-शिक्षण को सुगम, रोचक, ग्राह्य एवं प्रभावी बनाने में अध्यापकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है। (1983-84)

6. जू० हा० स्कूल जीव विज्ञान किट संदर्शिका एवं प्रायोगिक कार्य दिग्दर्शिका का विकास किया गया। जीव विज्ञान शिक्षण को प्रभावी एवं क्रियाकलाप आधारित बनाने हेतु यह संदर्शिका विकसित की गयी जो कि जू० हा० स्कूल स्तर पर जीव विज्ञान शिक्षण के उन्नयन में बहुत उपयोगी रही। (1983-84, 1984-85)

7. नये दस वर्षीय पाठ्यक्रम विज्ञान—1 एवं न्यूनतम उपकरण हेतु एक संदर्शिका का विकास किया गया। इस संदर्शिका में प्रयोगात्मक कार्य, प्रयोगशाला का मानचित्र, न्यूनतम उपकरण आदि के सम्बन्ध में आवश्यक विवरण दिये गये हैं। (1983-84, 1984-85)

8. जू० हा० स्कूल कक्षाओं हेतु रसायन किट संदर्शिका का विकास किया गया। यह संदर्शिका जू० हा० स्कूल स्तर पर रसायन विज्ञान शिक्षण के उन्नयन और प्रयोग-प्रदर्शन में बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है। (1985-86)

9. प्रारम्भिक स्तरीय विज्ञान/गणित के नवीन पाठ्यक्रम का विकास किया गया। विज्ञान के बदलते परिवेश एवं उपलब्धियों के परिप्रेक्ष्य में पाठ्यक्रम के संशोधन एवं नवीनीकरण के दृष्टिकोण से विज्ञान संस्थान द्वारा 20-7-85 से 24-7-85 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विशेषज्ञों ने एक नवीन पाठ्यक्रम विकसित किया जिसकी चक्रमुद्रित प्रतियाँ तैयार कर वितरित की गयीं। (1985-86)

10. प्रारम्भिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण में उन्नयन :

प्रारम्भिक स्तर पर विज्ञान में गुणात्मक सुधार लाने हेतु एक कार्यक्रम बनाया गया जिसमें चार विद्यालय चयनित कर एक विशेष पृच्छा-प्रपत्र प्रेषित किया गया। तत्पश्चात इन विद्यालयों के छात्रों का मूल्यांकन कर उनकी दुर्बलताओं का पता लगाया गया। इन दुर्बलताओं के सुधार हेतु आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया गया। परिणामस्वरूप छात्रों के परीक्षाफलों में गुणात्मक सुधार हुआ। (1985-86)

11. माध्यमिक स्तरीय गणित (हाई स्कूल गणित—1) पाठ्यक्रम की विवेचना :

इस कार्य हेतु जू० हा० स्कूल एवं हाई स्कूल गणित के पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष निकाले गये जिनसे ज्ञात हुआ कि हाई स्कूल गणित—1 के पाठ्यक्रम में जीवनोपयोगी अंशों का समावेश है और इसका जू० हा० स्कूल के पाठ्यक्रम से सातत्य है।
(1986-87, 1987-88)

12. जू० हा० स्कूल कक्षाओं में विज्ञान विषय में विज्ञान किटों का उपयोग किया जाना—एक अध्ययन :

इस संस्थान द्वारा निर्मित विशेष सर्वेक्षण प्रपत्रों के माध्यम से विभिन्न जू० हा० स्कूलों में विज्ञान किटों के उपयोग सम्बन्धी आँकड़ों का संकलन कर कुछ विद्यालयों का परीक्षण भी किया गया।

अध्ययन पश्चात निष्कर्ष निकला कि अधिकांश विद्यालयों में किटों का रख रखाव अच्छा नहीं है और किटों का उपयोग भी कम किया गया है।
(1985-86, 1986-87, 1987-88)

13. हाई स्कूल तथा इण्टरमीडिएट विज्ञान प्रयोगशालाओं हेतु न्यूनतम उपकरण/सामग्री की सूची का विकास :

हाई स्कूल/इण्टरमीडिएट विज्ञान प्रयोगशालाओं को सुसज्जित करने हेतु न्यूनतम

उपकरण/सामग्री से अवगत करने हेतु संस्थान ने सम्बन्धित कक्षाओं के पाठ्यक्रम का अध्ययन कर उपर्युक्त सूची तैयार की और इसे मुद्रित कर प्रत्येक विद्यालय को प्रेषित किया।

(1987-88)

14. कक्षा 9 से 12 तक भौतिकी, रसायन, जीव विज्ञान एवं गणित विषयों के विभिन्न राज्यों/परिषदों के पाठ्यक्रमों को लेकर उनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया और आख्याएँ तैयार कर सम्बन्धित अधिकारियों को प्रेषित की गयीं। (1989-90)

15. ग्रामीण एवं नगर के इण्टर कालेजों के रसायन विज्ञान प्रयोगशालाओं में उपलब्ध सुविधाओं के परिप्रेक्ष्य में छात्रों द्वारा किये गये प्रयोगात्मक कार्य का विश्लेषण तथा परीक्षाफलों के गुणात्मक स्तर पर इसका प्रभाव :

इलाहाबाद, फतेहपुर, कानपुर, सुल्तानपुर व वाराणसी जनपदों के दो-दो ग्रामीण एवं दो-दो नगरीय इण्टरमीडिएट कालेजों की रसायन विज्ञान प्रयोगशालाओं को चयनित कर संस्थान के प्रोफेसर्स द्वारा एक विशेष पृच्छा-प्रपत्र की सहायता से सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि रसायन प्रवक्ता शिक्षण के अतिरिक्त अन्य विद्यालयीय कार्यों से बोझिल है, प्रयोगात्मक कार्य समय से सम्पन्न नहीं होते, प्रयोगात्मक अभिलेखों की जाँच तथा प्रयोगात्मक कार्यों का मूल्यांकन समय से नहीं किया जाता। अधिकांश प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिक उपकरणों का अभाव है। (1989-90)

16. जू० हा० स्कूल स्तर पर बालिकाओं के गणित शिक्षण की वर्तमान व्यवस्था का एक अध्ययन :

इलाहाबाद जनपद के 25 बालिका जू० हा० स्कूलों का चयन किया गया। एक विशेष पृच्छा-प्रपत्र विकसित कर इन विद्यालयों को प्रेषित किया गया। संस्थान के प्रोफेसर्स ने जाकर विद्यालयों में परीक्षण भी किया। सर्वेक्षण बाद यह निष्कर्ष निकला कि बालिकाओं में भी बालकों की भाँति ही गणित विषय के प्रति अभिरुचि व बौद्धिक क्षमता है। बालिकाओं के इन विद्यालयों में निर्धारित योग्यता की अध्यापिकाओं का अभाव है। अतः गणित का परीक्षाफल न्यून रहता है। (1989-90)

17. 'क्लास प्रोजेक्ट' योजना के अन्तर्गत प्रदेश में स्थापित कम्प्यूटर केन्द्रों की समस्याएँ एवं उनका समाधान—एक अध्ययन :

प्रदेश के कम्प्यूटर केन्द्रों से सम्बद्ध अध्यापकों एवं छात्रों की समस्याओं के अध्ययन एवं उनके समाधान हेतु 14 कम्प्यूटर केन्द्रों को पृच्छा-प्रपत्र प्रेषित किये गये। इन पृच्छा-प्रपत्रों के अध्ययन से निष्कर्ष निकला कि :—

1. विद्यालय की समय सारिणी में कम्प्यूटर कार्य हेतु कोई प्रावधान नहीं है।

2. अधिकांश केन्द्रों पर प्रिंटर यूनिट का प्रयोग नहीं हो रहा है।

3. छात्रों की संख्या के अनुपात में कम्प्यूटर/कम्प्यूटर प्रशिक्षित अध्यापकों की संख्या कम है।

4. अधिकांश केन्द्रों पर अब तक कम्प्यूटर नहीं प्राप्त हुए। (1989-90)

4. विकास के नये चरण :

"नवीन प्रक्रमों का अवलोकन ही मेरी आकांक्षा है।"

—सैबोइजिए

विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा सुधार हेतु उत्तर प्रदेश में चलाये जा रहे कुछ प्रमुख कार्य निम्नवत् हैं :—

(क) माध्यमिक विद्यालयों/इण्टर कालेजों में प्रयोगशालाओं का सुदृढ़ीकरण :

माध्यमिक विद्यालयों/इन्टर कालेजों में प्रयोगशालाओं के सुदृढ़ीकरण हेतु वर्ष 1988-89 में 513 तथा 1989-90 में 824 माध्यमिक विद्यालयों/ इण्टर कालेजों को चयनित कर शासन द्वारा 4,29,40,000 रु० (चार करोड़, उन्तिस लाख, चालीस हजार रुपया) का अनुदान दिया गया।

(ख) पुस्तकालयों का सुदृढ़ीकरण :

उ० प्र० के 1237 माध्यमिक विद्यालयों/इण्टर कालेजों को पुस्तकालयों हेतु प्रति विद्यालय रु० 15000 (पन्द्रह हजार रुपये) विज्ञान/गणित विषयों की पुस्तकों के क्रयार्थ रु० 2,00,55,000 (दो करोड़ पचपन हजार रुपये) अनुदानित किये गये।

(घ) जिला विज्ञान संदर्भ केन्द्र :

शासन द्वारा 1988-89 व 1989-90 में 36 राजकीय इण्टर कालेजों में जिला विज्ञान संदर्भ केन्द्रों की स्थापना हेतु प्रति विद्यालय एक लाख रुपया की दर से 36 लाख रुपये अनुदानित किये गये।

विज्ञान शिक्षा सुधार नामक इसी केन्द्र पुरोनिधानित योजना के अन्तर्गत 3500 अपर प्राइमरी किटों हेतु 56 लाख रुपये तथा जू० हा० स्कूल/हा० स्कूल/इण्टर कालेजों के विज्ञान/गणित अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु 9.24 लाख रुपये अनुदानित किये गये हैं।

(घ) विज्ञान किट निर्माणशाला :

"प्रयोगशाला का अनुपम उपहार वैज्ञानिक विधि का अनुशासन है।"

—रैमजे

प्रारम्भिक स्तर पर विज्ञान शिक्षा का उन्नयन हो, विज्ञान शिक्षण बाल केन्द्रित एवं क्रिया-कलाप आधारित हो और शिक्षार्थी कुछ करके सीखें, इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु विज्ञान संस्थान में जर्मन संघीय गणराज्य की सहायता से लगभग 2.72 करोड़ रुपया की लागत से एक किट निर्माणशाला स्थापित की गयी है जो प्राथमिक विज्ञान किटों का विकास व निर्माण करेगी। इस निर्माणशाला में किट व इसमें प्रयुक्त अधिकांश वैज्ञानिक उपकरणों का उत्पादन प्रारम्भ हो गया है। अभी तक इस विज्ञान किट निर्माणशाला में जी० टी० जेड० के सहयोग से 485 प्राथमिक किटों का निर्माण कार्य हो चुका है। यह निर्माणशाला प्रदेश के सभी प्राथमिक स्तर के विद्यालयों की विज्ञान किटों की आपूर्ति करेगी।

वर्ष 1989-90 की समाप्ति तक प्राथमिक विज्ञान किट क्रयार्थ विभिन्न जनपदों के बेसिक शिक्षा अधिकारियों से 55,28,585 लाख रुपये 06 पैसे प्राप्त हुए हैं।

भारत जर्मन परियोजना के अन्तर्गत एन० सी० ई० आर० टी० के सहयोग से प्राथमिक विज्ञान किट, शिक्षक पुस्तिकाओं व किट मैनुअल का विकास किया गया है। विज्ञान संस्थान में सत्र 1988-89 में एक दस दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें उ० प्र० के 33 दीक्षा विद्यालयों के विज्ञान अध्यापकों को किटों में प्रशिक्षित कर संदर्भ व्यक्ति के रूप में तैयार किया गया। 1 जून, 89 से 10 जून, 89 तक फतेहपुर, इलाहाबाद, लखनऊ, वाराणसी व फैजाबाद जनपदों में एक दस दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित कर 227 प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया और प्रत्येक को विद्यालय के उपयोग हेतु एक-एक किट भी उपलब्ध करायी गयी। किट की सहायता से शिक्षार्थी स्वयं करके सीखेगा, वास्तविकता का पता लगायेगा।

(ब) 'क्लास प्रोजेक्ट' : (क्लास प्रोजेक्ट योजनान्तर्गत कम्प्यूटर शिक्षा) :—

"विज्ञान के आश्चर्य वास्तव में असीमित हैं।"

—[illegible]

भारत सरकार ने 'क्लास प्रोजेक्ट' के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर पर विभिन्न विद्यालयों में शिक्षण को रोचक, प्रभावी व आधुनिक बनाने हेतु कम्प्यूटर शिक्षा कार्यक्रम को प्रारम्भ किया है। राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान को इस प्रशिक्षण हेतु संदर्भ केन्द्र के रूप में चयनित किया गया है। इस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत चयनित विद्यालयों के अध्यापकों को प्रशिक्षित कर विद्यालयों को कम्प्यूटर दिये जा रहे हैं। जुलाई 1990-91 में 17 विद्यालयों को 102 कम्प्यूटर उपलब्ध कराये गये हैं।

(छ) डायट : (डिस्ट्रिक्ट इन्सटीट्यूट ऑफ एजूकेशन एण्ड ट्रेनिंग) :—

प्रदेश में प्रथम किस्त के 20 डायट केन्द्रों हेतु विज्ञान सामग्री एवं उपकरणों की आपूर्ति सम्बन्धी समस्त कार्य विज्ञान संस्थान द्वारा पूर्ण किये गये। संस्थान के प्रोफेसरों ने इन संस्थानों में जाकर सामग्री एवं उपकरणों की गुणवत्ता प्रमाणित की। ये डायट जनपद के सभी प्रकार के प्रशिक्षणों का आयोजन करेंगे और अध्यापकों को समय-समय पर दिशा निर्देशन भी देंगे।

(ज) विज्ञान क्लबों की स्थापना :

विद्यालयों में विभिन्न वैज्ञानिक क्रियाकलापों के सम्यक् संचालन हेतु विज्ञान क्लबों की स्थापना हुई है। वैज्ञानिक लेख, चार्ट व प्रदर्शों के माध्यम से विज्ञान शिक्षा प्रभावी व रोचक हो जाती है। संस्थान समय-समय पर विभिन्न मण्डलों के विज्ञान क्लबों का सर्वेक्षण कर उसमें गति देता रहा है।

(झ) विज्ञान संगोष्ठी :

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कलकत्ता के तत्वावधान में राष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन होता है। इसका उद्देश्य छात्रों में वैज्ञानिक अभिरुचि, रचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति विकसित करना है। इसमें राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक राज्य तथा केन्द्र शासित प्रदेश से केवल एक प्रतिभागी ही प्रतिभाग करता है। जनपद तथा राज्य स्तर पर इन विज्ञान संगोष्ठियों का आयोजन राज्य विज्ञान संस्थान करता है। 1989-90 में इन संगोष्ठियों हेतु राज्य सरकार से 15000 रु० व्यय करने की स्वीकृति प्राप्त हुई।

(ट) विज्ञान प्रदर्शनी :

प्रदेश के छात्रों/छात्राओं की वैज्ञानिक प्रतिभा एवं उनके वैज्ञानिक विचारों को दैनिक परिस्थितियों से सम्बद्ध करने की क्षमता विकसित करने, स्वतंत्र चिन्तन व मौलिकता का सृजन करने की दृष्टि से 1973 से प्रतिवर्ष संस्थान के निर्देशन में जनपद, मण्डल एवं राज्य स्तर पर विज्ञान प्रदर्शनियों का आयोजन किया जा रहा है।

वर्ष 1989-90 में उ० प्र० शासन द्वारा विज्ञान प्रदर्शनी हेतु 3000 रु० प्रति जनपद, रु० 5000 प्रति मण्डल तथा रु० 40,000 राज्य स्तर हेतु स्वीकृति प्राप्त हुई।

वर्ष	स्थान	तिथियाँ
1981	जवाहर बाल भवन, इलाहाबाद	13 से 17 नवम्बर
1982	,, ,,	22 से 26 नवम्बर
1983	,, ,,	7 से 11 अक्टूबर
1984	,, ,,	3 से 7 दिसम्बर
1985	श्री बिशप मण्डल इ० का०, बरेली	17 से 21 नवम्बर
1986	राजकीय इ० का०, रुड़की, सहारनपुर	14 से 18 नवम्बर
1987	राजकीय जुबली इ० का०, गोरखपुर	19 से 23 नवम्बर
1988	क्रीड़ा स्थल, नैनीताल	2 से 6 नवम्बर
1989	राजकीय इ० का०, झाँसी	7 से 11 नवम्बर

5. प्रकृति की ओर

(पर्यावरणीय प्रशिक्षण)

"प्रकृति की सीमायें निर्धारित हैं जिनका उल्लंघन कदापि नहीं होता।"

—जीन रे

"प्रकृति के नियमों का ज्ञान आविष्कारों की अपेक्षा अधिक उपयोगी है।"

—दिस्रेल

जल, वायु, वन, पर्वत एवं खनिज आदि सभी प्रकृति की धरोहर हैं। अतः हमें इस धरोहर के प्रति बहुत ही जागरूक रहना है। यह सभी स्रोत सीमित हैं। इन सभी का उपभोग हमें बड़ी मितव्ययिता से करना चाहिए। इस संस्थान में पर्यावरणीय जागरूकता अभियान—प्रशिक्षण सम्बन्धी कार्यशालाओं का आयोजन समय-समय पर होता रहता है। एन० डी० डी० ए० के तत्वावधान में इस वर्ष भी इस संस्थान में एक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् पर्यावरणीय प्रशिक्षण, लखनऊ, आगरा, झाँसी, इलाहाबाद, फैजाबाद, वाराणसी, मेरठ, देहरादून, गोरखपुर, नैनीताल, बरेली एवं रामपुर केन्द्रों पर सम्पन्न हुए जिनमें संस्थान के प्रोफेसर्स ने विषय-विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया

Sub. National Systems Unit
National Institute of Educa
Planning and Administratio
17-B, Sri Aurobindo Marg, New Del
DOC. No. D-6414
Date 8-10-91

6. अपना अतीत :

(वैदिक गणित)

"अस्पष्टता के धुंधले में ही सत्य का सितारा टिमटिमाता है ।"

—ऐनम

यदि मानव ने कुछ पाया तो उसने कुछ कम खोया भी नहीं । वैदिक गणित के सूत्र आज भी कम्प्यूटर की भाँति गणित के प्रश्नों को हल करने में भी बहुत ही उपयोगी एवं सम्यक हैं । वैदिक गणित को सहगामी पाठ के रूप में सम्मिलित करने की सम्भावना का अध्ययन करने हेतु 1989-90 में इस संस्थान में एक तीन-दिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया गया ।

वैदिक गणित के 'जोड़' के लिए अद्भुत ढंग :

प्रश्न : 386, 241, व 324 का योग निकालिये :—

हल : (अ) बायें से दायें जोड़कर ।	**(ब) दायें से बायें जोड़कर :**
3 8 6	3 8 6
2 4 1	2 4 1
3 2 4	3 2 4
———	———
8 ×	1 1
1 4 ×	1 4 ×
1 1	8 × ×
———	———
9 5 1	9 5 1
———	———

7. कुछ अनूठे अभिलेख :

(लेखन तथा प्रकाशन)

"विज्ञान वह हस्तलिपि है जिसके आदि और अंत के पन्ने फट गये हैं।"

—अज्ञात

राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान अपने शोधों/अध्ययनों, गोष्ठियों, कार्यशालाओं तथा विभिन्न शैक्षिक परियोजनाओं की उपलब्धियों के संदर्भ में तथा प्रदेश की शिक्षा विषयक अपेक्षाओं और विभिन्न समसामयिक आवश्यकताओं के अनुरूप यथासाधन साहित्य का प्रकाशन भी करता रहता है । पिछले दशक में कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन निम्नवत हैं :—

1. प्रारम्भिकस्तरीय विज्ञान एवं गणित की पाठ्यपुस्तकों का लेखन :

अप्रैल 1986 से जून 1986 तक की अवधि में कक्षा 3 एवं कक्षा 6 गणित व विज्ञान पाठ्यपुस्तकों का विकास एवं लेखन कार्य नवीन संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार सम्पन्न हुआ ।

2. हाई स्कूल जीव विज्ञान की राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तक का लेखन ।

3. रसायन विज्ञान किट गाइड का लेखन व प्रकाशन कार्य (1986-87) ।

4. हाई स्कूल विज्ञान-1 प्रयोगशाला हेतु न्यूनतम आवश्यक उपकरणों की सूची एवं प्रयोगशाला हेतु संदर्शिका का निर्माण (1985) ।

5. 'विज्ञानोदय' पत्रिका (1986) ।

6. हाई स्कूल एवं इण्टर विज्ञान प्रयोगशालाओं हेतु न्यूनतम उपकरणों एवं सामग्री की सूची का प्रकाशन (1987) ।

7. केन्द्र पुरोनिधानित योजनान्तर्गत विज्ञान शिक्षा सुधार हेतु 1988 में हाई स्कूल/इण्टर रसायन, भौतिकी, जीव विज्ञान एवं गणित विषयों में प्रशिक्षण सामग्री का प्रकाशन (1988) ।

8. कक्षा 3 व 6 की विज्ञान एवं गणित पाठ्यपुस्तकों का लेखन (1988-89) ।

9. कक्षा-2 गणित तथा कक्षा-4 गणित एवं विज्ञान पाठ्यपुस्तकों का लेखन (1989-90) ।

10. राज्य विज्ञान प्रदर्शनी विवरणिका (प्रत्येक वर्ष) ।

8. संस्थान के निदेशक :

"विज्ञान की गति मन्थर है—हाँ, बिन्दु-दर-बिन्दु अति मन्थर"

— अज्ञात

क्रमांक	नाम	कब से	कब तक
1.	डॉ० सीतावर सरन	5-8-65	31-7-73
2.	श्री आत्म प्रकाश	1-8-73	8-12-77
3.	डॉ० वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा	17-12-77	15-9-83
4.	श्री सच्चिदानन्द झोलाखण्डी	16-9-83	28-2-85
5.	श्री कपिल नारायण भवन (कार्य वाहक)	1-3-85	19-3-85
6.	श्री सच्चिदानन्द झोलाखण्डी	20-3-85	28-2-86
7.	डॉ० सोम प्रकाश मित्तल	24-6-86	29-4-87
8.	श्री महानन्द मिश्र	29-4-87	28-8-87
9.	श्री चन्द्र प्रकाश निगम	29-8-87	31-8-88
10.	श्री रवि चन्द्र कुमार	1-9-88	8-9-89
11.	श्री महानन्द निश्र	9-9-89	28-10-89
12.	श्री पी० के० मेहरोत्रा	29-10-89	अब तक

● ●

'स्मृति पथ से'

मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि रा० शै० प० एक स्मारिका 'परिषद-एक दशक' प्रकाशित करने जा रही है।

मुझे राज्य विज्ञान संस्थान में 1-8-73 से 8-12-77 तक निदेशक के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान द्वारा विज्ञान शिक्षा के प्रभावी शिक्षण तथा गणित एवं विज्ञान से सम्बन्धित अध्यापकों के सेवारत प्रशिक्षण आयोजित किये जाते रहे, जिनमें अध्यापकों ने रुचि ली।

संस्थान द्वारा कक्षा 3 से 8 तक विज्ञान तथा कक्षा 1 से 8 तक गणित के पाठ्यक्रम का प्रणयन, पुस्तकों का लेखन सदैव से विज्ञान एवं गणित शिक्षा के शिक्षण एवं प्रसार में सहायक रहा है। समय-समय पर संस्थान माध्यमिक स्तर की भी पुस्तकों के लेखन तथा पाठ्यक्रम निर्माण में सहायक रहा है। इस अवधि में हाई स्कूल/इण्टर की परीक्षा के नये प्रकार के प्रश्न-पत्रों के निर्माण में कार्य किया गया। नये प्रकार के प्रश्न-पत्रों के 'बैंक' बनाये गये। इस हेतु रा० शै० अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद की सहायता से अनेक कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं तथा गणित एवं विज्ञान अध्यापकों का राज्य स्तर पर एक वृहद् प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इसी अवधि में 1973 में पहली राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की गयी।

संस्थान में कार्य करने की सुखद स्मृतियाँ आज भी मेरे मानस पटल पर अंकित हैं तथा मेरी शुभ-कामनाएँ हैं कि इस स्मारिका का प्रकाशन सभी दृष्टिकोण से विज्ञान एवं गणित शिक्षा के हित में होगा।

आत्म प्रकाश

अध्यक्ष

उ० प्र० माध्यमिक शिक्षा सेवा आयोग

इलाहाबाद

मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग (मनोविज्ञानशाला)

इलाहाबाद

1. [illegible]-संकल्प :

देश की आजादी के संघर्ष के साथ ही उसकी प्रगति और नव निर्माण का संकल्प [illegible] जुड़ा था। भारतीय मनीषियों और जन-नायकों की दृढ़ अवधारणा थी कि प्रबुद्ध और संवेदनशील जन-मानस के विकास के संकल्प को साकार करना राष्ट्र का प्राथमिक अनुष्ठान होगा। भौतिक संसाधनों के साथ ही मानव संसाधन, जो बौद्धिक ऊर्जा के रूप में देश के प्रतिभाशाली बच्चों में सही दिशा पाने के लिए संचित है, राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में उसका संवर्द्धन और विकास किया जाना आवश्यक है। इसलिए सबसे पहले उनका ध्यान शिक्षा की ओर गया जिसे परिवर्तन का सबसे अच्छा और समर्थ माध्यम समझा जाता रहा है। उनकी चिन्ता थी, 'अच्छी शिक्षा' जो देश के पुनर्निर्माण में सहायक हो सके, सभी को सुलभ और [illegible] हो। इस गहरी सोच और संकल्प का ही प्रतिफल रहा है—माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में आचार्य नरेन्द्र देव शिक्षा समिति का गठन। समिति ने प्रभावी और सार्थक शिक्षा आयोजन के सन्दर्भ में विभिन्न आयामों पर विस्तारपूर्वक विचार किया। समिति का यह भी मत था कि शिक्षा प्रक्रिया को मनोवैज्ञानिक आधार दिया जाना चाहिए। क्योंकि अपने उपकरणों और तकनीकी साधनों के साथ आधुनिक मनोविज्ञान प्रतिभा को खोजने उसे पोषित और विकसित करने में उचित सहायता प्रदान कर सकता है।

आचार्य नरेन्द्र समिति (1935) की संस्तुतियों के आलोक में विद्यालयीय आयु वर्ग के बच्चों को मनोवैज्ञानिक सेवाओं को सुलभ कराने हेतु जुलाई 1947 में मनोविज्ञानशाला, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद की स्थापना की गयी। उक्त प्रस्थापन से इसे भारत की प्रथम मनोविज्ञानशाला होने का गौरव तो प्राप्त हुआ ही साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में नवीन उद्भावनाओं के एक अभिनव युग का संचरण भी हुआ। माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए शैक्षिक, व्यावसायिक और वैयक्तिक निर्देशन तथा उन्हें अपने विद्यालय, व्यवसाय और सामाजिक परिवेश में संतोषजनक समायोजन में सहयोग देना मनोवैज्ञानिक सेवाओं का प्रमुख लक्ष्य निरूपित किया गया। फलस्वरूप, निर्देशन-परामर्श वस्तुतः शिक्षा की एक आवश्यक धारा के रूप में उभरा। जब विद्यालयों में प्रवेश करने तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से उसमें शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त करने के अवसर सबको समान रूप से सुलभ हुए, तब व्यक्ति और समाज के व्यापक हित में यही उपयुक्त समझा गया कि उपयुक्त व्यक्ति ही कोई व्यवसाय विशेष चुने। इसके लिए उसकी क्षमता, योग्यता, रुचि, अभिरुचि का मूल्यांकन करके व्यवसाय चयन में उसकी सहायता शिक्षा की आवश्यकता

बन गयी। इसके साथ ही शैक्षिक, व्यावसायिक और वैयक्तिक कुसमायोजन से उत्पन्न असन्तुलन के निदान और उपचार में भी मनोवैज्ञानिक निर्देशन-परामर्श की कल्याणकारी भूमिका के कारण शैक्षिक आयोजन में इसका समावेश आवश्यक माना गया।

हमने अपने संविधान में शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य प्राप्ति के उद्देश्य से 6 से 14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का लक्ष्य रखा। परन्तु आज भी अभीष्ट से अभी हम बहुत दूर हैं। अन्य कारणों के अतिरिक्त सम्भवतः बालकों और अभिभावकों में प्रेरणा का अभाव इसके लिए ज्यादा ही जिम्मेदार माना गया। यह स्थिति भी निर्देशन-परामर्श सेवा की अनिवार्यता का पक्ष प्रस्तुत करती है।

2. सार्थक विस्तार :

निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं की उपादेयता और प्रभावकारिता को दृष्टिगत रखते हुये द्वितीय आचार्य नरेन्द्र देव समिति की संस्तुतियों के सातत्य में वर्ष 1952 में मनोवैज्ञानिक सेवाओं के विस्तार की योजना को कार्य रूप दिया गया। प्रथम चरण में मेरठ, बरेली, कानपुर, लखनऊ तथा वाराणसी के पाँच जनपद मुख्यालयों में जिला मनोविज्ञान केन्द्रों की स्थापना की गयी। जिला मनोविज्ञान केन्द्रों द्वारा अपने मण्डल के समस्त विद्यालयों को अपनी सामर्थ्य सीमा में मनोवैज्ञानिक सेवाएँ उपलब्ध कराना, उसका लक्ष्य निर्धारित किया गया। मनोविज्ञानशाला के ही लघुरूप में इन जिला मनोविज्ञान केन्द्रों का विकास किया गया। प्रतिवर्ष मनोविज्ञानशाला और इससे सम्बद्ध 5 जिला मनोविज्ञान केन्द्र 500 बच्चों की वैयक्तिक निर्देशन और 6000 बच्चों को सामूहिक निर्देशन का लक्ष्य पूरा करते थे। द्वितीय चरण में गोरखपुर तथा आगरा में जिला मनोविज्ञान केन्द्रों की स्थापना की गयी। इसके साथ ही प्रदेश के 25 बहुउद्देशीय विद्यालयों में पूर्णकालिक विद्यालय मनोवैज्ञानिक उपलब्ध कराने की योजना को साकार किया गया। इस प्रकार द्वितीय पंचवर्षीय योजना में मनोवैज्ञानिक सेवाओं के विस्तार का तीसरा चरण पूरा कर लिया गया। उस समय केन्द्रीय स्तर पर मनोविज्ञानशाला, मण्डलीय स्तर पर जिला मनोविज्ञान केन्द्र तथा विद्यालय स्तर पर कतिपय स्कूल मनोवैज्ञानिक निर्देशन-परामर्श की सेवा सुलभ कराते रहे।

3. प्रवाह-स्पन्दन :

(क) **निर्देशन कार्य**—मनोवैज्ञानिक सेवाओं के विस्तार का कार्य पूरा होने के साथ ही प्रदेश, मण्डल तथा विद्यालय स्तर पर निर्देशन-परामर्श कार्य प्रारम्भ कर दिया गया। मनोविज्ञानशाला इलाहाबाद तथा बाहर से सन्दर्भित बालक-बालिकाओं को व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों आधार पर शैक्षिक, व्यावसायिक और वैयक्तिक निर्देशन देने का कार्य करती थी तथा मंडलीय स्तर पर दिये जाने वाले निर्देशन कार्य का निरीक्षण और नियंत्रण

भी करती थी। तीनों ही स्तरों पर शैक्षिक निर्देशन के अन्तर्गत कक्षा-9 के स्तर पर छात्र-छात्राओं की पाठ्य विषयों के चुनाव में सहायता प्रदान करना, अग्रिमशिक्षा के लिए उनकी प्रगति की संभावनाओं का आकलन करना, छात्रों के शैक्षिक रूप से पिछड़ने के कारणों का पता लगाकर उपचारी शिक्षण हेतु संदर्भ देना तथा प्रतिभाशाली बच्चों के लिए समृद्ध कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तावित करना प्रमुख कार्य रहता था। व्यावसायिक-निर्देशन में छात्रों की व्यावसायिक क्षमता का मूल्यांकन कर व्यावसायिक लक्ष्य के निर्धारण में उनकी सहायता की जाती रही। उन्हें व्यवसाय जगत के अवबोध के साथ ही उसमें प्रवेश हेतु आवश्यक उपक्रम से भी अवगत कराया जाता था। वैयक्तिक निर्देशन कार्यक्रम में छात्रों की सांवेगिक और समायोजन सम्बन्धी कठिनाइयों का पता लगाकर उनके निराकरण हेतु उपयुक्त निर्देशन-परामर्श की प्रक्रिया अपनायी जाती रही।

(क) बाल कक्ष और बाल निर्देशन :

बालक के मनोशारीरिक विकास की दृष्टि से आरम्भ के 10 वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। चूंकि भाषा का समुचित विकास नहीं हुआ रहता है इसीलिए उसकी अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम खेल होता है। विकासक्रम की अपेक्षाओं में किसी प्रकार की चूक, अपवचन, या अतिशयता जीवन की समूची समायोजन प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। अतः बच्चों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की समझ और उनकी सांवेगिक कठिनाइयों का निवारण बहुत आवश्यक होता है। मनोविज्ञानशाला और अधीनस्थ मंडलीय मनोविज्ञान केन्द्रों में एक विशाल बाल कक्ष की व्यवस्था की गयी। बाल कक्ष में संवेदना, गति, लय, आक्रामकता, कलात्मक, सृजनात्मक, बौद्धिक और बाह्य खेलों से सम्बन्धित खेल उपकरणों की व्यवस्था हुई। खेल के माध्यम से एक ओर जहाँ बालक की कार्यकारी बौद्धिक क्षमता का मूल्यांकन होता है वहीं दूसरी ओर खेल बच्चे की अभिव्यक्ति का अच्छा साधन होने के कारण उनके विवेचन के माध्यम से उसकी सांवेगिक कठिनाइयों पर नियंत्रण पाने में उसका सहायक भी होता है। विभिन्न प्रकार के खेल उपकरणों की चुनने उनके साथ खेलने आदि का सूक्ष्म निरीक्षण कर बालक के बौद्धिक स्तर, गति, समन्वय, प्रत्यक्षीकरण, प्रत्यय विकास, तर्कना शक्ति, कल्पना का स्तर, संवेगात्मक विकास आदि की जानकारी प्राप्त होती है। खेल कक्ष का उपचारी महत्व होने के कारण मनोवैज्ञानिक सेवा आयोजन में इसका विशिष्ट महत्व है।

(ख) परीक्षण निर्माण और अनुशीलन :

निर्देशन-परामर्श सेवा का आधार तकनीकी और वैज्ञानिक होने के कारण आरम्भ से ही उपयुक्त परीक्षणों की आवश्यकता रही है। अतः निर्देशन-परामर्श सेवा के आरम्भिक दशक में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के निर्माण और विदेशी परीक्षणों के अनुशीलन पर विशेष बल दिया गया। बी० पी० टी० नामक परीक्षण-शृंखला के अन्तर्गत बी० पी० टी०—6,

बी० पी० टी०—7, बी० पी० टी०—13, बी० पी० टी०—14, बी० पी० टी०—15 आदि संज्ञानात्मक परीक्षणों का निर्माण हुआ। उनकी विश्वसनीयता और वैधता स्थापित की गयी। इसके साथ ही स्टैनफर्ड-बिने के बुद्धि परीक्षण का हिन्दी अनुशीलन तथा पिजन-अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण, प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज, 70/23, आकार योग्यता परीक्षणों का भारतीय परिप्रेक्ष्य में मानकों का निर्माण और अन्य अनेक परीक्षण प्रपत्र विकसित किये गये। मूल आधार को बिना प्रभावित किये टी० ए० टी० के चित्र परिस्थितियों का भारतीय परिवेशान्तरण किया गया और टी० ए० टी० के चित्र मूल्यांकन की एक विशिष्ट विधा विकसित की गयी। व्यक्तित्व प्रश्नावली और अनेक उपलब्धि और निदानात्मक परीक्षण भी बनाये गये। इस प्रकार निर्देशन-परामर्श में साधन के रूप में प्रयुक्त होने वाले मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की एक अति समृद्ध प्रयोगशाला का विकास मनोविज्ञानशाला में किया गया। इनका प्रयोग तीन स्तरों पर आवश्यकतानुसार किया जाता रहा है।

(ग) प्रशिक्षण :

निर्देशन-परामर्श सेवा में विद्यालय मनोवैज्ञानिक/काउंसलर का प्रशिक्षित होना आवश्यक होता है। इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु वर्ष 1954-55 से एक पूर्णकालिक एक सत्रीय डिप्लोमा-इन-गाइडेन्स साइकॉलजी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। चार सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्रों तथा वैयक्तिक सामूहि-कपरीक्षणों की प्रशासन विधा का गहराई से ज्ञान इस प्रशिक्षण में दिया जाता रहा है। प्रारम्भ में प्रवेश हेतु प्रशिक्षणार्थियों की शक्षिक अर्हता मनोविज्ञान या किसी स्कूल विषय में परास्नातक उपाधि अथवा शिक्षण-प्रशिक्षण सहित स्नातक उपाधि निर्धारित की गयी। प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक विद्यालयों में निर्देशन-परामर्श सेवा के अतिरिक्त उन संगठनों में भी सेवा लाभ देने लगे जहाँ पर प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिकों की भूमिका अपेक्षित होती थी।

(घ) परिवीक्षण :

विद्यालयीय निर्देशन-परामर्श सेवा की गुणवत्ता तथा प्रभावकारिता सुनिश्चित करने के लिए मण्डल स्तर के जिला मनोविज्ञान केन्द्रों तथा विद्यालय स्तर के स्कूल-मनोवैज्ञानिकों के कार्यों की वरिष्ठ और अनुभवी अधिकारियों द्वारा समय-समय पर निरीक्षण की भी व्यवस्था की गयी। इस प्रकार सें सुगठित और लक्ष्य निर्देशित निर्देशन-परामर्श सेवा वर्ष 1965 तक प्रदेश में एक अनवरोधित गति से चलती रही।

4. आयाम-विराम :

प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था में अपनी जड़ें गहराई तक जमाती हुई तथा उल्लेखनीय योगदान के नाते समूचे देश में चर्चित ये मनोवैज्ञानिक निर्देशन-परामर्श सेवायें अपने दो दशक भी पूरे न कर सकी थीं कि वर्ष 1965 के भारत-चीन संघर्ष के परिणाम स्वरूप केन्द्र सरकार ने राज्यों को आर्थिक कटौती का निर्देशन दिया जिससे प्रभावित होकर मण्डल

स्तर और विद्यालय स्तर की मनोवैज्ञानिक सेवाओं के समस्त पद फरवरी 1966 में समाप्त कर दिये गये। ऐसी विषम स्थिति में एकाकी मनोविज्ञानशाला अपनी शाखा-प्रशाखा से विच्छिन्न एक वट वृक्ष की तरह झंझावातों को झेलता हुआ इतने विशाल प्रदेश के लिए संजीवनी शक्ति के अजस्र-स्रोत के रूप में खड़ा रहा। वर्ष 1975 तक यही स्थिति बनी रही। अपनी तमाम सीमाओं में मनोविज्ञानशाला अपने स्तर की लगभग समस्त गतिविधियों के साथ शैक्षिक आयोजन की सफल बनाने के लिए अपने योगदान में प्रयासरत रहा।

5. पुनर्जीवन :

मण्डल और विद्यालय स्तर की निर्देशन-परामर्श सेवा की समाप्ति का कारण आर्थिक था। इसकी अकादमिक उपयोगिता का दर्द शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े विचारकों और प्रशासकों के मन में टीस देता रहा। यही कारण रहा कि वर्ष 1972 में पुन: मनोवैज्ञानिक सेवाओं को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता का गहराई से अनुभव किया गया और उसे शासन द्वारा कार्यरूप देने का निर्णय भी लिया गया। आरम्भ कैरियर मास्टर योजना से किया गया। विद्यालय के अनुभवी अध्यापकों को 3-3 माह का कैरियर मास्टर प्रशिक्षण और पचास रुपये प्रतिमाह मानदेय देकर विद्यालयीय स्तर की सेवा को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया गया। प्रतिवर्ष 30-30 के दो प्रशिक्षण बैच में कैरियर मास्टर्स प्रशिक्षण का आयोजन आरम्भ किया गया। प्रशिक्षित कैरियर मास्टर्स अपने अध्यापकीय दायित्व के साथ ही कुछ शैक्षिक, व्यावसायिक निर्देशन का कार्य सम्पादित करते थे। परन्तु निर्देशन-परासर्श सेवा में विद्यालय स्तर पर वह उत्कृष्टता नहीं लायी जा सकी जो पूर्णकालिक विद्यालय मनोवैज्ञानिक द्वारा सम्भव हो सकती थी।

वर्ष 1975 में मण्डल स्तर की मनोवैज्ञानिक सेवाओं को भी पुनर्जीवित करने का प्रयास प्रारम्भ किया गया। सबसे पहले कानपुर महानगरी के मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र की गति विधियों को प्रारम्भ किया गया। कालान्तर में लखनऊ, वाराणसी, मेरठ, आगरा, बरेली, गोरखपुर, झाँसी, फैजाबाद, नैनीताल तथा पौड़ी गढ़वाल में मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्रों की स्थापना की गयी। वर्ष 1990 में मुरादाबाद मुख्यालय पर भी एक मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र की स्थापना हो चुकी है। वर्ष 1965 तक जिन्हें जिला मनोविज्ञान केन्द्र कहा जाता रहा है उन्हें अब मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र की संज्ञा दी गयी। जिला मनोवैज्ञानिक के स्थान पर मण्डलीय मनोवैज्ञानिक पद नाम रखा गया तथा एस० ई० एस० (राजपत्रित) के स्थान पर उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा कनिष्ठ वेतनक्रम में मण्डलीय मनोवैज्ञानिक का पद सृजित हुआ।

6. संवर्द्धन और विकास :

संप्रति शिक्षा के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन मुखरित हुआ है। इस परिवर्तन की गति का साथ देने के लिए प्रदेश के निर्देशन-परामर्श सेवाओं में भी कई नवीन आयाम जुड़े।

मनोविज्ञानशाला, अब राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, जिसकी स्थापना वर्ष 1981 में हुई, उसकी एक इकाई (मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग) के रूप में कार्य कर रही है। मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग, मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्रों तथा स्कूल काउंसलर के कार्यों की योजना बनाता है तथा उनका अपने निर्देशन एवं शोध कार्यों से समन्वय कराता है। यह विभाग शिक्षा निदेशालय के माध्यमिक, बेसिक तथा प्रौढ़ अनुभागों, माध्यमिक शिक्षा परिषद तथा बाह्य विभाग जैसे गृह, रेलवे, सैनिक शिक्षा और खेलकूद निदेशालय को मनोवैज्ञानिक क्रियाकलापों में आवश्यकतानुसार तकनीकी परामर्श भी प्रदान करता है।

निर्देशन-परामर्श सेवा के वही तीन स्तर, पूर्व की भाँति निश्चित किये गये हैं। सामूहिक निर्देशन में स्तर परिवर्तन के रूप में पहले जहाँ कक्षा आठ स्तर पर निर्देशन दिया जाता था वहाँ अब कक्षा 10 स्तर पर यह संपन्न होता है क्योंकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के क्रियान्वयन से +2 स्तर पर पठन-पाठन की दो धाराएँ—अकादमिक और व्यावसायिक निर्धारित हुई हैं। कक्षा 10 तक की विद्यालयीय शिक्षा लगभग समान सी है। प्रक्रिया में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। केवल कुछ नये परीक्षणों की नयी परीक्षण बैटरी तैयार की गयी है।

वर्ष 1965 में समाप्त किये गये एक वर्षीय डिप्लोमा को वर्ष 1975 से पुनः प्रारंभ किया गया। अब प्रवेशार्थियों की न्यूनतम शैक्षिक अर्हता एम० ए० (मनोविज्ञान) अथवा एम० एड० द्वितीय श्रेणी निर्धारित की गयी है। सेवाकालीन प्रशिक्षण एवं छात्रवृत्ति प्रशिक्षण के दो नये आयाम भी जुड़े हैं। माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत और शिक्षाशास्त्र के तीस प्रवक्ताओं के तीन सप्ताह के पुनर्बोधन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में सम्मिलित होने वाले छात्र-छात्राओं को मुख्य परीक्षा पूर्व और साक्षात्कार पूर्व प्रशिक्षण दिया जाता है। उसी प्रकार भारत सरकार आवासीय परीक्षा के प्रथम स्तर पर सफल छात्र/छात्राओं को भी प्रशिक्षण दिया जाता है। लोक सेवा आयोग द्वारा विभिन्न प्रतियोगी-परीक्षाओं द्वारा चयनित शिक्षाधिकारियों को भी प्रशिक्षण प्रदान किया जाता हैं।

चयन कार्य में अधिकाधिक संस्थाएँ और संगठन इस विभाग की सेवा से लाभान्वित होना चाहते हैं। विभिन्न विद्यालयों में कक्षा 6 तथा 9 के स्तर पर प्रवेश हेतु छात्रों का चयन, सैनिक स्कूल, लखनऊ तथा स्पोर्ट्स कालेज लखनऊ में प्रवेश हेतु चयन, विद्यालय स्तर पर सहयोग के रूप में सम्पादित होते हैं। इसके साथ ही सेवाओं में प्रवेश जैसे पुलिस मोटर ड्राइवर्स चयन और पुलिस सब इन्सपेक्टर चयन में, सिविल पुलिस तथा पी० ए० सी० कान्स्टेबिल की भर्त्ती में मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञों की सहायता दी जाती है। राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा तथा भारत सरकार की आवासीय परीक्षा यह दोनों केन्द्र सरकार की छात्र-वृत्ति परीक्षा योजनाएँ हैं। इनके आयोजन में इस संस्था की अहम भूमिका होती है।

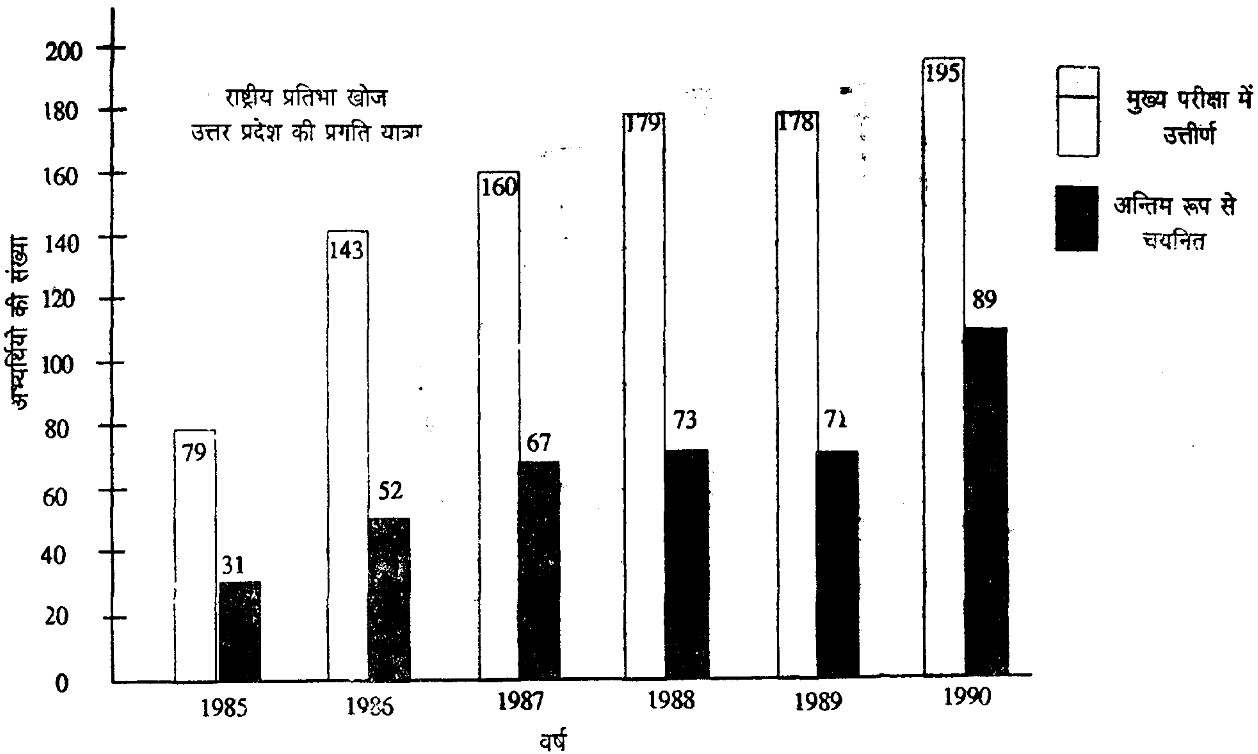
राष्ट्रीय प्रतिभा खोज
उत्तर प्रदेश की प्रगति यात्रा
अभ्यर्थियों की संख्या
0
20
40
60
80
100
120
140
160
180
200
79
31
143
52
160
67
179
73
178
71
195
89
1985
1986
1987
1988
1989
1990
वर्ष
मुख्य परीक्षा में उत्तीर्ण
अन्तिम रूप से चयनित

मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग (मनोविज्ञानशाला) एक शोध संस्थान के रूप में भी कार्य करता हैं। नवीन मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के निर्माण, मानकीकरण और विदेशी परीक्षणों के अनुकूलन के साथ ही सामाजिक, मनोशैक्षिक विषयों पर शोध और परियोजनाओं पर कार्य किया जाता है। स्टेनफर्ड बिने बुद्धि परीक्षण का मानकीकरण, रोशाख व्यक्तित्व के प्रति उत्तर प्रदेश के वयस्कों की अनुक्रियाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, खेल निरीक्षण द्वारा बालकों के व्यक्तित्व का अध्ययन जैसी शोध-परियोजनाएँ सम्पादित की गयीं जिनके परिणाम बड़े उत्साहवर्द्धक रहे हैं।

शिक्षा और मनोविज्ञान से सम्बन्धित शोधों-परियोजनाओं तथा खोजपूर्ण लेखों का प्रकाशन कर उन्हें विद्यालयों और शिक्षाधिकारियों तथा इस क्षेत्र में रुचि रखने वाले व्यक्तियों को उपलब्ध कराया जाता हैं। 'आपका बालक' और 'व्यावसायिक सूचना' इस विभाग के नियमित त्रैमासिक प्रकाशन हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा-निर्देशिका तथा आवासीय शिक्षा निर्देशिका भी प्रकाशित की गयी हैं।

7. कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियाँ :

मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग की बहुमुखी उपलब्धियाँ दूरगामी निवेश के रूप में हैं। फिर भी आंकड़ों की भाषा से भी कुछ कथनीय हैं। वर्ष 1984-85 से राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के संचालन का दायित्व इस विभाग को सौंपा गया। प्रचार-प्रसार उपागमों से जहाँ एक ओर पंजीकरण में संख्यात्मक वृद्धि हुई है वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय स्तर पर इस क्षेत्र की उपलब्धियाँ भी प्रशंसनीय रहीं हैं। विवरण निम्नवत् है :—

वर्ष	पंजीकृत सं० सम्मिलित प्रथम चयन	परीक्षा में में चयनित	प्रथम चयन	मुख्य परीक्षा में उत्तीर्ण	साक्षात्कार के उपरान्त अन्तिम रूप से चयनित
1985	5214	4317	403	79	31
1986	6782	5568	500	143	52
1987	10384	7220	500	162	67
1988	5816	4397	500	179	73
1989	8481	5697	500	178	71
1990	8046	5657	500	195	82

इस प्रकार द्रष्टव्य है कि प्रगति यात्रा वर्ष 1985 से अद्यावधि ऊर्ध्वोन्मुखी रही है । वर्ष 1988-1989 तथा वर्ष 1990 में राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रदेश को दूसरे स्थान पर रहने का गौरव मिला है । वर्तमान वर्ष 1990 में साक्षात्कार के लिये अर्ह 195 तथा अंतिम रूप से चयनित 95 की छात्र संख्या अब तक की इस स्तर की सबसे बड़ी संख्या है ।

इसी प्रकार भारत सरकार की आवासीय छात्रवृत्ति योजना में प्रदेश का स्थान प्रथम रहा है और हर आगामी वर्ष में प्रगति होती रही है :—

वर्ष	पंजीकृत संख्या	प्रथम स्तर पर उत्तीर्ण	अन्तिम रूप से चयनित
1984	1363	238	120
1985	1565	234	124
1986	1944	236	135
1987	1883	238	130
1988	3045	238	130
1989	2971	244	149
1990	2855	242	200

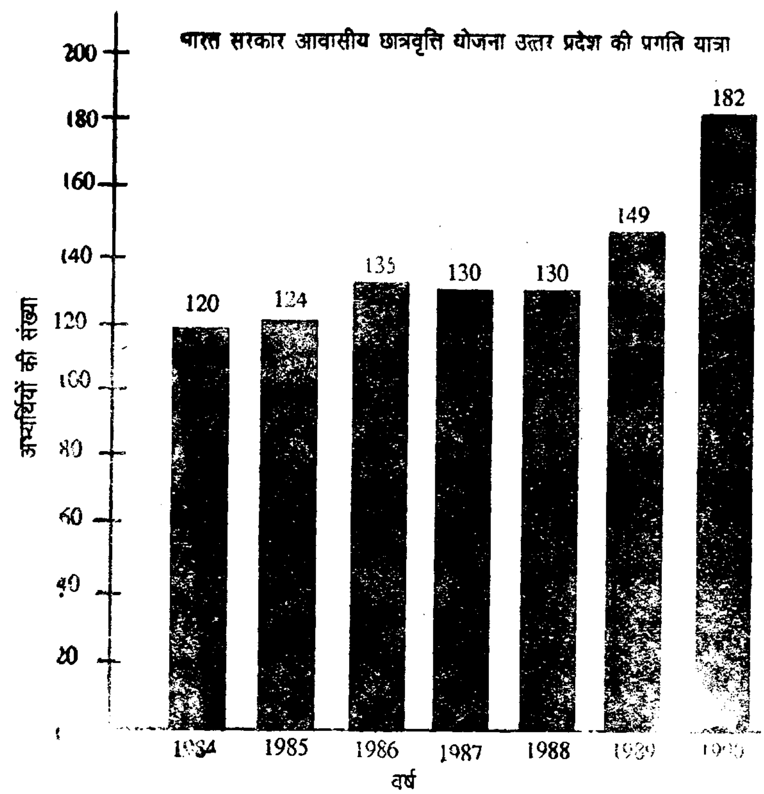

इसके अतिरिक्त परामर्श और समायोजन, असंतुलन तथा अन्य मनोविकारों के मानसोपचार में भी विभाग को पर्याप्त गौरव मिला है। परीक्षण निर्माण के क्षेत्र में पी० टी० बुद्धि परीक्षणों की श्रृंखला, विदेशी परीक्षणों का अनुकूल अनुवाद और अनुशीलन इसकी अविस्मणीय उपलब्धियाँ रही हैं।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश की एक इकाई के रूप में इस विभाग द्वारा वर्ष 1981 से अब तक किये गये कतिपय प्रमुख शोध प्रकरणों की सूची निम्नवत् है—

शोध/अध्ययन/सर्वेक्षण/परियोजनाएँ :

1. एन इनवेस्टीगेशन इन टू दी प्रिडिक्टिव कैपेबिलिटी ऑफ दी इन्टीग्रेटेड स्कालरशिप एक्जामिनेशन फार सेलेक्शन आफ मेरीटोरियस स्टूडेंट्स फॉर स्पेशल एजूकेशन इन उत्तर प्रदेश।
2. छात्र संप्रत्यक्ष परीक्षण (चिल्ड्रेन अपरसेप्शन टेस्ट) द्वारा उत्तर प्रदेश के बालक/बालिकाओं की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं का अध्ययन।
3. "वैज्ञानिक अभिरुचि परीक्षण" की रचना।
4. खेल निरीक्षण द्वारा बच्चों के व्यक्तित्व के स्वरूप का अध्ययन।
5. कक्षा दस के विद्यार्थियों पर सृजनात्मक एवं बौद्धिक स्तर सम्बन्धी अध्ययन।
6. रोशाख व्यक्तित्व परीक्षण के प्रति उत्तर प्रदेश के सामान्य बालक/बालिकाओं की अनुक्रियाओं का अध्ययन।
7. अध्यापन अभिरुचि परीक्षण का निर्माण—पाँच सेट।
8. प्रौढ़ बुद्धि परीक्षण (शाब्दिक) की रचना।
9. मन्द बुद्धि बालक—समस्याएँ और समायोजन—एक अध्ययन।
10. सपुस्तक परीक्षा प्रणाली—एक अभिमूल्यात्मक अध्ययन।
11. किशोरों द्वारा अवकाश के समय का सदुपयोग—एक अध्ययन।
12. छात्र/छात्राओं और उनके अभिभावकों की व्यावसायिक पसन्द।
13. परीक्षण मानांक—नवीनीकरण : पिजन, 70/23, आकार योग्यता, प्रोग्रेसिव मैट्रिसीज।
14. कक्षा दस स्तर पर समूह निर्देशन के निमित्त परीक्षण बैटरी का निर्माण।
15. कक्षा—6 तथा कक्षा—9 में प्रवेश हेतु चयन परीक्षण का निर्माण।
16. खेल अभिरुचि परीक्षण का मानकीकरण।

17. अध्यापन अभिरुचि परीक्षण का निर्माण—5 सेट।

18. प्रारम्भिक/माध्यमिक और माध्यमिक स्तरीय छात्रों की पठन रुचि का सर्वेक्षण।

19. किशोरों द्वारा अवकाश के समय का उपयोग—एक अध्ययन।

20. किशोरावस्था और सृजनात्मकता—एक अध्ययन।

21. वर्ल्ड टेस्ट के आधार पर बालकों की समस्याओं का अध्ययन।

22. समेकित विद्यालयों में अध्ययन-सुविधा प्रदत्त विकलांग छात्रों का अध्ययन।

23. बाल-अपराध—कारण और उपचार।

24. एच० एस० पी० क्यू० और शाब्दिक सृजनात्मक चिन्तन के मध्य सह-सम्बन्ध।

25. थारू जन जाति के छात्रों के बौद्धिक स्तर, व्यक्तित्व और अभिवृत्ति का अध्ययन।

26. उत्तर प्रदेश में कक्षा—9 में अध्ययनरत आवासीय छात्रों के व्यक्तित्व का अध्ययन।

27. निष्पादन परीक्षण माला का निर्माण।

28. कार्यानुभव और व्यावसायिक शिक्षा के प्रति छात्रों, अभिभावकों और प्रधानाचार्यों की अभिवृत्ति का अध्ययन।

29. विभिन्न श्रेणी के शैक्षिक अधिकारियों के ऊपर पड़ने वाले बलाघात का अध्ययन।

30. एकीकृत छात्रवृत्ति प्राप्त छात्रों के बौद्धिक और वैयक्तिक गुणधर्मों का अध्ययन।

31. शाब्दिक प्रक्षेपी परीक्षण का मानकीकरण।

32. अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण का निर्माण (अनुशीलन लेखन)

33. निष्पादन परीक्षण का निर्माण (मानकीकरण अनुशीलन)

34. सामूहिक निर्देशन के अन्तर्गत अकादमिक और व्यावसायिक शिक्षा धारा हेतु परीक्षण माला का निर्माण और मानकीकरण।

35. शाब्दिक बुद्धि परीक्षण का मानकीकरण।

इस दशक में कतिपय प्रमुख प्रकाशन इस प्रकार हैं :—

महत्वपूर्ण प्रकाशन :

1. ऐन इन्वेस्टीगेशन इन टू दि प्रिडिक्टिव कैपेबिलिटी आफ दी इन्टीग्रेटेड स्कालरशिप एक्जामिनेशन फार सेलेक्शन आफ मेरीटोरियस स्टूडेण्ट्स फार स्पेशल एजूकेशन इन उत्तर प्रदेश।

2. ए कैटलाग ऑफ इन्डियन टेस्ट्स, कम्पाइल्ड बाई ब्यूरो आफ साइकॉलजी, यू० पी०, इलाहाबाद ।
3. उत्तर प्रदेश में मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवा (छात्रों और अध्यापकों के लिए)
4. विद्यार्थियों के व्यावसायिक मार्गदर्शन हेतु अभिभावकों और शिक्षकों के लिए सुझाव।
5. खेल निरीक्षण द्वारा बच्चों के व्यक्तित्व के स्वरूप का अध्ययन ।
6. चित्र कथानक परीक्षण--निर्देशिका ।
7. बाल संप्रत्यक्ष—परीक्षण (चिल्ड्रेन एपरसेप्शन टेस्ट) द्वारा उत्तर प्रदेश के बालक और बालिकाओं की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन ।
8. "समस्याएँ आपकी, सुझाव हमारे" ।
9. प्रदेश की आवासीय योजना।
10. आवासीय विद्यालयीय भारत सरकार छात्रवृत्ति योग्यता परीक्षा—निर्देशिका ।
11. वैज्ञानिक अभिरुचि परीक्षण (कक्षा—9 में) उच्च विज्ञान तथा उच्च गणित में प्रवेश हेतु।
12. खेल अभिरुचि परीक्षण ।
13. शैक्षिक अभिरुचि परीक्षण (अंग्रेजी माध्यम) कक्षा 6 में प्रवेश चयन हेतु ।
14. प्रौढ़ बुद्धि परीक्षण ।
15. राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा की निर्देशिका ।
16. शोध सारांशिका (88–89)
17. रोशाख् परीक्षण के प्रति किशोरों कीं अनुक्रियायें : एक अध्ययन ।
18. आपका बालक : त्रैमासिक बुलेटिन ।
19. व्यावसायिक सूचना : त्रैमासिक बुलेटिन ।
20. उत्कर्ष : राष्ट्रीय प्रतिभाखोज परीक्षा–1989 में अन्तिम रूप से चयनित छात्रों की अभिव्यक्ति ।
21. उलझन : कतिपय समस्यात्मक इतिवृत्त

8. **प्रतीक हस्ताक्षर :**

अपने स्थापना वर्ष 1947 से ही मनोविज्ञानशाला का सौभाग्य रहा है कि मनोविज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र के मूर्धन्य विचारक और ख्यातिलब्ध मनोवैज्ञानिकों ने इस विभाग को अपनी कर्म साधना का पुनीत क्षेत्र बनाया। इस संस्था के प्रथम निदेशक स्व० कर्नल सोहन लाल थे। लम्बी सेवा के उपरान्त उन्हें भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय में

चीफ सायकॉलजिस्ट के पद पर नियुक्त किया गया। कर्नल सोहन लाल द्वारा निर्मित, "इलाहाबाद टेस्ट आफ इन्टलीजेन्स" सामूहिक रूप सें प्रशासित किये जाने वाला प्रथम भारतीय बुद्धि परीक्षण का लम्बे समय तक सामूहिक निर्देशन में विश्वसनीय उपकरण के रूप में प्रयोग होता रहा है। रक्षा मंत्रालय के अधीन सर्विस सेलेक्शन बोर्ड सें मनोवैज्ञानिक सदस्यों की नियुक्ति की वकालत की। फलतः मनोवैज्ञानिक सर्विस सेलेक्शन बोर्ड का एक उपयोगी सदस्य बन गया है।

संस्था के दूसरे निदेशक डॉ० चन्द्र मोहन भाटिया की मनोविज्ञान के प्रति अनुरक्ति की सीमा इस तथ्य से निर्धारित की जा सकती है कि मनोविज्ञानशाला के जन्म के पूर्व राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान में उन्होंने एक मनोवैज्ञानिक सेवा केन्द्र को स्थापना कर रखी थी। निर्देशन को मनोवैज्ञानिक सेवा का अंग बनाने का श्रेय उन्हीं को है। भाटिया बैटरी परफारमेन्स टेस्ट प्रथम निष्पादन परीक्षण (भारतीय परिस्थितियों में) इनकी अकादमिक प्रतिबद्धता का परिणाम है। डॉ० भाटिया ने अपनी शोध डिग्री एडिनबरा विश्वविद्यालय से प्राप्त की। कालान्तर में शिक्षा निदेशक, उत्तर प्रदेश तथा वाइस-चांसलर इलाहाबाद विश्वविद्यालय भी रहे। वे राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस के मनोविज्ञान एकक के अध्यक्ष भी रहे। संस्थान के प्रति डॉ० भाटिया के उद्गार उल्लेखनीय है :—

"मेरे उस वक्त के विद्यार्थियों और साथियों के सहयोग से व्यावहारिक बुद्धि परीक्षण जो बाद में भाटिया बैटरी आफ परफारमेन्स टेस्ट के नाम से जानी गयी, का दस साल में निर्माण हुआ। मेरे साथियों और विद्यार्थियों ने गाँव-गाँव में रहकर परीक्षण किए। भावना ऐसी प्रबल थी कि गर्मियों की छुट्टियों में भी काम किया। मेरे अनेक साथी थे और वे सब उच्चतम पदों पर पहुँचे और प्रदेश ही नहीं, देश की शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया।"

भारतीय फ्रायड के रूप में चर्चित डाक्टर सीतावर सरन का इस संस्था के लिए नैदानिक क्षेत्र में योगदान अविस्मरणीय है। मनोविश्लेषण विधि का क्रियात्मक रूप में मनो-विकारों के निदान और उपचार में उन्होंने प्रयोग किया।

तीसरे निदेशक के रूप में डॉ० श्याम नारायण मेहरोत्रा अपनी प्रतिभा और चमत्कारी कार्य शैली के लिए शिक्षा विभाग में बहुचर्चित रहे हैं। डॉ० मेहरोत्रा ने एडिन-बरा से बी० एड० की उपाधि लेकर मनोविज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में बड़ी मौलिक व्यवस्थाओं को जन्म दिया था। अपने कार्यकाल में संस्था को जन-जन तक पहुँचाने के लिए अनेक वार्त्तामालाओं का आयोजन कराया। केस कान्फ्रेन्स की परिपाटी को सुदृढ़ किया। आगे चलकर शिक्षा निदेशक, उत्तर प्रदेश तथा उप कुलपति आगरा व जयपुर विश्व-विद्यालय के रूप सें उन्होंने शिक्षा जगत की अविस्मरणीय सेवा की।

मनोविज्ञान के अत्यन्त रोचक आयाम परामनोविज्ञान के क्षेत्र को इस संस्था के चौथे निदेशक डॉ० जमुना प्रसाद ने समृद्ध किया। तत्कालीन शिक्षा आचार्य श्री युगुल

किशोर के प्रस्ताव पर इ० एस० पी० जैसी अबूझ पहेली पर वैज्ञानिक रीति से शोध अध्ययन डॉ० जमुना प्रसाद के मार्ग दर्शन में कराया गया। प्रदेश में कक्षा-8 के स्तर के छात्रों का व्यापक सर्वेक्षण कर इस तथ्य को जानने का प्रयास किया कि किस सीमा तक अतीन्द्रिय शक्तियाँ कार्य करती हैं। इसी आयाम से जुड़े पुनर्जन्म के क्षेत्र में श्रीराम सूरत लाल ने खोजपूर्ण लेख लिखा जो डॉ० स्टीवेन्सन की प्रसिद्ध पुस्तक "नाइन केसेज आफ रीबर्थ" में प्रकाशित हुआ। श्री लाल ने डॉ० आर० जी० मिश्र के साथ मिलकर इन्हीं दिनों स्टैनफर्ड बिने बुद्धि परीक्षण (1939) का हिन्दी अनुशीलन तैयार किया।

डॉ० सन्तोष कुमार कुलश्रेष्ठ (स्व०) ने यांत्रिक अभिरुचि परीक्षण माला में अपेक्षित सुधार कर उसे अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया। डाक्टर हरद्वारी लाल शर्मा ने भारतीय मनोविज्ञान के अदृश्य पक्ष को प्रकाश में लाने का भगीरथ प्रयास किया एवं मानसोपचार को भारतीय योग विद्या के साथ जोड़ने का स्तुत्य प्रयास किया। उन्होंने एलाजेबरा डायग्नॉस्टिक टेस्ट को उपचारी शिक्षा में प्रयोग हेतु निर्मित किया।

मनोवैज्ञानिक सम्बोधों और आयामों को शिक्षा क्षेत्र से जोड़ने का महत्वपूर्ण प्रयास इस संस्था के युवा निदेशक डॉ० लक्ष्मी प्रसाद पाण्डेय ने किया। मनोविज्ञान, शिक्षा की मुख्य धारा का एक अंग बने इसके लिए मनोविज्ञानशाला को विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों का केन्द्र बनाने का प्रथम प्रयास इनके स्तर से प्रारम्भ हुआ जिसका अनवरत अनुशीलन होता चला आ रहा है। डॉ० पाण्डेय का जाइगैनिक प्रभाव विषयक शोध प्रबन्ध मनोविज्ञानशाला की निधि मानी जाती है। इस समय डॉ० पाण्डेय शिक्षा निदेशक (बेसिक) के पद पर कार्यरत हैं।

डॉ० रघुराज पाल सिंह ने निदेशक के रूप में जहाँ एक ओर संस्था की स्वस्थ परम्पराओं का निर्वाह किया वहीं निर्देशन के क्षेत्र में सामयिकी के रूप में एक परीक्षण निर्माण का योगदान दिया। डॉ० सिंह का विचार है :—

"मनोविज्ञानशाला ने निर्देशन कार्य में प्रयोगार्थ, बौद्धिक मापन, अभिरुचियों तथा वैयक्तिक गुणों के पता लगाने हेतु मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के निर्माण एवं मानकीकरण तथा कतिपय महत्वपूर्ण विदेशी परीक्षणों के भारतीयकरण का कार्य प्रारम्भ किया। समय बीतने के साथ-साथ मनोविज्ञान ने छात्रों के शैक्षिक, व्यावसायिक, वैयक्तिक निर्देशन कार्यक्रम को अधिक व्यापक तथा लाभकारी बनाने हेतु कुछ अन्य कार्य भी प्रारम्भ किया।

मापन, मूल्यांकन, प्रशिक्षण, परीक्षण और शोध के क्षेत्र में शनैः शनैः मनोविज्ञानशाला अपनी सार्थकता स्थापित करने में सफल रहा। यहाँ पर कार्यरत विशेषज्ञों ने अन्य विभागों में जाकर महत्वपूर्ण योगदान दिया। शैक्षिक अनुसंधान, प्रशिक्षण और शोध की अग्रगामी संस्था एन० सी० ई० आर० टी० में उत्तर प्रदेश मनोवैज्ञानिक सेवा मूल से डॉ० आर० जी० मिश्र, डॉ० के० एन० सक्सेना, डॉ० आत्मा नन्द शर्मा, सुश्री चंचल मेहरा, श्री बी० एस० रायजादा आदि ने उच्च पदों पर महत्वपूर्ण सेवाएँ उपलब्ध करायीं। सेवा-

योजन प्रशिक्षण और पुर्नवास निदेशालय में वरिष्ठ वैज्ञानिक के पद पर श्री राम देव श्रीवास्तव तथा श्री लाल चन्द्र जैतली ने योगदान दिया। भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के अधीन मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञ के रूप में श्री दीक्षित, सुश्री सत्या श्रीवास्तव, श्री वी०एस० विष्ट, श्री एम० डी० शर्मा, डॉ० भगोलीवाल, श्री ए० के० बनर्जी, श्री के० के० गुप्त, श्री पी० के० शर्मा आदि ने सेवा की। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में डॉ० (श्रीमती) शीला भगोलीवाल, प्रोफेसर वी० के० शर्मा की सेवाएँ उल्लेखनीय रहीं। श्री एस० के० सिंह ने रेलवे मानक संगठन के अन्तर्गत साइको सेल को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस संस्था से प्रशिक्षण पाकर हमारे प्रशिक्षणार्थियों ने अनेक महत्वपूर्ण पदों के दायित्वों का निर्वहन किया। इस सातत्य में डॉ० एस० के० पाल (अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) डॉ० आशा भटनागर तथा श्री जय प्रकाश मित्तल (एन० सी० ई० आर० टी०) श्री सी० डी० तिवारी (हरिजन समाज कल्याण), कु० शान्ता गौतम (रक्षा मंत्रालय), श्री नरेन्द्र सिंह यादव (रक्षा मंत्रालय), श्री टी० एन० उपाध्याय (डी० जी० इ० एण्ड टी०), कु० एस० जी० प्रेम लता (बंगलौर), श्री शरद कुमार पन्त (रेलवे मानक संगठन) आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

मनोविज्ञानशाला के अतीत की गरिमा के संबंध में पूर्व निदेशक श्री सूर्य दत्त उपाध्याय जी के उद्‌गार इस प्रकार है :—

"मैंने प्रो० एम० सी० जोशी को यह कहते हुए सुना कि ब्यूरो में हमारे विद्यार्थियों को दस दिवसीय प्रशिक्षण में टेस्टिंग व गाइडेन्स के टूल्स व परीक्षणों के वास्तविक प्रशासन से अच्छी व्यावहारिक जानकारी प्राप्त हो सकी है। जो इस विश्वविद्यालय में संभव नहीं था।.........डॉ० सतीश चन्द्र गुप्त, शिक्षा निदेशक (उच्च शिक्षा) ने तो अपने उद्‌बोधन में यहाँ तक कहा कि विभाग में इतने दिनों से हूँ पर ब्यूरो को निकट से देखें व समझे बिना मेरा ज्ञान आज तक अधूरा बना रहा।"

9. **विश्रुत आगन्तुक :**

अपने स्थापना वर्ष से ही मनोविज्ञानशाला अपनी विशिष्ट सेवा के कारण आकर्षण का केन्द्र बना रहा है। शिक्षा की मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करने और मानव संसाधन के अपेक्षित और यथेष्ट विकास की दिशा में मनोविज्ञानशाला जैसी संस्थाओं से सदैव ही अपेक्षा की जाती रही है।

इस संस्था के कार्य कलाप और पद्धति की जानकारी करने में देश एवं विदेश के अनेक शीर्षस्थ शिक्षाविदों, विचारकों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, ख्यातिलब्ध लेखकों, मनोवैज्ञानिकों, राजनेताओं और शिक्षा मंत्रियों ने गहरी रुचि दिखायी।

आगन्तुक पुस्तिका में अंकित हस्ताक्षरों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि यहाँ समय-समय पर पधारने वाले विदेशी विश्रुत आगन्तुकों में आर० सी० रायट, (न्यूयार्क),

जी० ए० लारेन्स (नार्थ रोडेशिया), एच० एच० लिग (चीन), डब्लू० एल० बार्नेट (डायरेक्टर, वोकेशनल गाइडेन्स सेन्टर, बोफेलो विश्वविद्यालय न्यूयार्क), एम० इमावामी (जापान), विलियम फिलिप हेरिप (यू० एस० एजूकेशन फाउन्डेशन इ० रे० विलिस-ग्रहियो स्टेट यूनिवर्सिटी), नेतोडिया ताम्पूनान (कम्यूनिटी एजूकेशन आफिसर इन्डोनेशिया), आई० थामसन (वर्जीनिया यूनीवर्सिटी, अब्दुल करीम बिन बाजू सुगाफो (सिंगापुर), जी० डी० मुजुन्डो (एजूकेशन मिनिस्ट्री जाम्बिया), वी० जी० एडेन (अध्यक्ष पेन्सिलवेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी, यू० एस० ए०), एम० यू० अहमद (प्रोफेसर, ढाका विश्वविद्यालय), डब्लू० पी० गुर्गे (यूनेस्को फेलो बैंकाक, थाइलैन्ड), आर कर्ट स्टोम (स्वीडन) आदि प्रमुख हैं।

देश के प्रख्यात और गणमान्य व्यक्तियों, जिन्होंने मनोविज्ञानशाला के कार्य उद्देश्य और उसकी कार्य विधा में रुचि ली, उनमें से कुछ नाम अधोलिखित हैं :—

श्री जवाहर लाल नेहरू (प्रधानमंत्री भारत सरकार), श्री शेख अब्दुल्ला (प्रधानमंत्री काश्मीर), श्रीमती सरोजनी नायडू, प्रो० के० सी० सैय्यद्दीन, प्रो० हुमायूँ कबीर तथा उनके साथ शिक्षा मंत्रालय (भारत सरकार) का विशिष्ट मंडल जिनमें श्री के० जी० चन्दरमनी, मु० हफीज सैय्यद और श्री डी० के० टिक्कू सम्मिलित थे। श्री पी० जौहरी, श्री जी० एम० लखानी तथा आई० हलधर सभी (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार), श्री एल० आर० सेठी (शिक्षा सलाहकार, भारत सरकार), श्री कैलाश प्रकाश (शिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश), श्री सिब्ते रजी (शिक्षा मन्त्री, उत्तर प्रदेश), श्री सीता राम और श्री केशमान राय (दोनों उप शिक्षा मन्त्री, उ० प्र०)।

अभी विशिष्ट आगन्तुकों के आगमन का कार्यक्रम अबाध गति से चल रहा है। जो आता है, देखता है, रुचि लेता है और प्रभावित होता है। इस दशक में भी अनेक शिक्षाविद, मनोवैज्ञानिक और प्रशासनिक अधिकारी हमारे विशिष्ट आगन्तुक रहे हैं। डॉ० सी० जे० दासवाणी (प्रो० और अध्यक्ष अनौपचारिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद नयी दिल्ली) ने संस्था को देखकर निम्नवत् उद्गार व्यक्त किया :—

Have I come here too late ? or too soon ? I wish I could be part of this Magnificient Institution.

श्री दिलीप कुमार (राजस्व सचिव, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ) के भी उद्गार उल्लेखनीय हैं :—

"मैंने आज मनोविज्ञान ब्यूरो को देखा और निदेशक तथा अन्य अधिकारियों से विचार विनिमय का सुअवसर प्राप्त हुआ। ब्यूरो द्वारा प्रदेश के शैक्षिक उन्नयन में जो सक्रिय योगदान दिया गया है उसके लिए निदेशक और उनके सहकर्मी बधाई के पात्र हैं। इस संस्थान के उत्तरोत्तर उज्जवल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं।"

10. आकांक्षा :

पूर्वलिखित पंक्तियों से स्पष्ट है कि मनोविज्ञानशाला की स्थापना राज्य के विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक सेवाओं को उपलब्ध कराने की दृष्टि से की गयी थी। अपने स्थापना

काल से ही मनोविज्ञानशाला इस दिशा में सतत प्रयत्नशील रहा है। निर्देशन, परीक्षण-प्रशासन, परीक्षण-अनुशीलन और रचना, प्रशिक्षण चयन और प्रसार के बहुआयामी कार्य-कलापों को अपने सीमित संसाधनों के होते हुए भी इसने गति दी, दिशा निर्धारित की, मानकों की स्थापना की ओर सद्य: प्रयासरत है।

आज मानव संसाधन का विकास हमारी मूलभूत समस्या भी है और आवश्यकता भी। इसमें दो मत नहीं हो सकते कि कुशल जनशक्ति के निर्माण में मनोवैज्ञानिक सेवाओं का आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। इस आयाम को सम्पादित करने के निमित्त राज्य की मनोवैज्ञानिक सेवाओं को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। इसके लिए सर्वथा अपेक्षित है कि जिला मनोविज्ञान केन्द्रों को पुनर्जीवित किया जाय तथा प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय में स्कूल सायकॉलजिस्ट/काउन्सलर का प्रावधान किया जाय। इसके साथ ही साथ मनोविज्ञानशाला और मंडलीय मनोविज्ञान केन्द्रों को मानवीय और भौतिक संसाधनों से परिपूर्ण किया जाय।

हमारी आकांक्षा है कि मनोविज्ञान और मनोवैज्ञानक सेवाओं का प्रचार-प्रसार हो और हम मानव संसाधन विकास के बृहत्तर परिप्रेक्ष्य में जन सेवा के इस महायज्ञ में अपनी पूर्णाहुति दे सकें।

● ●

मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग (मनोविज्ञानशाला) और सम्बद्ध मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्रों में उपलब्ध मानवीय संसाधन : वर्तमान स्थिति

मनोविज्ञानशाला

क्रम सं०	पद नाम	वेतन क्रम	संख्या	स्थायी/अस्थायी
1	2	3	4	5
1.	निदेशक	रु० 3000—4750	01	स्थायी
2.	वरिष्ठ शोध मनोवैज्ञानिक	रु० 3000—4500	02	,,
3.	मनोवैज्ञानिक (राज०)	रु० 2200—4000	03	,,
4.	मनोवैज्ञानिक	रु० 2000—3200	02	,,
5.	परामर्शदाता	रु० 2000—3200	02	,,
6.	सीनियरटेस्टर	रु० 2000—3200	02	,,
7.	सांख्यिक	रु० 2000 —3200	01	,,
8.	गाइडेन्स काउन्सलर	रु० 2000—3200	02	,,
9.	व्यावसायिक निर्देशन अधिकारी	रु० 2000—3200	01	,,
10.	सहायक मनोवैज्ञानिक	रु० 1600—2660	07	,,
		कुल	23 पद	

कार्यालय तथा परिचारक वर्ग :

1	2	3	4	5
1.	वरिष्ठ सहायक	रु० 1400 – 2600	01	स्थायी
2.	शिविर सहायक	रु० 1200 –2040	01	,,
3.	पुस्तकालयाध्यक्ष	रु० 1200 – 2040	01	,,
4.	वरिष्ठ लिपिक	रु० 1200 –2040	03	,,
5.	कनिष्ठ लिपिक	रु० 950—1500	01	,,
		कुल	07 पद	
6	दफ्तरी	रु० 775 –1025	01	स्थायी
7.	स्वीपर	रु० 750— 940	01	,,
8.	परिचारक	रु० 750— 940	10	,,
		कुल	12 पद	

● ●

मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र तथा राजकीय इण्टर कालेज

लखनऊ, फैजाबाद, गोरखपुर, वाराणसी, कानपुर, झाँसी, आगरा, मेरठ, बरेली, नैनीताल, पौड़ी और मुरादाबाद ।

तकनीकी वर्ग :

1.	मंडलीय मनोवैज्ञानिक	रु० 2200—4000	12 पद (प्रत्येक केन्द्र 01 पद)	9 स्थायी 03 अस्थायी नैनीताल, पौड़ी और मुरादाबाद ।
2.	वोकेशनल गाइडेन्स काउन्सलर	रु० 2000—3200	12 पद	”
3.	सहायक मनोवैज्ञानिक	रु० 1660—2600	12 पद	”
4.	स्कूल मनोवैज्ञानिक (रा० इ० का०, लखनऊ, गोरखपुर, वाराणसी, इलाहाबाद और आगरा)	रु० 1660—2600	5 पद	अस्थायी
		कुल	41 पद	

कार्यालय और परिचारक वर्ग :

1.	वरिष्ठ लिपिक	रु० 1200—2040	12 पद	09 स्थायी 03 अस्थायी
2	शिविर सहायक	रु० 1200—2040	07 पद	स्थायी
	(पौड़ी, नैनीताल, झाँसी, फैजाबाद और मुरादाबाद में पद नहीं हैं)			
		कुल	19 पद	
3.	परिचारक/चौकीदार	रु० 750—940	12 पद	09 स्थायी 03 अस्थायी
		कुल	12 पद	

मनोविज्ञानशाला के निदेशक

क्रम संख्या	नाम	वर्ष
1	2	3
(1)	डॉ० सोहन लाल	(1948—1949)
(2)	डॉ० चन्द्र मोहन भाटिया	(1949—1956)
(3)	डॉ० श्याम नारायण मेहरोत्रा	(1956—1959)
(4)	डॉ० जमुना प्रसाद	(1959—1961) (1961—1965) (1966—1967) (1971—1974)
(5)	डॉ० हरद्वारी लाल शर्मा	(1965—1966) (1968—1969) (1974—1975)
(6)	डॉ० जय गोपाल वर्मा	(1969—1971)
(7)	डॉ० लक्ष्मी प्रसाद पाण्डेय	(1974—1975) (1977—1980)
(8)	डॉ० सन्तोष कुमार कुलश्रेष्ठ	(1975—1977)
(9)	श्री गुलाब सिंह विष्ट	(1980)
(10)	डॉ० रघुराज पाल सिंह	(1980—1981)
(11)	डॉ० बिपिन कुमार गुप्त	(1981—1984)
(12)	श्री प्रयाग दत्त दीक्षित	(1984—1985) (1986—1987)
(13)	श्री सूर्य दत्त उपाध्याय	(1985—1986)
(14)	श्री श्याम नारायण राय	(1987 से अब तक)

Copy of G.O. No. A—6511/XY—447—9247 dated July 25, 1947 from the Secretary. U.P., Lucknow Education (A) Department to this Office.

With reference to your letter No. P—2097/XXXV-7 (17) dated December 30, 1946, I am directed to say that the Governor has been pleased to sanction, with effect from July 1, 1947 or subsequent date the establishment of a Psychological Bureau at Allahabad, and to the creation of the following posts for the same with effect from the same date or the date of entertainment :—

(1)	One Director of Bureau in the U. P. E. S. in the scale of	Rs. 500-50.1200 (Provisional and liable to reduction)
(2)	Three Psychologists in the U. P. E. S. one Psychologist, one Psycharist and one social worker in the scale of	Rs. 250.25.400. EB. 30. 700 EB 50-850
(3)	One Statistician in the special SES in the scale of	Rs. 200-10-250 (EB) 10-310 (EB) 14-450
(4)	Two Testers in the special SES scale of	Rs. 200-10-250 (EB) 10-310(EC) 14-450

Four Testers in the trained Graduates grade of Rs. 120-8-200 (EB) 10-300.

One Libiarian in the scale of Rs. 80 5-100-6-130

One Head Clerk in the scale of Rs. 80-5-100-6-130

Three clerks in the scale of Rs. 60-3-90-4-110

One Deftari in the scale of Rs. 30-1-35.

Twelve servants in the scale of Rs. 25-1-30 (6 Orderlies, 2 Library peons, 2 Office peons and 1 Chowkidar).

Cost of living allowance and city compensatory allowance will be admissible to the staff of the Bureau in accordance with the rules in force from time to time.

2. Sanction is also accorded to the following recurring expenditure in connection with the maintenance of the Bureau :—

Allowances and Honorarie :

Dearness or city compensatory allowance	Rs. 5,320
Travelling Allowance	Rs. 300

Contingencies Contract :

Postage stamps etc.	Rs. 3,000
Pay of menials	Rs. 1,500

Non-Contract :

Clothing for peons	Rs. 160
Binding of books amd Registers	Rs. 5,000
Other items	Rs. 100

2. The charge will be debitable to the head "37-Education E General charges (d) Miscellaneus (VI) Psychological Bureau" under which a provision of Rs. 32,100 has been made in the current year's budget.

Finance Department

No. A (1)/XV-447-44

Copy forwarded for information to the Accountant General, U.P. Allahabad.

Education Department

No. A (2)/XV-447-44

Copy also forwarded to Education (E) Department for information.

True Copy

Sd/ Illegible

Director, Bureau of Psy.

U. P., Allahabad.

• •

शैक्षिक तकनीकी विभाग, (राज्य शैक्षिक तकनीकी संस्थान, उत्तर प्रदेश, लखनऊ)

प्रस्तावना :

शिक्षा एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। विज्ञान और तकनीकी के विकास के फलस्वरूप सम्प्रेषण कला में भी ऐसे उपकरण, साधन, माध्यम उपलब्ध हो गये हैं जिनके कारण इस कला में काफी विकास हुआ है। इन माध्यमों के समुचित उपयोग की वैज्ञानिक प्रक्रिया को शैक्षिक तकनीकी कहते हैं। शिक्षाविदों ने शैक्षिक तकनीकी को निकाय के रूप में भी परिभाषित किया है। शोमनीष के अनुसार "शैक्षिक अधिगम के निर्माण तथा शैक्षिक अधिगम की दक्षता एवं प्रभावकारिता बढ़ाने की प्रक्रिया में वैज्ञानिक ज्ञान के उपयोग को शैक्षिक तकनीकी कहते हैं। मानव विधियों, सिद्धान्तों की अनुपस्थिति में शैक्षिक तकनीकी प्रयोगाश्रित विधियों को प्रयोग करती हैं।"

प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग सन् 75-76 से औपचारिक रूप से प्रारम्भ हुआ। इसी उद्देश्य सें भारत सरकार की शत-प्रतिशत सहायता से सभी प्रदेशों में शैक्षिक तकनीकी कोष्ठ तथा दिल्ली में केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापनाकी गयी। उत्तर प्रदेश में शैक्षिकी कोष्ठ की स्थापना वर्ष 76-77 में हुई। कोष्ठ की स्थापना का मौलिक उद्देश्य था :—

1. शैक्षिक तकनीकी अवधारणा का प्रचार एवं प्रसार।
2. जनसुलभ शैक्षिक माध्यमों के शिक्षा में उपयोग द्वारा शैक्षिक अधिगम के निर्माण में गुणात्मक सुधार।
3. शैक्षिक सर्वेक्षण, शोध अध्ययन, मूल्यांकन एवं अनुगमन कार्यक्रमों द्वारा प्रभावी शैक्षिक अधिगम के निर्माण में सहयोग।
4. जनसुलभ शैक्षिक माध्यमों के समुचित उपयोग द्वारा शिक्षण-प्रशिक्षण में गुणात्मक सुधार।

प्रदेश में शैक्षिक तकनीकी कोष्ठ में अध्यक्ष के रूप में निदेशक, 2 राजपत्रित वेतन-क्रम के स्क्रिप्ट राइटर एवं आवश्यक कार्यालयीय कर्मचारी नियुक्त किये गये। कोष्ठ ने अपने 6 वर्षों के कार्यकाल में गोष्ठियों के माध्यम से मण्डलीय स्तर पर माध्यमिक विद्यालयों के 200 प्रधानाचार्यों को आमंत्रित कर विचार विमर्श के माध्यम से शैक्षिक तकनीकी अव-धारणा के विविध आयामों एवं उनके उपयोग से परिचित कराते हुए शैक्षिक तकनीकी के प्रचार-प्रसार का प्रयास किया।

शैक्षिक तकनीकी के विषय में विचार-विमर्श एवं शिक्षा के क्षेत्र में लगे अधिकारियों/कर्मचारियों के बीच शैक्षिक विचार-विमर्श का एक निरन्तर क्रम चलता रहे, इसके लिए मण्डल, जनपद स्तर पर शैक्षिक तकनीकी समितियों की स्थापना की गयी और उनकी कार्यप्रणाली सुनिश्चित की गयी। इस प्रकार से प्रदेश में शैक्षिक तकनीकी के संदर्भ में औपचारिक रूप से कार्यवाही छोटे से शैक्षिक तकनीकी कोष्ठ के माध्यम से प्रारम्भ हुई।

शैक्षिक दूरदर्शन योजना :

उत्तर प्रदेश शैक्षिक तकनीकी कोष्ठ की क्रियाशीलता को दृष्टिगत रखते हुए और इनसेट-1 बी भारतीय संचार उपग्रह के क्रियाशील हो जाने से शैक्षिक दूरदर्शन की जो सुविधा उपलब्ध हुई उसका प्रयोग प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में नियोजित ढंग से करने के लिए शैक्षिक तकनीकी कोष्ठ को संवर्धित कर **शैक्षिक तकनीकी संस्थान की स्थापना 1984 में हुई।** शैक्षिक तकनीकी संस्थान, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद के शैक्षिक तकनीकी विभाग के रूप में क्रियाशील है। संस्थान की स्थापना के मौलिक उद्देश्य हैं :—

1. शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रमों के माध्यम से प्राथमिक स्तर की शिक्षा में गुणात्मक सुधार।
2. आकाशवाणी के सहयोग से शैक्षिक रेडियो कार्यक्रमों के प्रसारण में सुधार।
3. शैक्षिक आडियो/रेडियो कार्यक्रमों का निर्माण।
4. शैक्षिक तकनीकी के विभिन्न स्तरों पर प्रयोग हेतु प्रचार एवं प्रसार।
5. शैक्षिक शोध, सर्वेक्षण तथा मूल्यांकन।

उक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु संस्थान में वांछित तकनीकी सुविधा एवं मानवीय संसाधन उपलब्ध कराये गये जिसके अन्तर्गत संस्थान में कार्यक्रमों के निर्माण हेतु अधोलिखित सुविधा उपलब्ध हैं :—

संसाधन 'अभियन्त्रण सुविधा' :

1. एक साथ तीन वाह्य छायांकन की पूर्ण सुविधा।
2. दो कार्यक्रमों के एक साथ संपादन की व्यवस्था।
3. स्टूडियों में तीन कमरों के माध्यम से कार्यक्रमों के निर्माण की सुविधा।
4. आडियो/रेडियो कार्यक्रमों के निर्माण की व्यवस्था।
5. 16 मि०मी०, 35 मि०मी०, 70 मि०मी० की फिल्मों को वीडियो फिल्म रूपांतरण की सुविधा।
6. सम्पूर्ण तकनीकी क्षेत्र एवं आडियो/वीडियो स्टूडियो वातानुकूलित है।
7. कार्यक्रम के छायांकन हेतु दो मिनी बस, एक स्टाफ कार तथा एक जीप की सुविधा उपलब्ध है।

मानवीय संसाधन :

शैक्षिक तकनीकी कोष्ठ के 7 पदों को सम्मिलित करते हुए शैक्षिक दूरदर्शन कार्य-क्रम निर्माण योजना के अन्तर्गत सृजित 120 पदों के पदाधिकारियों को सम्मिलित करते हुए संस्थान में 127 अधिकारी/कर्मचारी के पद सृजित हैं जो विशिष्ट क्षेत्रों के विशेषज्ञ हैं और अपने-अपने क्षेत्रों में कार्यों को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करते हैं। विभागवार विवरण परिशिष्ट-1 के अनुसार है।

शैक्षिक दूरदर्शन योजना का क्षेत्र :

भारत सरकार की शैक्षिक दूरदर्शन योजना के अन्तर्गत प्रदेश की घनी आबादी वाले, आर्थिक एवं शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े क्षेत्र गोरखपुर, बस्ती तथा आजमगढ़ के ग्रामीण अंचलों के प्राथमिक विद्यालयों में टी० वी० सेट्स संस्थापित किए गए जिनका वितरण तालिका में दर्शाया गया है।

जनपद	वी० एच० एफ०	डी० आर० एस०	सोलर सेट	योग
गोरखपुर	458	—	—	458
बस्ती	130	56	47	233
आजमगढ़	13	141	53	207
कुल	601	197	100	898

शैक्षिक दूरदर्शन योजना का विस्तार :

वर्ष 89-90 में भारत सरकार की सहायता से शैक्षिक दूरदर्शन योजना का विस्तार किया गया और 1020 रंगीन टी० वी० सेट्स प्रदेश के ऐसे प्राथमिक एवं जूनियर हाई स्कूलों को, जिनमें विद्युत आपूर्ति उपलब्ध है तथा जिनका भवन पक्का है तथा जिनमें 2 से अधिक अध्यापक कार्यरत हैं, दिए गए हैं। इस प्रकार औपचारिक रूप से लगभग 1020 विद्यालयों में शैक्षिक दूरदर्शन योजना के अंतर्गत कार्यक्रमों को देखने की सुविधा और विद्यालयों में की गयी है जिसका विस्तार आगामी वर्ष में भी होते रहने की सम्भावना है।

टी० वी० सेटों का अनुरक्षण :

स्पष्ट है कि विद्यालयों में मात्र टी० वी० सेट उपलब्ध करा देने से इस योजना की सफलता सुनिश्चित नहीं की जा सकती। इसलिए टी० वी० सेट चालू हालत में बने रहें, इसके अनुरक्षण की सुविधा हेतु अपट्रान इण्डिया लिमिटेड, लखनऊ को कान्ट्रैक्ट प्रवेश

सरकार द्वारा किया गया। प्रतिवर्ष व्ययभार 12 लाख रुपये होता है। द्वितीय चरण की योजना के अन्तर्गत जो 1020 टी० वी० सेट उपलब्ध कराये गये हैं उनके अनुरक्षण का दायित्व विद्यालय के प्रधानाचार्यों को ही सौंपा गया है और उनसे यह अपेक्षा की गयी है कि टी० वी० सेटों के चालू रखने में उनके अनुरक्षण पर जो भी व्यय हो उसका भुगतान विद्यालय विकास या दृश्य-श्रव्य कोष से करें।

शैक्षिक रेडियो सेवा में विस्तार :

अभी तक तो विद्यालयों से यह अपेक्षा की जाती रही कि श्रव्य-दृश्य कोष में उपलब्ध धन से रेडियो टेप रिकार्डर, टी० वी० आदि का क्रय करें, परन्तु सभी विद्यालयों में यह सुविधा उपलब्ध कराने के लिए भारत सरकार की शत प्रतिशत सहायता से प्रदेश के 16435 जूनियर हाई स्कूलों में टू-इन वन उपलब्ध कराने की योजना वर्ष 88-89 से ही संचालित है तथा 90-91 हेतु 14400 विद्यालयों में टू-इन-वन की सुविधा हेतु प्रस्ताव भारत सरकार को प्रेषित किया गया है। उद्देश्य यह है कि प्रतिवर्ष नियोजित ढंग से विद्यालयों को इस योजना के अन्तर्गत सम्मिलित करते हुए 8वीं पंच-वर्षीय योजना की समाप्ति तक सभी विद्यालयों को टू-इन-वन से अवश्य ही पोषित कर दिया जाय जिससे रेडियो माध्यम का उपयोग विद्यालयों में हो सके तथा बिजली की आपूर्ति उपलब्ध होते ही विद्यालयों में टी० वी० भी उपलब्ध कराये जायेंगे।

शैक्षिक दूरदर्शन एवं रेडियो कार्यक्रमों का निर्माण :

विद्यालयों में टू-इन-वन तथा टेलीविजन सेट उपलब्ध करा देने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण दायित्व है उपयोगी शैक्षिक दूरदर्शन तथा रोचक शैक्षिक रेडियो कार्यक्रमों का निर्माण। इन दोनों प्रकार के कार्यक्रमों के निर्माण के लिए आवश्यक तकनीकी उपकरण एवं अन्य तकनीकी सुविधा संस्थान में उपलब्ध है तथा वांछित प्रकार के अधिकारी/कर्मचारी भी संस्था में नियुक्त हैं। योजना के प्रारम्भ से अब तक 422 शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रमों का निर्माण किया जा चुका है जिनका प्रसारण उपग्रह के माध्यम से कराया जाता है और यह कार्यक्रम न केवल उत्तर प्रदेश में अपितु उत्तरी भारत के सम्पूर्ण हिन्दी भाषी प्रदेशों में देखा जाता है।

यह कार्यक्रम सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, स्वास्थ्य, गणित, नैतिक शिक्षा, भाषा, कार्यानुभव एवं अन्य विविध उपयोगी शैक्षिक क्षेत्रों में शृंखलाबद्ध विधि से निर्मित किए जाते हैं। कार्यक्रमों के निर्मित होने तक विषय विशेषज्ञों एवं कार्यक्रम निर्माताओं के बीच विचार-विमर्श का सिलसिला चलता रहता है जिससे इनकी उपयोगिता सुनिश्चित रहे।

इसी प्रकार शैक्षिक रेडियो कार्यक्रम को भी निर्मित करने की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई है।

शैक्षिक मूल्यांकन, शोध एवं सर्वेक्षण : संस्थान द्वारा सम्पादित शोध, सर्वेक्षण तथा मूल्यांकन के क्षेत्र सूची में दर्शाए गए हैं :

1. प्रदेश में माध्यमिक विद्यालयों के श्रव्य-दृश्य कोष में उपलब्ध धन तथा उपलब्ध शैक्षिक तकनीकी उपकरणों का सर्वेक्षण।
2. माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की शैक्षिक दूरदर्शन माध्यम के प्रति अभिवृत्ति का मापन।
3. प्रसारित हो रहे शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रमों का मूल्यांकन।
4. आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किए जाने वाले शैक्षिक प्रसारणो का अनुश्रवण एवं मूल्यांकन।
5. प्राथमिक विद्यालयों में सेवारत अध्यापकों की दूरदर्शन माध्यम के प्रति अभिवृत्ति मापन।

अन्य विविध कार्य :

1, शासन/विभागीय निर्देशों के अनुपालन में होने वाली गोष्ठियों/प्रशिक्षणों, सम्मेलनों/उद्घाटन समारोहों का छायांकन तथा रिकार्डिंग व्यवस्था।
2. शिक्षा विभाग के पत्राचार संस्थान हेतु कई शैक्षिक आडियो कैसेटों तथा साक्षरता केन्द्र, लखनऊ हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए कतिपय वीडियो कार्यक्रमों का निर्माण भी किया गया। इसी क्रम में प्रौढ़ शिक्षा हेतु प्रतिफल टेलीफिल्म का निर्माण किया गया जिसका प्रसारण दिल्ली दूरदर्शन केन्द्र द्वारा सम्पूर्ण भारत में नेशनल हुकअप पर किया गया जो विभाग की राष्ट्र स्तर पर उपलब्धि है।
3. संस्थान स्थापना वर्ष से लेकर अब तक देश के तकनीकी संस्थानों के कर्मियों हेतु सुनिश्चित ए० आई० बी० डी०/सी० आई० ई० टी० के दो चालीस दिवसीय अंतर्राज्यीय स्तर के प्रशिक्षणों का आयोजन रहा है। प्रथम आयोजन वर्ष 1986 तथा दूसरा 1988 में हुआ था।

इस प्रकार अपने वहुआयामी क्रियाकलाप, शिक्षक प्रशिक्षण/शोध कार्यक्रमों, मूल्यांकनों तथा सर्वेक्षणों की समाहित करते हुए शैक्षिक तकनीकी विभाग परिषद् के निर्देशन में उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

● ●

शैक्षिक तकनीकी विभाग—वर्तमान पदों का विवरण

क्रम सं०	पद नाम	वेतनमान	संख्या	स्थायी/अस्थायी
1	2	3	4	5
1.	निदेशक	3200—4875	1	अस्थायी
2.	प्रोडक्शन इन्चार्ज	3200—4875	1	"
3.	इंजीनियर इन्चार्ज	3200—4875	1	"
4.	डिप्टी प्रोडक्शन इं०	3000—4500	1	"
5.	डिप्टी इंजीनियर इं०	3000—4500	1	"
6.	सहायक अभियंता	2200—4000	3	"
7.	प्रशासनिक अधिकारी	2200—4000	1	"
8.	प्रोड्यूसर	2200—4000	7	"
9.	इवैल्युएशन इंचार्ज	2200—4000	1	"
10	लैक्चरर प्रोडक्शन	2200—4000	5	"
11.	प्रोग्रामर कम स्क्रिप्ट राइटर	2000—3500	2	"
12.	स्क्रिप्टराइटर	1660—2660	4	"
13.	अभियन्त्रण सहायक	1600—2660	7	"
14.	सीनियर ग्राफिक एवं चीफ विजुएलाइजर		1	"
15.	कैमरामैन	1600—2660	6	"
16.	प्रस्तुति सहायक	1400—2600	6	"
17.	फ्लोर मैनेजर	1400—2600	1	"
18.	सेट सुपरवाइजर	1400—2600	1	"
19.	ग्राफिक आर्टिस्ट	1400—2600	1	"
20.	टैक्नीकल स्टोर सुपरवाइजर	1400—2600	1	"

1	2	3	4	5
21.	एडीटर वीडियो	1400—2600	3	,,
22.	टेक्नीशियन	1400—2600	6	,,
23.	सीनिक डिजाइनर (वर्कशाप इंचार्ज)	1400—2600	1	,,
24.	वैयक्तिक सहायक	1400—2600	2	,,
25.	वरिष्ठ सहायक	1400—2300	1	,,
26.	आशुलिपिक	1400—2300	2	,,
27.	पुस्तकालयाध्यक्ष	1400—2300	1	,,
28.	फोटो/एनीमेशन/ग्राफि सहायक।	1400—2300	3	,,
29.	वरिष्ठ सहायक	1200—2041	2	,,
30.	आशुलिपिक	1200—2040	2	,,
31.	सहायक लेखाकार	1200—2040	1	,,
32.	वरिष्ठ लिपिक	1200—2040	4	,,
33.	लैब असिस्टेंट	975—1660	1	,,
34.	प्रोजेक्टनिष्ट	975—1660	3	,,
35.	इलेक्ट्रीशियन	975—1660	1	,,
36.	सीनिक असिस्टेंट	975—1660	1	,,
37.	फोटोग्राफर	975—1660	1	,,
38.	स्टोरकीपर ग्रेड III	975—1660	1	,,
39.	फ्लोर असिस्टेंट	825—1200	3	,,
40.	कारपेन्टर	825—1200	2	,,
41.	लाइटिंग असिस्टेंट	825—1200	2	,,
42.	पैन्टर	825—1200	1	,,

1	2	3	4	5
43.	वार्डरोब सहायक	825—1200	1	,,
44.	कनिष्ठ लिपिक	950—1500	3	,,
45.	मेकअप आर्टिस्ट	950—1500	1	,,
46.	ड्राइवर	950—1500	3	,,
47.	दफ्तरी कम चालक मशीन	775—1025	1	,,
48.	खलासी	750— 940	12	,,
49.	चौकीदार/गेटकीपर	750— 940	3	,,
50.	फर्राश	750— 940	2	,,
51.	जमादार	750— 940	1	,,

● ●

संस्थान द्वारा निर्मित शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रमों की सूची

वर्ष 1986-87

क्रम सं०	कार्यक्रम का नाम
1	2
1.	सर्कस
2.	जल ही जीवन है (शृंखला), जल चक्र भाग—1
3.	जल श्रोत भाग—2
4.	पानी की उपयोगिता भाग—3
5.	साफ पानी भाग—4
6.	पानी और शरीर भाग—5
7.	पेड़-पौधे और हम (शृंखला), अंकरण भाग—1
8.	कपास का पौधा भाग—2
9.	अँधेरे से ऊँजाले की ओर
10.	एक बगिया के फूल
11.	पुराना लखनऊ, आसफुद्दौला की उदारता का प्रतीक
12.	लखनऊ महोत्सव
13.	लखनऊ महोत्सव, (नृत्य, नाट्य, प्रेमप्याला)
14.	लखनऊ भाग—1
15.	लखनऊ भाग—2
16.	लखनऊ का चिकन उद्योग
17.	सिफर शून्य जीरो
18.	किताबों पर कवर चढ़ाना

1	2	1	2
19.	गेंदों पर सजावट	41.	छोटे-बड़े साथ-साथ भाग—3
20.	बची ऊन से खरगोश बनाना	42.	बैर का अंत
21.	आओ सीखें आसन बनाना	43.	खेल-खेल में (शृंखला) आओ खेलो कागज के खेल भाग—1
22.	किताबों पर जिल्द चढ़ाना	44.	आओ खेलो कागज के खेल भाग—2
23.	मूँगफली के छिलकों का सदुपयोग	45.	कचरा से कंचन भाग—3
24.	रुई से बबुआ बनायें	46.	गुड़िया चली ससुराल
25.	रंगीन कागज से चटाई बनाना	47.	दिमागी कसरत (शृंखला) भाग—1
26.	अंगूठे से ड्राइंग बनाना	48.	दिमागी कसरत भाग—2
27.	वायु दाब	49.	दिमागी कसरत भाग—3
28.	वस्तुएँ डूबती-तैरती क्यों हैं?	50.	दिमागी कसरत भाग—4
29.	समाजोपयोगी व्यावसायिक शिक्षा	51.	एक खेल मतलब भरा
30.	वृत्त	52.	काम बना आसान
31.	बल के प्रकार	53.	हमारी दुनिया
32.	दाब	54.	खेल-खेल में भाग—1
33.	जलदाब	55.	खेल-खेल में भाग—2
34.	बल	56.	[illegible]
35.	माटी के रूप अनेक	57.	हवा का जादू भाग—1
36.	लालच का फल		
37.	डाकिया भाग—1		
38.	डाकिया भाग—2		
39.	छोटे-बड़े साथ-साथ (शृंखला) भाग—1		
40.	छोटे-बड़े साथ-साथ भाग—2		

● ●

वर्ष 1987–88

क्रम सं०	कार्यक्रम का नाम	क्रम सं०	कार्यक्रम का नाम
1.	मित्रता का मूल्य	24.	पुतली में राम
2.	क्यों और कैसे ?	25.	राजस्थान के नृत्य
3.	कुछ वैज्ञानिक प्रयोग	26.	उत्तराखण्ड के लोकनृत्य
4.	अर्ध कुम्भ	27.	कुछ कथक नृत्य
5.	सन्तोष का मीठा फल	28.	अंकों पर आधारित
6.	स्वास्थ्य सबके लिए भाग—1		"दिमागी कसरत"
7.	मछली घर	29.	गिनती सीखें
8.	अंधेर नगरी चौपट राजा	30.	रेखा
9.	हवा का उछाल बल भाग—1	31.	ऊर्जा के रूप
10.	बूझो तो जाने भाग—1	32.	मेढक का फैसला
11.	बूझो तो जाने भाग—3	33.	अनोखी हार
12.	बूझो तो जाने भाग—4	34.	आवाज का जन्म
13.	बूझो तो जाने भाग—5	35.	सिकन्दर-पोरस
14.	बूझो तो जाने भाग—6	36.	समुद्रगुप्त
15.	विज्ञान जत्था—एक परिचय	37.	सम्राट अशोक
16.	एकलव्य	38.	पेड़ पौधे और हम
17.	समूह गान		(यह धरती कहती है)
18.	पांच में से तीन गये ? भाग—1	39.	पहचानो और जानो
19.	पाँच में से तीन गये ? भाग—2	40.	गुलदस्ते के फूल
20.	क्यों और कैसे ? (विज्ञान प्रयोग)	41.	दो और दो चार भाग—1
21.	हवा का जादू भाग—2	42.	दिशा बोध
22.	खामोशी की जुबान	43.	यातायात के साधन भाग—1
23.	दूध एक पौष्टिक आहार	44.	उत्तोलक

1	2	1	2
45.	बूझो तो जानें भाग—1	69.	यह धरती कहती है भाग—2
46.	नटवरी नृत्य	70.	राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी
47.	एक डाल के पंछी	71.	पैसों का पेड़
48.	फोक आर्ट एण्ड क्राफ्ट शृंखला	72.	लोमड़ी का न्याय
	(मिट्टी से खिलौने बनाना)	73.	महुआ और काना बैल
49.	कागज से उपयोगी वस्तुएँ बनाना	74.	बूझो तो जानें भाग—7
50.	आओ सीखें काम की चीजें		बूझो तो जानें भाग- 8
51.	सन्तोष का मीठा फल	75.	क्यों और कैसे भाग—1
52.	यह धरती कहती है		क्यों और कैसे भाग—2
53.	राष्ट्रीय एकता पर आधारित चार गीत	76.	आओ सीखें काम की चीजें भाग—3
54.	कर्मवीर दधीचि	77.	आओ सीखें काम की चीजें
55.	पहचानो और जानो भाग—1		भाग—4
56.	पहचानो और जानो भाग—2	78.	हवा का उछाल बल भाग—2
57.	पाँच इन्द्रियाँ	79.	झाँसी की रानी
58.	चीनी की कहानी	80.	आत्मनिर्भरता भाग—1
59.	सीमेण्ट की कहानी	81.	बच्चों के दोस्त
60.	साबुन की कहानी	82.	रास्ते खुशियों के
61.	महाकवि निराला	83.	भूगोल शृंखला "पृथ्वी"
62.	अंकों के भिन्न भाग—1	84.	सौर मण्डल "ग्रहों की गोष्ठी"
63.	इतिहास के पन्ने	85.	चुम्बकत्व (विज्ञान)
	(काकोरी के शहीद) भाग—1	86.	26 जनवरी की पूर्व संध्या
64.	इतिहास के पन्ने		पर सांस्कृतिक कार्यक्रम
	(काकोरी के शहीद) भाग—2	87.	दयालु राजकुमार
65.	मधुमक्खी की कहानी	88.	हवा का उछाल बल भाग—3
66.	गुरुत्वीय केन्द्र	89.	विद्यालयों में कार्यानुभव
67.	क्रिया-प्रतिक्रिया		और खेल
68.	खेल खेल में	90.	चालाक बन्दर

वर्ष 1987–88

क्रम सं०	कार्यक्रम का नाम	क्रम सं०	कार्यक्रम का नाम
1.	मित्रता का मूल्य	24.	पुतली में राम
2.	क्यों और कैसे ?	25.	राजस्थान के नृत्य
3.	कुछ वैज्ञानिक प्रयोग	26.	उत्तराखण्ड के लोकनृत्य
4.	अर्ध कुम्भ	27.	कुछ कथक नृत्य
5.	सन्तोष का मीठा फल	28.	अंकों पर आधारित "दिमागी कसरत"
6.	स्वास्थ्य सबके लिए भाग—1		
7.	मछली घर	29.	गिनती सीखें
8.	अंधेर नगरी चौपट राजा	30.	रेखा
9.	हवा का उछाल बल भाग—1	31.	ऊर्जा के रूप
10.	बूझो तो जाने भाग—1	32.	मेढक का फैसला
11.	बूझो तो जाने भाग—3	33.	अनोखी हार
12.	बूझो तो जाने भाग—4	34.	आवाज का जन्म
13.	बूझो तो जाने भाग—5	35.	सिकन्दर-पोरस
14.	बूझो तो जाने भाग—6	36.	समुद्रगुप्त
15.	विज्ञान जत्था—एक परिचय	37.	सम्राट अशोक
16.	एकलव्य	38.	पेड़ पौधे और हम (यह धरती कहती है)
17.	समूह गान		
18.	पांच में से तीन गये ? भाग—1	39.	पहचानो और जानो
19.	पाँच में से तीन गये ? भाग—2	40.	गुलदस्ते के फूल
20.	क्यों और कैसे ? (विज्ञान प्रयोग)	41.	दो और दो चार भाग—1
21.	हवा का जादू भाग—2	42.	दिशा बोध
22.	खामोशी की जुबान	43.	यातायात के साधन भाग—1
23.	दूध एक पौष्टिक आहार	44.	उत्तोलक

1	2	1	2
48.	करके सीखो भाग—3	74.	ऐसा क्यों ? भाग - 3
49.	लाख टके की बात	75.	ऐसा क्यों भाग—4
50.	अपने विषय में	76.	चूड़ियों से फूल बनाना
51.	मानवता भाग—3 (जीवन की मुस्कान)	77.	अखरोट की चिड़ियाँ बनाना
		78.	रद्दी से चित्र बनाना
52.	त्रिभुज के अन्तःकोण	79.	चूड़ियों से चिड़ियाँ बनाना
53.	बाइबिल	80.	रेखाओं से चित्र बनाना
54.	हरिश्चन्द्र भाग—1	81.	आलेखन
55.	हरिश्चन्द्र भाग—2	82.	यातायात के साधन भाग—3
56.	हरिश्चन्द्र भाग—3	83.	मूर्तिकला
57.	सीख	84.	हमारा गाँव
58.	एकता में बल	85.	हमारा विद्यालय
59.	बन्दरवाला	86.	सफाई की शिक्षा (हेल्थ बाय
60.	मुहावरे	87.	छोटी बड़ी बात
61.	युग प्रवर्तक	88.	ऐसा क्यों ? भाग - 5
62.	दीपू की समझदारी	89.	ऐसा क्यों ? भाग—6
63.	बड़ा आदमी	90.	सोचो, समझो, बताओ भाग—1
64.	राजा का न्याय	91.	सोचो, समझो, बताओ भाग—2
65.	जैसी करनी वैसी भरनी	92.	ऐसा क्यों ? भाग—7
66.	पृथ्वी की उत्पत्ति (हमारा भूगोल)	93.	बूझो तो जानें भाग—9
67.	करके सीखें भाग—4	94.	बूझो तो जानें भाग— 10
68.	नागरिक अधिकार भाग—1	95.	नाटक बनाम खुमली
69.	नागरिक अधिकार भाग—2	96.	करके सीखो
70.	अपने विषय में (मम्मी का सपना)	97.	करके सीखो
71.	अमूल्य उपहार	98.	धरती का शृंगार
72.	धरती माता	99.	हमरा घर
73.	स्वास्थ्य और पर्यावरण भाग—1	100.	हमारा परिवार

1	2	1	2
101.	शनिवार का उधार	130.	"स्वास्थ्य और व्यायाम" श्रृंखला के अन्तर्गत "योग" भाग— 1
102.	माँ बेटियाँ		
103.	संगठन में शक्ति	131.	"स्वास्थ्य और व्यायाम" श्रृंखला के अन्तर्गत "योग" भाग—2
104.	श्रोनी बोध		
105.	राजस्थान की प्राचीन इमारतें	132.	स्वास्थ्य और पर्यावरण भाग—1
106.	खजूर और खरगोश के किस्से		
107.	शीन और शीन पेन्ट	133.	स्वास्थ्य और पर्यावरण भाग—2
108.	अंधेरे की दुश्मन	134.	सोचो, समझो, बताओ भाग—1
109.	ज्ञान गंगा	135.	सोचो, समझो, बताओ भाग—2
110.	बूझो तो जानें भाग—11	136.	सच्चाई का फल
111.	बूझो तो जानें भाग—12	137.	खुद और खमडीमल
112.	पतंग सहारे तितली उतरी	138.	आजादी की कहानी
113.	पानी भरो छलका ?	139.	इस कुएँ पर
114.	नीम का न्याय	140.	अपने को पहचानो
115.	बिना विचारे जो करे	141.	दयालु जंगल भाग—1
116.	प्यारा भारत देश हमारा भाग—	142.	दयालु जंगल भाग—2
		143.	मुहावरे भाग—2
117.	ध्वनि क्या है ?	144.	वक्त का सच्चा साथी भाग—1
118.	हवा स्थान घेरती हैं	145.	वक्त का सच्चा साथी भाग—2
119.	हवा का फैलना और सिकुड़ना	146.	मैं भूल जाऊँगी 'अम्मा का झूला' भाग—1
120.	घर की कहानी		
121.	सुई का अविष्कार	147.	मैं भूल जाऊँगी 'अम्मा का झूला' भाग—2
122.	सामान्य ज्ञान भाग—1		
123.	सामान्य ज्ञान भाग—2	148.	आत्म निर्भरता भाग—2
124.	सामान्य ज्ञान भाग—3	149.	गुल्लक
125.	सामान्य ज्ञान भाग—4	150.	दीवार गिरी
126.	सामान्य ज्ञान भाग—5	151.	शब्दों का खेल भाग—4
127.	सामान्य ज्ञान भाग—1	152.	शब्दों का खेल भाग—5
127.	संचयिका	153.	शब्दों का खेल भाग—6
129.	"हमारे राष्ट्रीय प्रतीक" श्रृंखला के अन्तर्गतहमारा राष्ट्रगान	154.	शब्दों का खेल भाग—7
		155.	शब्दों का खेल भाग—8

●●

वर्ष 1989–90

क्रम सं०	कार्यक्रम का नाम	क्रम सं०	कार्यक्रम का नाम
1	2	1	2
1.	सेवाकार्य	24.	विज्ञान के खेल भाग—2
2.	विज्ञान किट	25.	विज्ञान के खेल भाग—3
3.	गणित किट	26.	ताज महल
4.	लघु औजार किट	27.	आगरे का लाल किला
5.	सोचो, समझो और बताओ भाग—1	28.	हवा दाब डालती है
		29.	सहिष्णुता
6.	सोचो, समझो और बताओ भाग—2	30.	दूध का दूध
		31.	हमारे डाक टिकट भाग—2
7.	सोचो, समझो और बताओ भाग—3	32.	दशमलव
		33.	समतल दर्पण
8.	रानी दुर्गावती	34.	शिक्षण में सहायक सामग्री
9.	विद्युत घंटी	35.	वर्तनी
10.	क्यों और कैसे ?	36.	हमारी आँख
11.	कुछ सुनें-कुछ कहें	37.	स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भाग—1
12.	हमारे सहयोगी "अध्यापक"	38.	स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भाग— 2
13.	शारीरिक संरचना	39.	नर्स
14.	पीलिया	40.	दूध वाला
15.	साइकिल की कहानी	41.	लोहार
16.	मुद्राएँ	42.	हमारे मददगार (पुलिस)
17.	वक्त का सच्चा साथी	43.	दशमलव जोड़
18.	चिकित्सक	44.	शिष्टाचार
19.	बहुउद्देशीय पंप	45.	उदारता
20.	स्काउटिंग	46.	सद्भाव
21.	हमारा सहयोगी "मछुआरा"	47.	सरल जोड़ घटाना
22.	पारस्परिक सहयोग	48.	अंक
23.	विज्ञान के खेल भाग—1	49.	काष्ठकार

1	2	1	2
50.	हमारा शरीर	60.	जिज्ञासा भाग—8
51.	रक्त की कहानी	96	जिज्ञासा भाग—9
52.	हमारा गणतंत्र दिवस	62.	भारत की नृत्य शैलियाँ भाग—1
53.	जिज्ञासा भाग—1	63.	भारत की नृत्य शैलियाँ भाग—2
54.	जिज्ञासा भाग—2	64.	रेजीडेन्सी
55.	जिज्ञासा भाग—3	65.	जल यातायात
56.	जिज्ञासा भाग—4	66.	वायु यातायात
57.	जिज्ञासा भाग—5	67.	मुद्रण माध्यम द्वारा संचार
58.	जिज्ञासा भाग—6	68.	विज्ञान किट से प्रयोग
51.	जिज्ञासा भाग—7	69.	नपना गिलास

श्रव्य-दृश्य और शिक्षा प्रसार विभाग, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

सृजन-संकल्प :

प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में समाज शिक्षा एवं साक्षरता कार्यक्रम को संचालित करने के लिए शिक्षा प्रसार विभाग की स्थापना की गयी थी। विभाग ने 15 जनवरी 1939 से तत्कालीन प्रथम शिक्षा प्रसार अधिकारी राय बहादुर पं० श्री नारायण चतुर्वेदी के निर्देशन में कार्य करना प्रारम्भ किया।

उद्देश्य :

1. समाज शिक्षा और साक्षरता कार्यक्रम सम्पन्न करना।
2. शिक्षा के प्रति ग्रामीण जनता में जन-जागरण उत्पन्न करना।

प्रवाह :

विभाग द्वारा सर्वप्रथम जेलों के निरक्षर कैदियों को साक्षर बनाने के लिए प्रदेश में 100 केन्द्रों का संचालन किया गया। इन केन्द्रों में लगभग 20,000 लोगों को साक्षर बनाया गया।

1956—57 में केन्द्रीय प्रौढ़ शिक्षा समिति तथा प्रादेशिक स्तर पर गठित सिद्धांत समिति की संस्तुतियों के आधार पर समाज शिक्षा कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गयी, जिसे निम्नांकित कार्यक्रमों के आधार पर स्वीकार किया गया :—

1. निरक्षरों की साक्षरता
2. समाज के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने हेतु शैक्षिक कार्यक्रम
3. रूढ़िवादिता का उन्मूलन
4. स्वास्थ्य रक्षा
5. नैतिकता एवं राष्ट्रीयता की शिक्षा
6. नवीनतम ज्ञान का आलोक जन-जन तक पहुँचाना
7. समाजोत्थान की दृष्टि से उपयोगी कार्यक्रम सम्पन्न करना
8. समसामयिक एवं आधुनिकतम सूचनाओं का प्रेषण
9. ग्रामीण समस्याओं का ज्ञान, निदान एवं उपचार
10. महापुरुषों के जीवन आदर्शों को ग्रहण करने हेतु उत्प्रेरण

संवर्द्धन और विकास :

उपर्युक्त आदर्शों को कार्यान्वित करने तथा समाज शिक्षा कार्यक्रम को नयी दिशा देने के उद्देश्य से 1955—56 में चार सचल दलों (1) गोष्ठी सचल दल (2) साक्षरता सचल दल, (3) पुस्तकालय सचल दल, (4) प्रदर्शनी सचल दल की स्थापना की गयी। इन सचल दलों के द्वारा प्रदेश के ग्रामीण अंचलों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु विविध प्रकार के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। गोष्ठी दलों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर सभी वर्ग के प्रौढ़ों को एकत्रित करके समाजोपयोगी विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन तथा उसके माध्यम से कृषि, स्वास्थ्य रक्षा, नैतिकता, राष्ट्रीयता, भावनात्मक एकता, छुआछूत उन्मूलन, दहेज, बाल-विवाह, मद्यपान, अल्पबचत, बैंक ऋण, कृषि औजार, उन्नत बीज तथा समय-समय पर राष्ट्र द्वारा की गयी घोषणाओं एवं सुविधाओं की जानकारी दी जाती है तथा साक्षरता हेतु पृष्ठभूमि तैयार की जाती है।

सचल साक्षरता दल उत्प्रेरण कार्यक्रमों का आयोजन तथा साक्षरता केन्द्रों की स्थापना करके 5 माह की अवधि में लोगों को साक्षर बनाने का कार्य करता है। इन केन्द्रों पर (1) कक्षा 3 तक का भाषा ज्ञान, (2) 1 से 100 तक की संख्या का ज्ञान, (3) दो अंकों की संख्या का गुणा, भाग, जोड़ना, घटाना, (4) दस तक पहाड़ों का ज्ञान कराया जाता है। शिक्षण को रोचक एवं प्रभावी बनाने हेतु खेल-कूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा चलचित्रों का प्रदर्शन भी किया जाता है।

सचल पुस्तकालय दल नवसाक्षरों की साक्षरता को स्थिर रखने के लिए अनुवर्ती कार्यक्रम (A Follow up programme) के अन्तर्गत पुस्तकालय एवं वाचनालय शिविरों के माध्यम से ग्रामीणों के ज्ञान में अभिवृद्धि तथा जनजागरण के कार्यक्रम संचालित करता है, विभिन्न विषयों यथा कृषि साक्षरता, स्वास्थ्य रक्षा, अन्धविश्वास, दहेज, बाल-विवाह, छुआछूत पर वार्तायें भी आयोजित की जाती हैं। शैक्षिक चलचित्रों के माध्यम से ग्रामीणों का ज्ञानवर्द्धन किया जाता है।

सचल प्रदर्शनी दल शैक्षिक प्रदर्शनी का आयोजन करके ग्रामीणों के सामान्य ज्ञान में अभिवृद्धि करता है। इन चारों सचल दलों द्वारा कार्यक्रमों को रोचक, सुग्राह्य प्रभावी एवं आकर्षक बनाने हेतु निम्नलिखित सामग्रियों/प्रपत्रों द्वारा ग्रामीणों का ज्ञानवर्द्धन एवं सुसंस्कृत बनाने का प्रयास किया जाता है :—

1. साक्षरों हेतु विभिन्न विषयों पर साहित्य निर्माण
2. नवसाक्षरों हेतु साहित्य
3. विभिन्न समसामयिक पत्र-पत्रिकाएँ
4. पोस्टर, चार्ट, मानचित्र, प्रख्यात वैज्ञानिकों एवं महापुरुषों के चित्र
5. श्रव्य-दृश्य उपकरण द्वारा प्रदर्शन
6. सामयिक उपयोगिता के विषयों पर वार्ता, गोष्ठी
7. नवीन प्रशासनिक व्यवस्था का प्रचार-उपलब्ध सुविधायें एवं जानकारी

श्रव्य-दृश्य और शिक्षा प्रसार विभाग, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

सृजन-संकल्प :

प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में समाज शिक्षा एवं साक्षरता कार्यक्रम को संचालित करने के लिए शिक्षा प्रसार विभाग की स्थापना की गयी थी। विभाग ने 15 जनवरी 1939 से तत्कालीन प्रथम शिक्षा प्रसार अधिकारी राय बहादुर पं० श्री नारायण चतुर्वेदी के निर्देशन में कार्य करना प्रारम्भ किया।

उद्देश्य :

1. समाज शिक्षा और साक्षरता कार्यक्रम सम्पन्न करना।
2. शिक्षा के प्रति ग्रामीण जनता में जन-जागरण उत्पन्न करना।

प्रवाह :

विभाग द्वारा सर्वप्रथम जेलों के निरक्षर कैदियों को साक्षर बनाने के लिए प्रदेश में 100 केन्द्रों का संचालन किया गया। इन केन्द्रों में लगभग 20,000 लोगों को साक्षर बनाया गया।

1956—57 में केन्द्रीय प्रौढ़ शिक्षा समिति तथा प्रादेशिक स्तर पर गठित सिद्धांत समिति की संस्तुतियों के आधार पर समाज शिक्षा कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गयी, जिसे निम्नांकित कार्यक्रमों के आधार पर स्वीकार किया गया :—

1. निरक्षरों की साक्षरता
2. समाज के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने हेतु शैक्षिक कार्यक्रम
3. रूढ़िवादिता का उन्मूलन
4. स्वास्थ्य रक्षा
5. नैतिकता एवं राष्ट्रीयता की शिक्षा
6. नवीनतम ज्ञान का आलोक जन-जन तक पहुँचाना
7. समाजोत्थान की दृष्टि से उपयोगी कार्यक्रम सम्पन्न करना
8. समसामयिक एवं आधुनिकतम सूचनाओं का प्रेषण
9. ग्रामीण समस्याओं का ज्ञान, निदान एवं उपचार
10. महापुरुषों के जीवन आदर्शों को ग्रहण करने हेतु उत्प्रेरण

संवर्द्धन और विकास :

उपर्युक्त आदर्शों को कार्यान्वित करने तथा समाज शिक्षा कार्यक्रम को नयी दिशा देने के उद्देश्य से 1955—56 में चार सचल दलों (1) गोष्ठी सचल दल (2) साक्षरता सचल दल, (3) पुस्तकालय सचल दल, (4) प्रदर्शनी सचल दल की स्थापना की गयी। इन सचल दलों के द्वारा प्रदेश के ग्रामीण अंचलों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु विविध प्रकार के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। गोष्ठी दलों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर सभी वर्ग के प्रौढ़ों को एकत्रित करके समाजोपयोगी विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन तथा उसके माध्यम से कृषि, स्वास्थ्य रक्षा, नैतिकता, राष्ट्रीयता, भावनात्मक एकता, छुआछूत उन्मूलन, दहेज, बाल-विवाह, मद्यपान, अल्पबचत, बैंक ऋण, कृषि औजार, उन्नत बीज तथा समय-समय पर राष्ट्र द्वारा की गयी घोषणाओं एवं सुविधाओं की जानकारी दी जाती है तथा साक्षरता हेतु पृष्ठभूमि तैयार की जाती है।

सचल साक्षरता दल उत्प्रेरण कार्यक्रमों का आयोजन तथा साक्षरता केन्द्रों की स्थापना करके 5 माह की अवधि में लोगों को साक्षर बनाने का कार्य करता है। इन केन्द्रों पर (1) कक्षा 3 तक का भाषा ज्ञान, (2) 1 से 100 तक की संख्या का ज्ञान, (3) दो अंकों की संख्या का गुणा, भाग, जोड़ना, घटाना, (4) दस तक पहाड़ों का ज्ञान कराया जाता है। शिक्षण को रोचक एवं प्रभावी बनाने हेतु खेल-कूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा चलचित्रों का प्रदर्शन भी किया जाता है।

सचल पुस्तकालय दल नवसाक्षरों की साक्षरता को स्थिर रखने के लिए अनुवर्ती कार्यक्रम(A Follow up programme) के अन्तर्गत पुस्तकालय एवं वाचनालय शिविरों के माध्यम से ग्रामीणों के ज्ञान में अभिवृद्धि तथा जनजागरण के कार्यक्रम संचालित करता है, विभिन्न विषयों यथा कृषि साक्षरता, स्वास्थ्य रक्षा, अन्धविश्वास, दहेज, बाल-विवाह, छुआ-छूत पर वार्तायें भी आयोजित की जाती है। शैक्षिक चलचित्रों के माध्यम से ग्रामीणों का ज्ञानवर्द्धन किया जाता है।

सचल प्रदर्शनी दल शैक्षिक प्रदर्शनी का आयोजन करके ग्रामीणों के सामान्य ज्ञान में अभिवृद्धि करता है। इन चारों सचल दलों द्वारा कार्यक्रमों को रोचक, सुग्राह्य प्रभावी एवं आकर्षक बनाने हेतु निम्नलिखित सामग्रियों/प्रयासों द्वारा ग्रामीणों का ज्ञानवर्द्धन एवं सुसंस्कृत बनाने का प्रयास किया जाता है :—

1. प्रौढ़ों हेतु विभिन्न विषयों पर साहित्य निर्माण
2. नवसाक्षरों हेतु साहित्य
3. विभिन्न समसामयिक पत्र-पत्रिकाएँ
4. पोस्टर, चार्ट, माडल, प्रख्यात वैज्ञानिकों एवं महापुरुषों के चित्र
5. चलचित्र उपकरण द्वारा प्रदर्शन
6. सामाजिक उपयोगिता के विषयों पर वार्ता, गोष्ठी
7. नवीन प्रशासनिक व्यवस्था का प्रचार-उपलब्ध सुविधायें एवं जानकारी

इन चार सचल दलों के अतिरिक्त प्रचार अधिकारी संचार-वाहनों की सहायता से ग्रामीण अंचलों में जाकर शिक्षा के क्षेत्र में साधारण जन-जागरण का प्रचार कार्य सम्पादित करते हैं।

उपलब्धियाँ :

प्रतिवर्ष लगभग 200 ग्रामों में समाज शिक्षा के विविध कार्यक्रमों द्वारा प्रारम्भ से अब तक लगभग 8000 ग्रामों तथा माघ मेला, कुम्भ मेला, इलाहाबाद तथा अन्य मेलों एवं राज्य स्तरीय तथा राष्ट्रीय प्रदर्शनियों के माध्यम से लगभग 3 करोड़ व्यक्तियों को लाभान्वित किया जा चुका है।

श्रव्य-दृश्य और शिक्षा प्रसार विभाग के अन्तर्गत कार्यरत विभिन्न अनुभागों के क्रियाकलाप संक्षेप में निम्नवत् है :

चलचित्र उत्पादन इकाई :

साक्षरता कार्यक्रमों को और अधिक सफल एवं प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से 1950—51 में चलचित्र उत्पादन इकाई की स्थापना के फलस्वरूप इस इकाई द्वारा शैक्षिक चलचित्रों का निर्माण किया जा रहा है। निर्माण की सारी प्रक्रियायें, शूटिंग से लेकर प्रोसेसिंग तक, विभाग में ही पूरी की जाती है। सामान्य ज्ञान, शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, विज्ञान, ग्रामीण उद्योग-धन्धे, अन्धविश्वास तथा सम-सामयिक विषयों से सम्बन्धित लघु फिल्मों का निर्माण इस इकाई द्वारा किया गया है। अब तक कुल 130 + 28 = 158 चलचित्रों का निर्माण किया जा चुका है। इनमें से कुछ प्रमुख फिल्मों के नाम निम्नलिखित हैं :—

1—फिल्मों के नाम	अवधि
1. ग्रामीण कला और धन्धे	10 मिनट
2. बनारसी बाग	11 मिनट
3. उत्तर प्रदेश के प्रमुख तीर्थ स्थल	10 मिनट
4. महाकुम्भ 1954	10 मिनट
5. उत्तर प्रदेश के लोक नृत्य	10 मिनट
6. शिक्षा की नयी किरणें	10 मिनट
7. शिक्षा में खिलौनों का महत्व	10 मिनट
8. हमारा नया स्कूल	8 मिनट
9. ग्रह विज्ञान शिक्षा	10 मिनट
10. हमारे नये सिक्के	10 मिनट
11. उत्तर प्रदेश के मेले	10 मिनट
12. प्रयाग	10 मिनट
13. लखनऊ	10 मिनट
14. वाराणसी	20 मिनट
15. बाल रामायण	80 मिनट

16. सीमा के सन्तरी	10 मिनट
17. शिक्षा और सुरक्षा	10 मिनट
18. शिक्षा के नये कार्यक्रम	40 मिनट
19. सबेरा	60 मिनट
20. विज्ञान आओ करके सीखें	10 मिनट
21. विज्ञान मेला	10 मिनट
22. स्वयं शासन	10 मिनट
23. फल संरक्षण	10 मिनट
24. उत्तर प्रदेश के बौद्ध तीर्थ	10 मिनट
25. चाँद फिर निकला	20 मिनट

वर्ष 80—81 से 89—90 तक के दशक में विभाग द्वारा कुल 28 चलचित्रों का निर्माण किया गया। देश भक्ति के गीतों से सम्बन्धित आडियो कैसेट गीतमाला का निर्माण भी विभाग द्वारा किया गया।

प्रदेश स्तरीय चलचित्रालय :

विभाग द्वारा निर्मित चलचित्र के अनुरक्षण एवं शिक्षण में उनके उपयोग हेतु उन्हें निर्गत करने के लिए प्रादेशिक चलचित्रालय की स्थापना वर्ष 1956—57 में की गयी। चलचित्रालय का कार्य फिल्मों का सूचीकरण, वर्गीकरण, परीक्षण, निर्गमन, अनुरक्षण तथा सदस्य संस्थाओं का पंजीकरण तथा, फिल्मों की वापसी करना है। चलचित्रालय में लगभग 3000 चलचित्रों तथा चित्रपट्टियों का संग्रह है। प्रतिवर्ष औसतन 1400 फिल्मों का निर्गमन विभाग द्वारा किया जाता है। निर्गमन संलग्न बार चार्ट द्वारा स्पष्ट किया गया है।

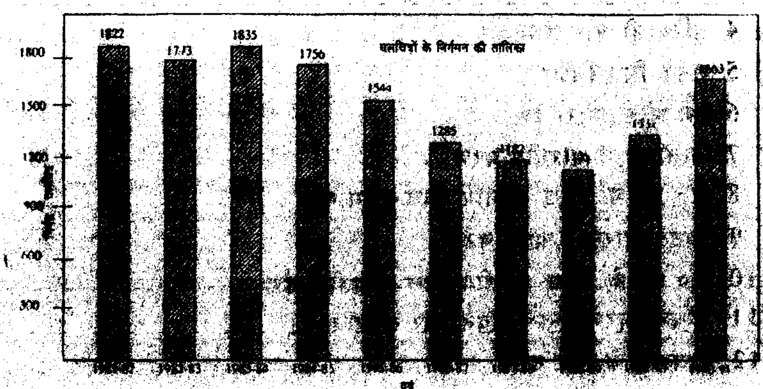

इन चलचित्रों द्वारा प्रदेश के विद्यालयों, ग्रामीण अंचलों, स्थानीय संगठनों तथा विभिन्न मेलों एवं प्रदर्शनियों के माध्यम से लोगों को लाभान्वित किया जाता है।

साहित्य सृजन :

नव साक्षरोपयोगी साहित्य के सृजन एवं प्रकाशन के लिए वर्ष 1956—57 में प्रकाशन अनुभाग की स्थापना की गयी। प्रकाशन अनुभाग द्वारा प्रारम्भ में दीपक पत्रिका तथा बाद में इसे नव ज्योति मासिक पत्रिका के नाम से प्रकाशित किया जाने लगा। नव ज्योति मासिक पत्रिका में सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों से सम्बन्धित शिक्षा प्रदान करने वाले लेख, कविताएँ, रोचक प्रसंग, आदि प्रकाशित किये जाते हैं, जैसे महापुरुषों के जीवन आदर्शों पर प्रेरक प्रसंग, कृषि, स्वास्थ्य रक्षा, दहेज उन्मूलन, वैज्ञानिक प्रगति-जानकारी, साधारण जन-जागरण सम्बन्धित लेख तथा कविताएँ। उपयोजना संख्या 48 के अन्तर्गत चार नवसाक्षारोपयोगी पुस्तकों का लेखन एवं प्रकाशन विभाग द्वारा किया जाता है। समाजोपयोगी सांस्कृतिक विषयों पर सरल एवं रोचक भाषा में पुस्तकें लिखी जाती है। निम्नलिखित तालिका द्वारा प्रकाशन सम्बन्धी साहित्य को दर्शाया जा सकता है :—

क्रमांक	वर्ष	नाम	संख्या	कुल प्रतियाँ
1.	1956-57 से 1980-81	नव ज्योति मासिक	288	288 × 1500
		नवसाक्षरोपयोगी पुस्तकें	96	96 × 2000
2.	1981-82 से 1990-91	नवज्योति मासिक	120	120 × 1500
		नवसाक्षरोपयोगी साहित्य	40	40 × 2000

इस दशक में प्रकाशित कुछ प्रमुख नवसाक्षरोपयोगी पुस्तकें निम्नवत् है :—

1. नया सूरज
2. हमारा स्वास्थ्य
3. स्वास्थ्य एवं पोषण
4. हरियाली और खुशहाली
5. सबके लिए शिक्षा
6. हम और हमारा देश
7. अन्तरिक्ष में भारतीय चरण
8. उ० प्र० के प्रमुख दर्शनीय स्थल-प्रथम खंड
9. स्वतंत्र भारत के बढ़ते चरण
10. उ० प्र० के प्रमुख दर्शनीय स्थल—द्वितीय खंड
11. मैथिली शरण गुप्त (जीवन और साहित्य)
12. स्वतंत्रता के चार दशक
13. जवाहर लाल नेहरू (एक प्रेरक व्यक्तित्व)
14. गुप्त जी की देश प्रेम संबंधी कविताएँ
15. हमारी लोककथाएँ भाग—1

श्रव्य-दृश्य शिक्षा प्रशिक्षण :

शिक्षण में श्रव्य-दृश्य उपादानो की विधा से शिक्षकों को परिचित कराने एवं उन्हें प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से वर्ष 1961-62 में श्रव्य-दृश्य शिक्षा प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गयी। तब से यह केन्द्र निरन्तर प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों एवं दीक्षा विद्यालयों के अध्यापकों को श्रव्य-दृश्य उपादानों के निर्माण एवं कक्षा में उनका उपयोग करने का प्रशिक्षण देता चला आ रहा है। प्रशिक्षण अवधि 56 दिनों की है परन्तु वर्तमान में इस अवधि को कतिपय विभिन्न कारणों से विभाग द्वारा 20 दिनों का कर दिया गया है। इनमें प्रक्षेपित तथा अप्रक्षेपित दोनों ही प्रकार के उपादानों के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है।

उपलब्धि :

प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना के बाद से अद्यावधि लगभग 450 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। इस दशक में प्रशिक्षित 206 अध्यापकों को संलग्न बार चार्ट में वर्षवार दर्शाया गया है।

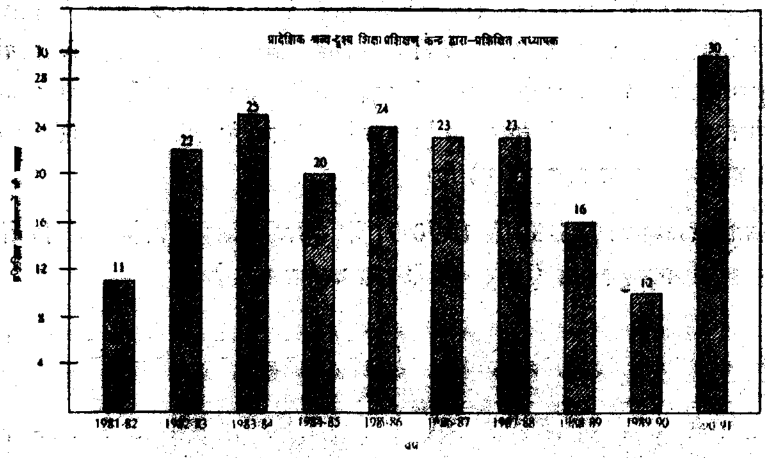

राजकीय ग्रामीण पुस्तकालय :

शिक्षा प्रसार विभाग द्वारा प्रदेश के ग्रामीण अंचलों में 1400 राजकीय पुस्तकालय संचालित हैं। इन पुस्तकालय के उद्देश्य निम्नवत् हैं :—

1. नवसाक्षरों को सामूहिक अध्ययनशाला जिससे नवसाक्षर अपनी स्मरण शक्ति को सुदृढ़ बना सकें।

2. समाजोपयोगी तथा नैतिक मूल्यों पर आधारित साहित्य उपलब्ध कराकर नव-साक्षरों में समाजोत्थान की भावना का विकास करना जिससे वे नैतिक मूल्यों का ह्रास रोकने में सहायक हो सकें।

3. दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं के बारे में जानकारी देना। कृषि, स्वास्थ्य रक्षा, खाद, बीज, कृषि रोग तथा उपचार, दहेज, मद्यपान, छुआछूत, बाल विवाह, राष्ट्र प्रेम, सत्य, अहिंसा, भावनात्मक एकता आदि विषयों पर आधारित पुस्तकों के माध्यम से जन-जागरण उत्पन्न करना।

4. प्राइमरी पाठशाला, जूनियर हाई स्कूल एवं पंचायत भवनों में ये पुस्तकालय स्थापित हैं। इन्हीं विद्यालयों के प्रधानाध्यापक/सहायक अध्यापक पुस्तकालय अध्यक्ष होते हैं। मानदेय के रूप में पांच रुपया प्रतिमाह पुरानी दर पर आज भी देय है।

प्रशासनिक परिवर्तन :

1981-82 में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की स्थापना के फलस्वरूप शिक्षा प्रसार विभाग ने परिषद् की एक इकाई के रूप में निदेशक परिषद् के निर्देशन में कार्य करना प्रारम्भ किया। राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के निदेशक के कुशल निर्देशन के फलस्वरूप इस विभाग के कार्यों की गुणवत्ता तथा तीव्रता में वृद्धि परिलक्षित हुई है।

प्रदेश के सभी जनपदों के ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में समाज शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा जनमानस में व्याप्त अज्ञान, अशिक्षा, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, दहेज प्रथा, छुआछूत, बाल-विवाह, मद्यपान एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों के समूल उन्मूलन हेतु ग्रामीणों को शिक्षित करने तथा उन्हें समाज के दायित्वों के प्रति जाग्रत करने में युद्ध स्तर पर कार्यक्रम सम्पन्न किए जा रहे हैं।

वर्तमान दशक 1981-82 से 1990-91 में समाज शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा जो उपलब्धियाँ हुई हैं उन्हें बार चार्ट के द्वारा दर्शाया गया है।

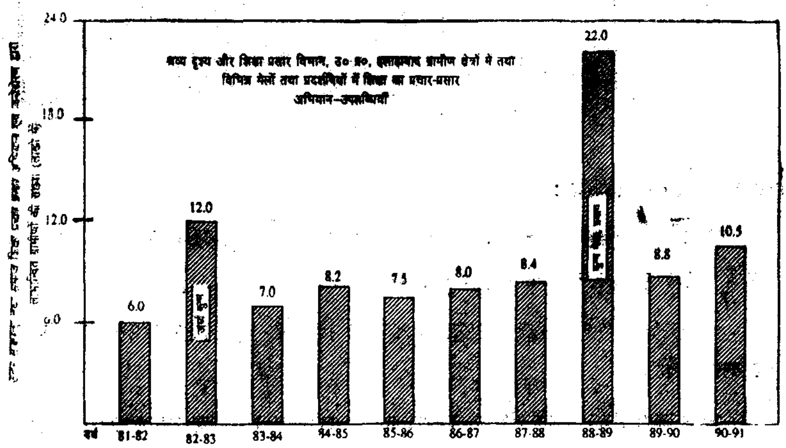

(i) साक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत इस दशक में लगभग 8000 ग्रामीणों को साक्षर किया गया।

(ii) उत्तर साक्षरता कार्यक्रम के द्वारा समाज शिक्षा के कार्यक्रमों यथा गोष्ठी, पुस्तकालय एवं चलचित्र के माध्यम से 99600 ग्रामीणों को लाभान्वित किया गया।

(iii) शिक्षा के प्रचार-प्रसार अभियान द्वारा इस दशक में जनोत्प्रेरण द्वारा 98.4 लाख ग्रामीणों एवं अन्य व्यक्तियों को लाभ पहुँचाया गया।

प्रादेशिक श्रव्य-दृश्य शिक्षा प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा वर्तमान दशक में 206 शिक्षकों को श्रव्य-दृश्य शिक्षा उपादानों के निर्माण एवं प्रयोग संबंधी प्रशिक्षण दिया गया। इस शिक्षण से लाभान्वित शिक्षकों ने अपने विद्यालयों में श्रव्य-दृश्य शिक्षा के उपादानों का प्रयोग कक्षा शिक्षण में किया।

प्रदेश स्तरीय चलचित्रालय द्वारा 15,316 चलचित्रों का निर्गमन वर्तमान दशक में किया गया। इन फिल्मों के माध्यम से स्थानीय संगठनों ग्रामीण अंचलों तथा प्रदेश के विद्यालय के छात्र-छात्राओं तथा ग्रामीणों को लाभान्वित किया गया।

चलचित्र उत्पादन इकाई द्वारा इस दशक में विभाग द्वारा 28 लघु चलचित्रों का निर्माण किया गया।

वर्तमान निदेशक श्री हरि प्रसाद पाण्डेय जी की अन्तर्दृष्टि, प्रेरणा तथा कुशल निर्देशन में विभाग को एक नयी दिशा प्राप्त हुई है। शिक्षा के नये संदर्भ में विभाग की क्रिया-शीलता में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

आडियो/रेडियो कैसेट निर्माण—उपलब्धियाँ :

निदेशक जी की ही प्रेरणास्वरूप इस वर्ष विभाग ने आडियो/रेडियो कैसेट निर्माण के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। अंग्रेजी भाषा शिक्षण संस्थान/विदेशी भाषा विभाग, इलाहाबाद के सहयोग से हाईस्कूल कक्षाओं के छात्रों के लिए आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित करने हेतु पाठ्य वस्तु पर आधारित अंग्रेजी विषय पर 30 आडियो टेपों का निर्माण मात्र पन्द्रह दिनों में पूर्ण किया गया।

निदेशक महोदय की प्रेरणा से ही राष्ट्रीय स्तर पर नए संदर्भ में शिक्षा प्रसार विभाग की भूमिका विषयक कार्यशाला 22-24 मई, 1990 को सम्पन्न की गयी। कार्यशाला का उद्घाटन परिषद के निदेशक श्री हरि प्रसाद पाण्डेय द्वारा किया गया तथा समापन मुख्य अतिथि श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल, आई० ए० एस० निदेशक गंगा परियोजना द्वारा श्री वेदपति मिश्र संयुक्त शिक्षा निदेशक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस कार्यशाला द्वारा श्रव्य-दृश्य और शिक्षा प्रसार विभाग के लिए आने वाले समय में नवीन आयामों में कार्य करने का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा तथा आने वाले वर्षों में यह विभाग अवश्य ही नए मानक स्थापित करने में सफल होगा।

शिक्षा प्रसार विभाग में परम्परागत कार्यक्रमों को नवीन दिशा प्रदान करने, नये परिवेश एवं बदलती मान्यताओं के अनुसार कार्यक्रम को नियोजित करने हेतु कई अन्य

कार्यशालाओं, परियोजनाओं, शोध अध्ययन एवं सर्वेक्षण आदि कार्यक्रमों का सफल आयोजन एवं संचालन किया गया।

1. चार दिवसीय राज्य स्तरीय आडियो/रेडियो टेप निर्माण कार्यशाला 22-25 अगस्त, 1990 को सम्पन्न की गयी।

2. अनौपचारिक शिक्षा के लिए प्रचार एवं प्रदर्शन सामग्रियों का विकास विषयक कार्यशाला 28-30 अगस्त, 1990 को आयोजित की गयी, जिसमें अनौपचारिक शिक्षा के प्रचार हेतु तथा रोचक प्रदर्शन सामग्रियों के निर्माण हेतु शीर्षकों एवं उपशीर्षकों का चयन करके प्रदर्श सामग्रियों को निश्चित किया गया।

3. अनौपचारिक शिक्षा के शिक्षण अधिगम को सुग्राह्य बनाने हेतु आडियो कार्यक्रम का निर्माण नामक कार्यशाला में शीर्षकों–उपशीर्षकों एवं पाठ्यवस्तु का चयन किया गया।

4. जून 1990 में आकाशवाणी प्रसारण हेतु 30 आडियो टेपों का निर्माण किया गया और जिनका प्रसारण आकाशवाणी लखनऊ द्वारा किया जा रहा है।

5. शोध/अध्ययन एवं सर्वेक्षण के अन्तर्गत शैक्षिक रेडियो कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन संबंधी शोधकार्य सम्पन्न किया गया।

समग्रसाक्षरता :

6. जनपद फतेहपुर के समग्र साक्षरता अभियान में शिक्षा प्रसार विभाग के समाज शिक्षा के चार प्रचार वाहनों द्वारा ग्रामीणों के उत्प्रेरण एवं प्रचार-प्रसार के कार्यों में पूर्ण सहभागिता की जा रही है। शत-प्रतिशत साक्षरता को प्राप्त करने हेतु साक्षरता संबंधी पाठ्यक्रय निर्णाण में भी विभाग ने अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया है।

7. 6—11 वय वर्ग के छात्रों हेतु विभिन्न सामाजिक विषयों पर आडियो/रेडियो कैसेट निर्माण का कार्य परियोजना के अन्तर्गत किया जाएगा।

8. कक्षा 8 तथा 9 के विज्ञान विषय पर दो चलचित्र निर्माण हेतु विषय का चयन एवं आलेख लेखन कार्यशाला का आयोजन माह नवम्बर में सम्पन्न किया गया। यूनीसेफ तथा एन० सी० ई० आर० टी० दिल्ली की पूर्व प्राथमिक परियोजना के अन्तर्गत 12 गीतों का कार्यक्रम संगीतिक ध्वनि के साथ ध्वनि अंकन किया गया और उक्त 12 गीतों के 100 कैसेट तैयार किये गये।

———

सम्मतियाँ

I have been more impressed by what I saw this evening, not only were the films of a very high quality, both technically and educationaly, but the facalities available for such production are equally impressive. The most remarkable feature is the band of eager competent personnel who show keennes and dedication in their work.

Best of Success in the future.

Sd. Awp. Gurge
dt. 5th Sept. 1974
Unesco Regional Officer
Bangkok—THAILAND.

I was very happy to visit the education depot., U. P. which produces educational films for screening in educational Institution. I was much impressed by the efficiency and the devotion of the workers here.

I extend best wishes and greetings to this organisation and to its staff.

19th Feb., 86 — Sd. S. Raj Chowdhri
Directort SCERT, West Bengal.

श्रव्य-दृश्य शिक्षा के प्रक्षेप उपादान नामक पुस्तक को पढ़ा। यह विभाग हेतु बहुत ही उपयोगी है। यह इनका बड़ा एवं बहुत ही प्रशंसनीय कार्य है। संस्थाओं के लिए और फिल्म प्रभाग के प्रचार विभाग तथा अन्य सम्बन्धित संस्थाओं के लिए यह पुस्तक बहुत ही [illegible] एवं उपयोगी है।

ह० अपठनीय
11-7-86
फील्ड पब्लिसिटी आफीसर
डाइरेक्टरेट आफ फील्ड पब्लिसिटी
मिनिस्ट्री आफ इनफरमेशन एण्ड
ब्राडकास्टिंग, गवर्नमेंट आफ इण्डिया
इलाहाबाद, यू० पी०

I was very happy to visit the education expansion office Alld. today. I am impressed with the useful work being done by this Institution. The dedication with which the costly equipment kept here, has been maintained by the staff is noteworthy. I wish all success and more glory to this Institution and its member of the staff.

Sd. K. N. Prasad
27/12/86
Jt. Secretary of Education

1. अनौपचारिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार कार्य में श्रव्य-दृश्य विभाग को जोड़कर एक महत्वपूर्ण कमी को पूरा करने का प्रयास किया गया है जो स्तुत्य है, जिस लगन से यहाँ के अधिकारी और कर्मचारी इस कार्य में प्रवृत्त हुए है वह शुभ सूचक है। साधन सम्पन्न और प्रतिभा सम्पन्न इस विभाग द्वारा शिक्षा के सार्वजनीकरण में योगदान का स्वागत है।

ह० रामसूरत लाल
अ० प्रा० वरिष्ठ शोध अधिकारी
30-8-90

2. अनौपचारिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार और प्रदर्शन सामग्री विकसित करने के लिए आयोजित कार्यशाला शिक्षा प्रसार विभाग के समयागत कार्य में एक नयी कड़ी जोड़ता है' जनमानस और शिक्षार्थियों तक अनौपचारिक शिक्षा की भावना एवं कृतित्व को पहुँचने में दृश्य-श्रव्य सामग्री की भूमिका निर्विवाद है जिसे इस कार्यशाला में विकसित करने का अथक परिश्रम किया गया। प्रतिभागियों का कार्य सराहनीय रहा।

इस प्रकार के सामग्री विकास के कार्य अविरल चलते रहें, तो श्रेयस्कर होगा।

ह० रघुनन्दन सिंह
भूतपूर्व निदेशक प्रौढ़ शिक्षा
उत्तर प्रदेश

शिक्षा प्रसार विभाग, इलाहाबाद शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश का एक प्रतिष्ठापूर्ण संस्थान है। शिक्षा प्रसार अधिकारी की अवधि के दो उल्लेखनीय संस्मरणों की चर्चा मैं यहाँ पर करना चाहूँगा। कदाचित 1959-60 की बात है। यह विभाग सूचना विभाग उत्तर प्रदेश में जाने को था। उस समय पं० कमला पति त्रिपाठी शिक्षा एवं सूचना मंत्री थे। अंतिम निर्णय के पूर्व वे इस विभाग को देख लेना चाहते थे। माननीय मंत्री जी वे पूरे विभाग की गतिविधियों को निकट से देखा। वे इस बात से आश्वस्त थे कि इस विभाग के कार्यकलाप शिक्षा प्रधान है, अतः पलड़ा शिक्षा विभाग की ओर ही रहा और विभाग शिक्षा विभाग में ही रहने दिया गया।

दूसरा संस्मरण यह है कि इलाहाबाद में एक अखिल भारतीय बेसिक शिक्षा कान्फ्रेंस हुई। उसमें देश के चोटी के शिक्षाविद्, शैक्षिक प्रशासक एवं शिक्षा मंत्रीगण पधारे। उद्घाटन तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री माननीय कालू लाल जी श्रीमाली ने किया। माननीय शिक्षा मन्त्री उसी दिन दिल्ली जाते हुए अपराह्न में थोड़ा सा समय निकाल कर इस विभाग में भी पधारे। संक्षेप में सब देखा। यहाँ की निर्मित दो शैक्षिक फिल्में भी देखीं। सायंकाल जब कान्फ्रेंस के अन्य समस्त मूर्धन्य प्रतिभागी भी इस विभाग को देखने पधारे तो मुझे तत्कालीन उप शिक्षा मन्त्री, उत्तर प्रदेश ने बधाई देते हुए कहा कि श्रीमाली इस विभाग के कार्य-कलापों एवं उसकी द्रुत गति एवं दक्षता की सराहना करते हुए गए हैं। केन्द्रीय स्तर का यह तटस्थ मूल्यांकन डा० के० एल० श्रीमाली जैसे प्रसिद्ध शिक्षाविद् द्वारा निश्चय ही शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश तथा शिक्षा प्रसार विभाग के लिए बड़े ही गर्व एवं गौरव की बात थी।

शिक्षा प्रसार विभाग आरम्भ से ही प्रौढ़ शिक्षा एवं साक्षरता के क्षेत्र में ठोस तथा व्यावहारिक अवधारणाओं को लेकर चलने वाली एक प्रगतिशील संस्था रही है। यह ऐसे आधुनिक श्रव्य-दृश्य उपादानों से भी सज्जित है जो ग्रामीण अंचलों के लिए विशेष रूप से आकर्षण के माध्यम हैं।

विगत 50 वर्षों के अपने रचनात्मक अनुभवों तथा समृद्ध परम्पराओं से युक्त यह विभाग राष्ट्र के प्रौढ़ शिक्षा एवं साक्षरता के आज के व्यापक अभियान में अपनी सक्रिय भूमिका निभाता हुआ शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश की प्रतिष्ठा का शिखर संस्थान बनकर प्रदेश की सार्थक सेवाएँ करता रहे।

आगरा : ए-46, आलोक नगर
182010/21-9-90

हस्ताक्षर
द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी
भूतपूर्व शिक्षा प्रसार अधिकारी
उत्तर प्रदेश

आशा एवं आकांक्षा :

हमारी यह आकांक्षा है कि श्रव्य-दृश्य और शिक्षा प्रसार विभाग समाज शिक्षा एवं श्रव्य-दृश्य शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से जन-जागरण के द्वारा समाज एवं संपूर्ण राष्ट्र के विकास में अपने अतुलनीय योगदान के साथ ही साथ अपने राष्ट्र को विश्व के विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा करने का सौभाग्य प्राप्त करें।

शिवराम सिंह
शिक्षा प्रसार अधिकारी, उत्तर प्रदेश
इलाहाबाद

● ●

शिक्षा प्रसार विभाग में कार्यरत शिक्षा प्रसार अधिकारियों की सूची

क्रम सं०	नाम	वर्ष
1.	राय बहादुर पं० श्री नारायण चतुर्वेदी	1939—1944
2.	राय बहादुर श्री चुन्नी लाल सहानी	1944—1945
3.	श्री ए० के० सन्याल	1945—1946
4.	खान बहादुर श्री अब्दुल्लाह् काजमी	1946—1949
5.	श्री राम चन्द्र पाण्डेय	1949—1949
6.	श्री ब्रह्म स्वरूप सक्सेना	1949—1956
7.	श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी	1956—1961
8.	श्री भोलानाथ खन्ना	1961– 1962
9.	श्री शिवदत्त त्रिवेदी	1962—1965
10	श्री महेश्वर दयाल शर्मा	1965—1967
11.	श्री लक्ष्मी कान्त	1967 1967
12.	श्री ब्रजभूषण लाल शर्मा	1968—1968
13.	श्री देवदत्त भार्गव	1968—1972
14.	श्री एस० पी० एस० चौहान	1972—1973
15.	श्री अम्बिका दत्त दुबे	1973—1974
16.	श्री प्रकाश चन्द्र श्रीवास्तव	1974...1975
17.	श्री वृज कृष्ण खन्ना	1976—1979
18.	श्री मोहन चन्द्र बहुगुणा	1979—1984
19.	श्री राम अचल शुक्ल	1984—1985
20.	श्री गुरुदत्त श्रीवास्तव	1985—1987
21.	श्री हरीराम पंड्या	1987—1988
22.	श्री मोहन लाल बाबुलकर	1988—1989
23.	श्री शिवराम सिंह्	1990 से कार्यरत

श्रव्य दृश्य और शिक्षा प्रसार विभाग में उपलब्ध मानवीय संसाधन

क्रम सं०	पद नाम	पदों की संख्या	कार्यरत कर्मियों की संख्या	वि० वि०
1.	शिक्षा प्रसार अधिकारी	1	1	प्रशासनिक
2.	निदेशक चलचित्र उत्पादन	1		”
3.	सहायक शिक्षा प्रसार अधिकारी	1	1	”
	श्रव्य दृश्य शिक्षा प्रशिक्षण :			
4.	प्रवक्ता श्रव्य दृश्य शिक्षा	1	1	
5.	श्रव्य दृश्य अन्वेषण अधिकारी	1		
6.	तकनीकी सहायक	1	1	
	प्रादेशिक चल चित्रालय :			
7.	फिल्म लाइब्रेरियन	1	1	
8.	फिल्म चेकर	1	1	
	चलचित्र उत्पादन केन्द्र :			
9.	इंचार्ज फिल्म सेक्शन	1	1	
10.	भाष्य लेखक	1	1	
11.	ध्वनि अभियंता	1	1	
12.	फिल्म एडीटर	1	1	
13.	कैमरामैन	1	1	
14.	जूनियर कैमरामैन	1	1	
15.	फिल्म प्रिंटर	1	1	
16.	वितरण अधिकारी	1	1	

1	2	3	4	5
17.	लैब इंचार्ज	1	1	
18.	कलाकार	1	1	
19.	सहायक ध्वनि अभियंता	1	1	
20.	सहायक कैमरामैन	1	1	
21.	चीफ आपरेटर	1	1	
22.	मशीन आपरेटर	1	1	
23.	विद्युत पर्यवेक्षक	1	1	
	समाज शिक्षा :			
24.	मुख्य निर्देशक	4	4	
25.	प्रचार अधिकारी	4	1	
26.	निर्देशक	8	7	
27.	समाज शिक्षा निरीक्षक	1	1	
28.	कलाकार	1	1	
29.	आपरेटर	5	3	
	प्रकाशन अनुभाग :			
30.	पत्रकार	1	1	
31.	लेखक	1	1	
32.	प्रूफरीडर	1	1	
	कार्यालय :			
33.	वरिष्ठ सहायक (प्र० लि०)	1		
34.	वरिष्ठ सहायक	2	2	
35.	आशुलिपिक	1	1	
36.	वरिष्ठ लिपिक	10	10	
37.	कनिष्ठ लिपिक	1	1	
38.	दफ्तरी	1	1	

1	2	3	4	5
	अन्य स्टाफ :			
39.	वाहन चालक	14	10	दो वाहन अप्रयोज्य होने की कार्यवाही के अंतर्गत हैं।
40.	चतुर्थवर्गीय कर्मचारी	32	27	वाहनों के न होने से स्टाफ कम रखा गया है।
	कुल योग—	112	93	

●●

1	2	3	4	5
17.	लैब इंचार्ज	1	1	
18.	कलाकार	1	1	
19.	सहायक ध्वनि अभियंता	1	1	
20.	सहायक कैमरामैन	1	1	
21.	चीफ आपरेटर	1	1	
22.	मशीन आपरेटर	1	1	
23.	विद्युत पर्यवेक्षक	1	1	
	समाज शिक्षा :			
24.	मुख्य निर्देशक	4	4	
25.	प्रचार अधिकारी	4	1	
26.	निर्देशक	8	7	
27.	समाज शिक्षा निरीक्षक	1	1	
28.	कलाकार	1	1	
29.	आपरेटर	5	3	
	प्रकाशन अनुभाग :			
30.	पत्रकार	1	1	
31.	लेखक	1	1	
32.	प्रूफरीडर	1	1	
	कार्यालय :			
33.	वरिष्ठ सहायक (प्र० लि०)	1		
34.	वरिष्ठ सहायक	2	2	
35.	आशुलिपिक	1	1	
36.	वरिष्ठ लिपिक	10	10	
37.	कनिष्ठ लिपिक	1	1	
38.	दफ्तरी	1	1	

1	2	3	4	5
	अन्य स्टाफ :			
39.	वाहन चालक	14	10	दो वाहन अप्रयोज्य होने की कार्यवाही के अंतर्गत हैं ।
40.	चतुर्थवर्गीय कर्मचारी	32	27	वाहनों के न होने से स्टाफ कम रखा गया है ।
	कुल योग—	112	93	

हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा विभाग

(राज्य हिन्दी संस्थान, वाराणसी)

पृष्ठभूमि :

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा का गौरवपूर्ण पद प्राप्त हुआ। उत्तर प्रदेश, मध्य-प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, बिहार, हिमाचल प्रदेश तथा केन्द्र शासित दिल्ली के लिए हिन्दी प्रादेशिक भाषा (स्टेट लैंग्वेज) का काम करती है। पंजाब, महाराष्ट्र तथा गुजरात में उनकी प्रान्तीय भाषाओं (पंजाबी, मराठी तथा गुजराती) के साथ हिन्दी सहभाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। हिन्दी भाषी समस्त प्रान्तों की मातृभाषा होने के कारण वह प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक की शिक्षा का माध्यम भी है। इस प्रकार प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था में हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान तो है ही, भारतीय संघ की राजभाषा और राष्ट्र-भाषा होने के कारण अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी उसका विशेष दायित्व है। इस महत्वपूर्ण दायित्व के सम्यक निर्वाह हेतु हिन्दी भाषा एवं साहित्य को समर्थ, सुदृढ़ और व्यापक बनाने की दिशा में केन्द्रीय तथा प्रदेशीय शासन आरम्भ से ही कृतप्रयत्न रहा है। विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण स्तरोन्नयन तथा शिक्षण-प्रशिक्षण सम्बन्धी विविध समस्याओं के समाधान के लिए, साहित्य-सृजन एवं प्रकाशन-प्रशिक्षण हेतु प्रदेश द्वारा कई हिन्दी सेवी संस्थाओं की स्थापना की गयी है। इन संस्थाओं में "राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी" का एक विशिष्ट स्थान है।

प्रदेश के शिक्षा विभाग में यह अपने ढंग की एक मात्र संस्था है, जो प्रारम्भिक स्तर से माध्यमिक स्तर तक के हिन्दी-शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों की हिन्दी-शिक्षण विषयक समस्याओं के समाधान के लिए सतत जागरूक है।

स्थापना :

राज्य हिन्दी संस्थान की स्थापना 25 मार्च, 1969 को उत्तर प्रदेश–शासन द्वारा इलाहाबाद के अध्यापन विज्ञान संस्थान में एक "यूनिट" (इकाई) के रूप में की गयी। बाद में भारत की सांस्कृतिक नगरी वाराणसी से सम्बद्ध हिन्दी जगत के युगप्रवर्तक साहित्यकारों, सन्तों, कवियों एवं लेखकों की हिन्दी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए, शासन द्वारा इसे प्रान्तीय स्तर की एक वृहद् संस्था —"राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी के रूप में 20 दिसम्बर 1971 ई० को इलाहाबाद से वाराणसी स्थानान्तरित कर दिया गया।

आरम्भ के चार वर्षों तक यह संस्थान मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र वाराणसी के

भवन में चलता रहा। जनवरी सन् 1976 से यह संस्थान अपने नवनिर्मित भवन में कार्यरत है।

हिन्दी संस्थान का विशाल भवन वाराणसी (कचहरी) से गाजीपुर जाने वाले राजमार्ग पर दायीं ओर पुलिस लाइन के पूर्व ही अवस्थित है। हिन्दी संस्थान का नवनिर्मित मुख्य दुमंजिला भवन बड़ा आकर्षक प्रतीत होता है। भवन के पास ही एक छात्रावास तथा चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के लिए तीन लघु आवास भी हैं।

संस्था का नाम परिवर्तन :

सन् 1981 में उत्तर प्रदेश में शैक्षिक समुन्नयन के लिए "राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, उत्तर प्रदेश" का गठन होने पर 'राज्य हिन्दी संस्थान' को भी उससे सम्बद्ध कर दिया गया।

सन् 1987 में परिषद की विभिन्न इकाइयों का पुनर्गठन कर उनके नामों में परिवर्तन किया गया। इस क्रम में "राज्य हिन्दी संस्थान" का नाम "हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा विभाग" कर दिया गया।

आठवीं पंचवर्षीय योजना में त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत हिन्दी के अतिरिक्त द्वितीय भाषा के रूप में आठ अन्य भारतीय भाषाओं के शिक्षकों को शिक्षित एवं प्रशिक्षित करने का वृहद् कार्यक्रम प्रस्तावित है। ये भारतीय भाषाएँ हैं—तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम, गुजराती, मराठी, उड़िया तथा असमिया।

इस प्रकार अब यह संस्था न केवल हिन्दी वरन् उसके साथ ही अन्य आठ भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार, विकास एवं स्तरोन्नयन के व्यापक दायित्व का सम्यक निर्वाह करने में अग्रसर हो रही है।

सम्प्रति इस विभाग में प्रकाशन, प्रशिक्षण एवं शोध विषयक कार्य सम्पादित किए जाते हैं।

कार्यक्षेत्र :

इस विभाग द्वारा निम्नलिखित कार्य सम्पादित किए जाते हैं—

(1) प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के हिन्दी अध्यापक/अध्यापिकाओं के लिए अल्पकालिक हिन्दी-प्रशिक्षण का संयोजन।

(2) शिक्षा विभाग के निरीक्षक-निरीक्षिकाओं, रा० दी० वि० के प्रधानाध्यापकों/प्रधानाध्यापिकाओं, माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं अन्य शिक्षाधिकारियों के लिए संगोष्ठियों का आयोजन।

(3) हिन्दी-शिक्षण की विविध समस्याओं के समाधान तथा हिन्दी शिक्षकों के दिशा निर्देशन हेतु शोध करना एवं उन्हें प्रकाशित करना।

(4) हिन्दी शिक्षण स्तरोन्नयन हेतु हिन्दी के मानक उच्चारण, मानक वर्तनी, लेख सुधार तथा उपचारात्मक शिक्षण हेतु विविध लघु पुस्तिकाओं का निर्माण एवं प्रकाशन।

(5) हिन्दी पाठ्य पुस्तकों के निर्माण हेतु सुझाव देना, निष्कर्ष तैयार करना तथा पाठ्य पुस्तकों के लेखन में सहयोग प्रदान करना।

(6) विभागीय निर्देशानुसार 'परिषद' की अन्य इकाइयों के साथ बेसिक एवं माध्यमिक शिक्षा से सम्बन्धित अन्य कार्यों में सहयोग प्रदान करना।

(7) देश तथा प्रदेश की हिन्दी सेवी संस्थाओं, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद नयी दिल्ली, नवोदय विद्यालय समिति लखनऊ, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान मैसूर, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार संस्थान हैदराबाद, आदि विविध संस्थाओं के कार्यों में यथावसर सहयोग प्रदान करना तथा भारतीय भाषाओं के समुन्नयन में उनका सहयोग प्राप्त करना।

उपलब्धियाँ :

वर्ष 1981 के बाद से अब तक संस्थान में निम्नलिखित कार्य सम्पादित किये गये :—

प्रशिक्षण :

प्रशिक्षण कार्य के अन्तर्गत हिन्दी-शिक्षण स्तरोन्नयन की दृष्टि से प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक स्तर के अध्यापक/अध्यापिकाओं के लिए विकास क्षेत्र स्तर पर सेवाकालीन पंच दिवसीय/त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है। इसमें अध्यापकों को हिन्दी-वर्तनी, उच्चारण, सुलेख, गद्य तथा पद्य शिक्षण एवं व्याकरण शिक्षण विधियों का क्रियात्मक ज्ञान दिया जाता है। इसके अन्तर्गत अब तक कुल 11416 अध्यापक/अध्यापिकाओं को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

प्रारंभिक विद्यालयों के निरीक्षण कार्यक्रम को अधिकाधिक प्रभावी बनाने तथा उसके माध्यम से मातृभाषा शिक्षण की दिशा में अध्यापकों में अधिक सक्रियता लाने के उद्देश्य से निरीक्षकों/उप निरीक्षकों तथा राजकीय दीक्षा विद्यालय के प्रधानाचार्यों की द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन संस्थान में किया जाता है। विगत दस वर्षों में 234 निरीक्षक इस संगोष्ठी में भाग ले चुकें हैं।

माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों को संस्थान द्वारा किये जाने वाले कार्यों से अवगत करने तथा संस्थान से प्रकाशित शोध पुस्तिकाओं एवं अन्य साहित्य को उन्हें वितरित करने के उद्देश्य से वर्ष 87-88 से जनपद स्तर पर प्रधानाचार्यों की एक दिवसीय परिचय संगोष्ठी आयोजित की जाती है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विगत वर्षों में इलाहाबाद, फैजाबाद, वाराणसी तथा गोरखपुर मण्डल के कुल 1029 प्रधानाचार्य एवं अन्य शिक्षाधिकारी लाभान्वित हो चुके हैं। इस प्रकार इन विविध प्रशिक्षण संगोष्ठियों के अन्तर्गत एक दशक की अवधि में कुल 12679 अध्यापकों एवं अधिकारियों को लाभान्वित किया जा चुका है।

इन वाह्य एवं आन्तरिक प्रशिक्षण-संगोष्ठियों के अन्तर्गत हिन्दी के मानक उच्चारण, मानक वर्तनी, सुलेख तथा हिन्दी की व्यावहारिक कठिनाइयों के समाधान हेतु उचित सुझाव प्रस्तुत किये जाते हैं। गत दस वर्ष के बीच प्रशिक्षण एवं संगोष्ठियों से कुल 12679 अध्यापक एवं अधिकारी लाभान्वित हो चुके हैं।

प्रशिक्षण-प्रगति सूचक रेखा चित्र नीचे दिया जा रहा है :—

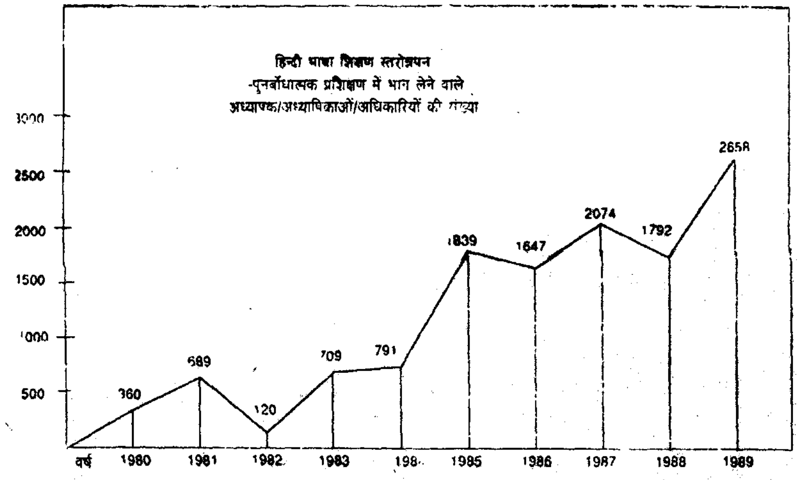

सन्दर्भ व्यक्तियों का प्रशिक्षण :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत वर्ष 1986-87 तथा 1988 में राज्य हिन्दी संस्थान ने सन्दर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में भी कार्य सम्पादित किया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत संस्थान के चार प्रवक्ता/अधिकारी एवं निदेशक ने प्रशिक्षण महाविद्यालय, अजमेर (राजस्थान) में 'की व्यक्ति' का प्रशिक्षण प्राप्त कर संस्थान में तीन वर्षों के बीच चलाये गये प्रशिक्षण कार्यक्रम में 12 राजकीय दीक्षा विद्यालय के प्रशिक्षकों क्रमशः 90, 60 तथा 60 कुल 210 अध्यापकों को सन्दर्भ व्यक्ति का प्रशिक्षण दिया, जिनके माध्यम से वाराणसी तथा गोरखपुर मण्डल के समस्त प्राथमिक एवं जूनियर हाई स्कूलों के अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया। संस्थान के व्यक्तियों द्वारा इन प्रशिक्षणों के वीक्षण कार्य भी सम्पादित किये गये।

अनुसन्धान-अध्ययन एवं परियोजनाएँ

अध्यापकों तथा निरीक्षकों की व्यावहारिक कठिनाइयों के समाधान एवं छात्रों के उपचारात्मक शिक्षण को ध्यान में रखकर संस्थान के प्रवक्ताओं/अधिकारियों द्वारा प्रतिवर्ष विविध शोध कार्य सम्पादित किये जाते हैं। शोध-विषयों की तात्कालिक उपयोगिता को

ध्यान में रखकर इन शोध कार्यों का प्रशिक्षार्थियों में निःशुल्क वितरण हेतु विभागीय अनुमोदन के बाद प्रकाशन किया जाता है। विगत दस वर्षों में लगभग 54 शीर्षकों पर शोध कार्य सम्पादित किये जा चुके हैं, जिनमें से विगत दस बर्षों में 11 शोध पुस्तिकाओं का प्रकाशन हो चुका है और पाँच शोध पांडुलिपियाँ 'शोध कार्य समिति' के पास मूल्यांकन हेतु भेजी जा चुकी है।

प्रकाशन कार्य :

हिन्दी शिक्षकों को भाषा एवं साहित्य विषयक दिशा-निर्देश तथा हिन्दी शिक्षण सम्बन्धी समस्याओं के समाधान हेतु इस विभाग द्वारा त्रैमासिक पत्रिका 'वाणी' का प्रकाशन किया जाता है। 'वाणी' के माध्यम से शिक्षा विभाग के अधिकारियों एवं प्रधानाचार्यों को हिन्दी-शिक्षा विषयक दिशा-निर्देश किया जाता है। प्रशिक्षण में आये अध्यापकों-निरीक्षकों एवं शिक्षाधिकारियों को 'वाणी' पत्रिका का निःशुल्क वितरण किया जाता है। परिषद के गठन के बाद 'वाणी' पत्रिका को सुव्यवस्थित, सुगठित एवं अध्यापकों के लिए अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। इसके अन्तर्गत 'वाणी' में विविध विशेषांक यथा 'राष्ट्रीय एकीकरण और हिन्दी', 'हिन्दी की क्षेत्रीय बोलियाँ', हिन्दी गद्य शिक्षण, हिन्दी भाषा शिक्षण, हिन्दी व्याकरण-शिक्षण, हिन्दी साहित्य अंक, हिन्दी उच्चारण शिक्षण, हिन्दी गद्य शिक्षण (माध्यमिक स्तर) का प्रकाशन हुआ। इस प्रकार विगत दस वर्षों में "वाणी" पत्रिका के कुल 39 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। सत्र 1989—90 में अध्यापकों की सृजनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से "हिन्दी है भारत की विन्दी" शीर्षक पर गद्य-पद्य तथा अन्य विधाओं में रचनाएँ आहूत की गयी थीं। उनमें से 5 श्रेष्ठ रचनाओं का चयन कर उन्हें "वाणी" में प्रकाशित कराया जा चुका है। विगत वर्ष से साहित्यिक तथा शिक्षण प्रशिक्षण सम्बन्धी श्रेष्ठ ग्रन्थों की समीक्षाएँ भी 'वाणी' में प्रकाशित की जा रही है।

"वाणी" के अतिरिक्त हिन्दी वर्तनी उच्चारण एवं उपचारात्मक शिक्षण के लिए कतिपय अन्य उपयोगी सामग्रियों का भी प्रकाशन किया जाता है। इनमें प्रमुख रूप से "हिन्दीतर भाषा की राष्ट्रीय एकता विषयक कविताओं के संकलन तथा हिन्दी रूपान्तर के साथ नागरी लिपि में उनके प्रकाशन की योजना है। सत्र 1989—90 में संस्कृत, उर्दू, बँगला तथा तमिल की राष्ट्रीय एकता विषयक कविताओं का प्रकाशन नागरी लिपि में हिन्दी रूपान्तर के साथ किया जा चुका है। इस प्रकाशन से बच्चों एवं अध्यापकों में राष्ट्रीय एकता एवं देश प्रेम की भावनाओं के विकास के साथ हिन्दीतर प्रान्तों में भी हिन्दी के प्रति अभिरुचि जागृत होती है।

वर्ष 1981 से अब तक की प्रकाशन सम्बन्धी उपलब्धियाँ निम्नलिखित रूप में हैं :

(1) शोध अध्ययन विषयक प्रकाशन—11 पुस्तिकाएँ

(2) हिन्दी साहित्य शिक्षण विषयक—7 पुस्तिकाएँ

(3) कविता संग्रह—2 पुस्तिकाएँ

(4) पिछले महत्वपूर्ण प्रकाशनों का पुनः मुद्रण—14 पुस्तिकाएँ

(5) "वाणी" त्रैमासिक पत्रिका के कुल 39 अंक इस अवधि में प्रकाशित हुए हैं।

इन प्रकाशनों का विवरण निम्नवत् हैं :

शोध अध्ययन :

(1) भोजपुरी भाषा-भाषी छात्रों के हिन्दी अध्ययन पर भोजपुरी का प्रभाव······ —डा० शोभनाथ त्रिपाठी

(2) छात्रों की शब्द सम्पदा का अध्ययन··············· —मुन्नीलाल विश्वकर्मा

(3) वर्तनी की अशुद्धियाँ, वर्गीकरण एवं सुधार (माध्यमिक स्तर)··············· —डा० शोभनाथ त्रिपाठी

(4) वर्तनी की अशुद्धियाँ, वर्गीकरण एवं सुधार (पूर्व माध्यमिक स्तर)··········· —केदार नाथ मिश्र

(5) वर्तनी की अशुद्धियाँ, वर्गीकरण एवं सुधार (प्राथमिक स्तर)··············· —मुन्नीलाल विश्वकर्मा

(6) हिन्दी शब्द सम्पदा (प्राथमिक स्तर)····················· —श्रीनाथ मिश्र

(7) हिन्दी की प्रमुख क्षेत्रीय बोलियों में प्रचलित शब्दों का अध्ययन··········· —श्रीनाथ मिश्र

(8) लोकोक्ति एवं मुहावरे (माध्यमिक स्तर)········ —डा० शोभनाथ त्रिपाठी

(9) छात्रों की भाषागत त्रुटियों का अध्ययन········· —जनार्दन प्रसाद पाण्डेय

(10) लघु हिन्दी शब्दकोश························ —डा० शोथनाथ त्रिपाठी

(11) काव्य संकलन में अलंकार योजना··············· —डा० देवनाथ तिवारी

हिन्दी शिक्षण संबंधी :

(1) सन्धि विचार································· —शिवलखन तिवारी

(2) हिन्दी नीति वचन संग्रह····················· —मुन्नीलाल विश्वकर्मा

(3) हिन्दी अन्तःकथा परिचायिका···················· —शिवलखन तिवारी
—जगदम्बा प्रसाद त्रिपाठी

(4) उच्चारण संदर्शिका······························ —डा० केदारनाथ मिश्र

(5) कहानी शिक्षण································ —श्रीनाथ मिश्र

(6) गद्य शिक्षण································ —ताराशंकर श्रीवास्तव

(7) कविता शिक्षण···························· —डा० शोभनाथ त्रिपाठी

कविता संग्रह :

(1) राष्ट्रीय एकीकरण और हिन्दी

(2) राष्ट्रीय एकता विषयक कविताएँ (संस्कृत, उर्दू, बंगला, तमिल) सम्पादन।

महत्वपूर्ण पूर्व प्रकाशनों का पुनर्मुद्रण :

(1) वर्तनी की अशुद्धियाँ, वर्गीकरण एवं सुधार, माध्यमिक स्तर, (द्वितीय संस्करण)
(2) हिन्दी व्याकरण (द्वितीय संस्करण)
(3) सुलेख (द्वितीय संस्करण)
(4) हिन्दी वाक्य रचना (द्वितीय संस्करण)
(5) संस्कृतानुवाद कैसे करें ? (द्वितीय संस्करण)
(6) उच्चारण शिक्षण (द्वितीय संस्करण)
(7) सुलेख (तृतीय संस्करण)
(8) हिन्दी शिक्षक निर्देशिका (द्वितीय संस्करण)
(9) आओ वर्तनी सुधारें (प्राथमिक स्तर) (द्वितीय संस्करण)
(10) आओ वर्तनी सुधारें (पूर्व माध्यमिक स्तर) (द्वितीय संस्करण)
(11) आओ वर्तनी सुधारें (माध्यमिक स्तर) (द्वितीय संस्करण)

विभाग द्वारा किये गये ये प्रकाशन समय-समय पर शिक्षण संस्थानों एवं अध्यापकों द्वारा माँगे जाने पर उन्हें निःशुल्क उपलब्ध कराये जाते हैं। हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी प्रान्त यथा राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश तथा केरल एवं आन्ध्र प्रदेश के कतिपय शिक्षकों एवं विद्वानों को भी इन्हें उपलब्ध कराया जाता है।

गत दशक (80-89) में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा विभाग के महत्वपूर्ण प्रकाशन

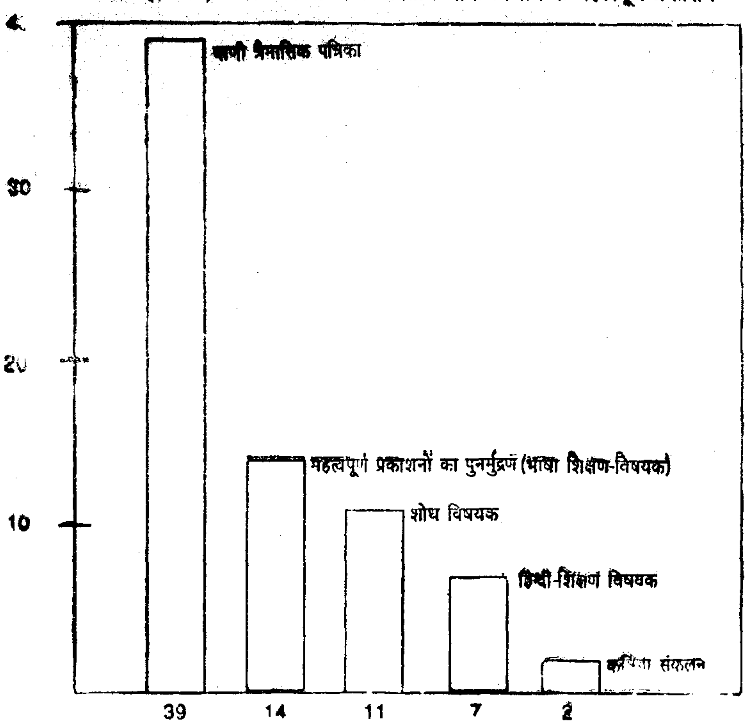

पुस्तकालय :

हिन्दी भाषा-साहित्य और शिक्षण सम्बन्धी ज्ञान के सम्बर्द्धन में एवं प्रशिक्षार्थियों के दिशा निर्देशन हेतु संस्थान में एक पुस्तकालय है, जिसमें सम्प्रति 4279 उत्कृष्ट पुस्तकों का संग्रह किया गया है। भाषा विज्ञान तथा हिन्दी शिक्षण सम्बन्धी नवीनतम कृतियों तथा भारतीय संस्कृति विषयक आधार ग्रन्थों को सुलभ कराने में पुस्तकालय सहायक है, फिर भी भावी कार्यक्रमों तथा प्रस्तावित आठ भाषाओं के शिक्षण कार्यक्रम को ध्यान में रखकर पुस्तकालय के पुनर्गठन एवं संवर्धन की आवश्यकता है।

छात्रावास :

शासन द्वारा संस्थान परिसर में एक छात्रावास का निर्माण कराया गया है, जिसमें प्रशिक्षण संगोष्ठियों के अवसर पर प्रतिभागियों को निःशुल्क आवास की सुविधा दी जाती है।

छात्रावास भवन एक मंजिला है। उसकी दूसरी मंजिल के विस्तार हेतु प्रस्ताव स्वीकृत हो चुका है।

आवासीय व्यवस्था :

संस्थान परिसर में चतुर्थ श्रेणी के कर्मवारियों के आवास हेतु तीन लघ आवासों की व्यवस्था है। प्राचार्य आवास के निर्माण हेतु भी कार्यक्रम प्रस्तावित है।

आठवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विभाग द्वारा प्रस्तावित कार्य :

आठवीं पंचवर्षीय योजना में इस विभाग में त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम, मराठी, गुजराती, उड़िया तथा असमिया से सम्बन्धित अध्यापकों के शिक्षण-प्रशिक्षण तथा उनके लिए पाठ्य पुस्तकों की रचना हेतु प्रस्ताव पारित हो चुके हैं।

भाषा प्रयोगशाला :

इस विभाग में आने वाले प्रशिक्षार्थियों तथा प्रदेश के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों को उच्चारण सुधार एवं भाषा शिक्षण का व्यावहारिक ज्ञान देने हेतु संस्थान में भाषा प्रयोगशाला के निर्माण के लिए प्रस्ताव भेजे जा चुके हैं। आशा है आठवीं पंचवर्षीय योजना में इसका भी क्रियान्वयन हो सकेगा जिससे प्रदेश के शिक्षक-प्रशिक्षक एवं शिक्षार्थी लाभान्वित हो सकेंगे।

अन्य कार्य :

संस्थान के सदस्यों ने समय-समय पर परिषद की विविध इकाइयों के अतिरिक्त माध्यमिक शिक्षा परिषद, इलाहाबाद, राज्य पत्राचार शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद, नवोदय विद्यालय समिति निराला नगर, लखनऊ, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद,

नयी दिल्ली तथा केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर आदि द्वारा आयोजित संगोष्ठियों एवं पुस्तक रचना आदि की कार्यशालाओं में सहयोग प्रदान किया है। इस क्रम में नैतिक शिक्षा कक्षा 1, 2, 3, 4, 5 ज्ञान भारती भाग—1, 2, 3, 4 तथा नवभारती भाग—1 की रचना कार्यशालाओं में संस्थान के सदस्यों द्वारा प्राथमिक शिक्षा विभाग इलाहाबाद को सक्रिय सहयोग दिया जा चुका है।

जनसंचार माध्यमों द्वारा प्रसारित हिन्दी-शिक्षण कार्यक्रमों में भी इस विभाग का सहयोग रहता है। राज्य शैक्षिक तकनीकी संस्थान, लखनऊ द्वारा दूरदर्शन हेतु निर्मित विविध कार्यक्रमों में इस विभाग के सदस्य विषय परामर्शी के रूप में अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं। आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारण हेतु इस विभाग द्वारा यथा निर्देश रेडियो पाठ भी तैयार किये जाते हैं। व्यक्तिगत स्तर पर संस्थान के शोध प्रवक्ता डा० शोभनाथ त्रिपाठी द्वारा वर्ष 1985 तथा 1987 में आकाशवाणी वाराणसी के शैक्षिक कार्यक्रमों में क्रमशः "हिन्दी-उच्चारण एवं वर्तनी के विविध आयाम" तथा "हिन्दी मुहावरे लोकोक्ति एवं पहेलियाँ" शीर्षक पर आलेख एवं वार्ता प्रस्तुत की जा चुकी है।

हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा विभाग में राष्ट्रीय पर्वों तथा महापुरुषों की जयन्तियों आदि के अवसर पर विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन किये जाते हैं। इन अवसरों पर संस्थान के सदस्य संगोष्ठियों में सक्रिय भाग लेकर राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रसार में सहयोग प्रदान करते हैं। हिन्दी भाषा एवं साहित्य की प्रगति और शैक्षिक स्तरोन्नयन के इस पवित्र कार्य में संस्थान के समस्त सदस्य कृतसंकल्प हैं। संस्थान के वर्तमान सदस्यों की सूची निम्नवत् है :

(1) श्री ज्वाला प्रसाद मिश्र	निदेशक
(2) श्री गोपाल कृष्ण मिश्र	सहायक निदेशक
(3) श्री मार्कण्डेय सिंह	प्रकाशन प्रशिक्षण एवं शोध अधिकारी
(4) श्रीमती सी० डी० सिंह	प्रकाशन प्रशिक्षण एवं शोध अधिकारी
(5) डा० शोभनाथ त्रिपाठी	शोध प्रवक्ता
(6) श्री श्रीनाथ मिश्र	शोध प्रवक्ता
(7) श्री शम्भू नारायण राय	शोध प्रवक्ता
(8) डा० देवनाथ तिवारी	शोध प्रवक्ता
(9) श्री चौहार्या मिश्र	शोध प्रवक्ता
(10) श्री राज नारायण तिवारी	शोध प्रवक्ता
(11) श्री विलास राय	प्रधान लिपिक
(12) श्री वीरेन्द्र नाथ	शिविर सहायक

(13) श्री श्यामल कुमार चक्रवर्ती	शिविर सहायक
(14) श्री कैलास नाथ पाण्डेय	वरिष्ठ लिपिक (इस स्थान के लिए स्थानान्तरण हो चुका है पर उन्होंने कार्यभार ग्रहण नहीं किया है।)
(15) श्री राजेन्द्र सिंह यादव	कनिष्ठ लिपिक

उपर्युक्त के अतिरिक्त चार चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी भी कार्यरत हैं।

अपने इन थोड़े से सदस्यों—अधिकारियों, प्रवक्ताओं एवं कार्यालय सहयोगियों के माध्यम से यह विभाग अनुदिन अपने कार्यक्रमों को अधिक व्यापक एवं प्रभावी बनाने हेतु सचेष्ट है।

अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषा विभाग
(आंग्ल भाषा शिक्षण संस्थान)
इलाहाबाद

इतिवृत्त तथा आविर्भाव :

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भाषाई प्रान्तों के गठन के फलस्वरूप देश के विभिन्न प्रदेशों में क्षेत्रीय भाषाएँ प्रशासन की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई और उत्तरोत्तर वे ही शिक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकृत होती गयीं। भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्र भाषा होने का गौरव प्राप्त था परन्तु राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को सुदृढ़ बनाये रखने के उद्‌देश्य से अंग्रेजी को सह-राष्ट्र भाषा के रूप में तब तक बनाये रखने का संकल्प लिया गया जब तक कि सभी राज्य हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपना न लें। प्रदेशों में क्षेत्रीय भाषाओं के प्रशासन की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने के बाद अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम के रूप में न रह कर एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ायी जाने लगी और आज अनेक प्रदेशों में अंग्रेजी एक वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ायी जा रही है।

जनसंख्या के साथ-साथ उत्तरोत्तर बढ़ती हुई छात्र संख्या के दबाव के कारण तथा अंग्रेजी के शिक्षा के माध्यम के गरिमामय पद से अपदस्थ हो जाने के कारण प्रदेश में अंग्रेजी के पठन-पाठन के स्तर में गिरावट आती गयी। अंग्रेजी जैसी अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की भाषा, जिसमें न केवल आधुनिक ज्ञान, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का विशाल वाङ्मय सुरक्षित है प्रत्युत नवीनतम ज्ञान विस्फोट की सामग्री का स्रोत भी है, के पठन-पाठन के स्तर में गिरावट से मनीषी, शिक्षाविद्, अध्यापक, अभिभावक, राजनेता आदि सभी चिन्तित हो उठे क्योंकि प्रदेश में अंग्रेजी पठन-पाठन का उच्च स्तर बनाये रखना प्रदेश के हित में तो है ही, राष्ट्र हित में भी है। अतः प्रत्येक स्तर पर विचार मन्थन होने लगा कि क्या कुछ किया जाय कि प्रदेश में अंग्रेजी शिक्षण का स्तर उच्च हो। सम्यक् विचारोपरान्त यह निश्चय किया गया कि एक ऐसी संस्था स्थापित की जाय जिसके माध्यम से प्रदेश के अंग्रेजी शिक्षकों को इस प्रकार का प्रशिक्षण सुलभ कराया जाय कि वे अंग्रेजी भाषा के बदलते स्वरूप एवं अंग्रेजी शिक्षण की अधुनातन विधियों से सुपरिचित हों ताकि अंग्रेजी शिक्षण प्रभावी बन सके। कुछ ऐसी ही परिस्थितियों में और इन्हीं उद्‌देश्यों की पूर्ति हेतु अंग्रेजी भाषा शिक्षण संस्थान, उत्तर प्रदेश का आविर्भाव हुआ जो आज "अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषा विभाग" की संज्ञा से अभिहित है और राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश की एक इकाई के रूप में कार्यरत हैं। यह संस्थान प्रशिक्षण

कार्यक्रमों, शोध परियोजनाओं, विचार-गोष्ठियों, कार्यशालाओं, शिक्षणोपयोगी साहित्य निर्माण तथा विशेषज्ञ एवं विस्तार सेवाओं के माध्यम से निरन्तर अपने उत्तरदायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन करता रहा है।

संस्थान की स्थापना वर्ष 1956 के दिसम्बर मास में ब्रिटेन स्थित नफील्ड फाउन्डेशन की वित्तीय सहायता तथा ब्रिटिश कौन्सिल के तकनीकी सहयोग से हुई। प्रारम्भ में यह संस्थान "राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान, उत्तर प्रदेश" के एक अंग के रूप में उसी परिसर में कार्य करता रहा। वर्ष 1963 में इस संस्थान को उत्तर प्रदेश शासन ने अधिगृहीत कर लिया और इसे प्रदेश के शिक्षा विभाग का एक स्वतन्त्र अंग बना दिया। वर्ष 1974 से संस्थान अपने निजी भवन में अवस्थित है।

प्रारम्भ में इस संस्थान के कार्यक्रमों के संचालन में ब्रिटिश कौंसिल की भूमिका उल्लेखनीय रही। संस्थान की स्थापना हेतु ब्रिटिश काउन्सिल ने नफील्ड फाउन्डेशन ट्रस्ट से वित्तीय सहायता उपलब्ध करायी थी। ब्रिटिश काउन्सिल के प्रतिनिधि के रूप में एक ब्रिटिश प्रोफेसर संस्थान के स्टाफ के सदस्य के रूप में कार्य करते रहे। इनमें प्रोफेसर स्पेन्सर, प्रोफेसर हिन्कले, प्रोफेसर को, प्रोफेसर ब्रैडले, प्रोफेसर बावर्स तथा प्रोफेसर बोनर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। संस्थान के प्रथम निदेशक, प्रोफेसर सी० एस० भण्डारी के सहयोग से इन प्रोफेसरों ने अंग्रेजी के प्राथमिक स्तर से लेकर हाईस्कूल स्तर तक के लिए पाठ्य-पुस्तकें लिखीं जो प्रमुख रूप से निम्नलिखित हैं :—

(1) रीड एण्ड लर्न सीरीज I

(2) रीड एण्ड टेल सीरीज I

(3) रीड एण्ड लर्न प्राइमर I

(4) रीड एण्ड लर्न बुक I, II, III

(5) ड्रिल्स एण्ड एक्सरसाइजेज I

(6) ए प्रोनाउन्सिंग वोकैबुलरी आफ इंगलिश I

(7) रीड फार फन सीरीज I

(8) टीचिंग इंगलिश, ए हैण्ड बुक फार टीचर्स I

(9) लेट अस लर्न इंगलिश बुक I, II, III

(10) लेट अस टीच इंगलिश बुक I, II, III

(11) ए न्यू रीडर फार क्लास IV

उपर्युक्त के अतिरिक्त कई दीवाल चार्ट, फ्लैश कार्ड्स, ग्रामोफोन रेकार्ड्स, अध्यापक निर्देशिकाएँ, स्ट्रक्चरल सिलेबस एवं ओ०पी० कैसे सिखाएँ इत्यादि सामग्रियों का निर्माण किया गया।

संस्थान के सभी कार्यकलाप ब्रिटिश काउन्सिल के निर्देशन में होते थे । वर्ष 1974 से ब्रिटिश काउन्सिल ने अपना योगदान शनैः शनैः कम कर दिया । परिणामस्वरूप संस्थान का संचालन पूर्णरूपेण राज्य सरकार का उत्तरदायित्व हो गया । संस्थान के स्टाफ में अब ब्रिटिश प्रोफेसर भी नहीं हैं ।

राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद के गठन के पूर्व संस्थान का मुख्य कार्य चार मासीय डिप्लोमा कोर्स, प्रशिक्षण, शोध तथा शिक्षणोपयोगी साहित्य का निर्माण था परन्तु वर्ष 1981 में परिषद के गठन के पश्चात् संस्थान में शोध, अध्ययन एवं परियोजनाओं पर विशेष बल दिया जाने लगा ।

संस्थान के विविध कार्यकलाप—एक विहंगम दृष्टि :

संस्थान के कार्यकलापों को निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत विभाजित किया जा सकता है :—

(1) प्रशिक्षण ।

(2) संगोष्ठी, कार्यशालाएँ एवं विस्तार सेवाएँ ।

(3) शोध, अध्ययन एवं परियोजनाएँ ।

(4) शिक्षणोपयोगी साहित्य/सामग्री का प्रयणन एवं प्रकाशन ।

(5) केन्द्रीय वित्तीय सहायता से आयोजित कार्यक्रम ।

1. प्रशिक्षण

(क) चार मासीय डिप्लोमा प्रशिक्षण :

यह स्पष्ट है कि संस्थान की स्थापना प्रदेश में अंग्रेजी पठन-पाठन के स्तर को उन्नत करने के लिए हुई । इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रदेश के अंग्रेजी अध्यापक/अध्यापिकाओं को पुनः प्रशिक्षित करना आवश्यक समझा गया । इस हेतु संस्थान में चार मासीय सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है, जिसमें प्रदेश के जूनियर हाईस्कूल, हाई स्कूल तथा इण्टर कक्षाओं में अंग्रेजी शिक्षण करने वाले अध्यापक/अध्यापिकाओं को गहन प्रशिक्षण दिया जाता है । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सेवारत अध्यापक/अध्यापिकाओं के अतिरिक्त सीधी भर्ती से भी प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया जाता रहा है । कुछ वर्ष पूर्व तक सैनिक शिक्षा सेवा से भी 5 प्रशिक्षणार्थियों को नामित करके भेजे जाने की प्रथा रही है ।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में चार लिखित प्रश्न पत्रों के अतिरिक्त कक्षा शिक्षण, मौखिक परीक्षा तथा लिखित कार्य, जिन पर अंक प्रदान किये जाते हैं, सम्मिलित हैं । प्रशिक्षण के उपरान्त परीक्षा में उत्तीर्ण प्रशिक्षणार्थियों को 'डिप्लोमा इन द टीचिंग आफ इंगलिश' प्रदान किया जाता है । अब तक इस प्रकार के 45 डिप्लोमा कोर्सों में लगभग 2600 प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षण हो चुका है ।

(ख) अंग्रेजी वाचन प्रवीणता कोर्स :

यह कार्यक्रम 50 दिवसीय है तथा प्रतिदिन दो घंटे का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य उन स्नातक उपाधिधारी व्यक्तियों को अंग्रेजी वाचन में प्रवीणता दिलानी है जिन्हें प्रतियोगितामूलक परीक्षाओं में बैठना रहता है अथवा जिनको अपने व्यवसाय में अंग्रेजी वाचन की आवश्यकता पड़ती है। इसमें अंग्रेजी वाचन के सभी अंगों पर अभ्यास कराया जाता है। अब तक 26 कोर्सों में लगभग 600 व्यक्तियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका हैं।

(ग) लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम :

इलाहाबाद तथा इलाहाबाद के बाहर के जनपदों में संस्थान के प्राध्यापकों द्वारा लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाये जाते हैं जो 6 दिवसीय होते हैं। यह कार्यक्रम उन अध्यापकों/अध्यापिकाओं की कठिनाइयों को ध्यान में रख कर किया जाता है जो संस्थान में उपस्थित रह कर चार मासीय डिप्लोमा प्रशिक्षण ग्रहण करने में असमर्थ रहते हैं। इन 6 दिवसीय गहन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नयी शिक्षण विधियों के अतिरिक्त शिक्षकों को विशेष रूप से उन उपायों की बात कही जाती है जिनके द्वारा वह स्वयं को प्रशिक्षित कर सकें।

अब तक इस प्रकार के कार्यक्रम निम्नलिखित जनपदों में आयोजित हो चुके हैं :— फैजाबाद, गोरखपुर, कानपुर, आगरा, मेरठ, देवरिया, झाँसी, ललितपुर, मथुरा, नैनीताल, अल्मोड़ा, रायबरेली, सुलतानपुर, फतेहपुर, गाजीपुर, बरेली, बहराइच तथा देहरादून। रायबरेली तथा सुलतानपुर में समस्त तहसील मुख्यालयों में कार्यक्रम आयोजित करके समस्त जूनियर हाई स्कूलों के अंग्रेजी अध्यापकों को प्रशिक्षित करने का प्रयास किया गया है।

(घ) विशेष उद्देशीय प्रशिक्षण कार्यक्रम :

किसी विशेष उद्देश्य की परिपूर्ति के लिए भी लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहे हैं। उदाहरणतः हाई स्कूल कक्षाओं की अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तकें प्रदेश में निर्धारित होने के उपरान्त [illegible] दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करके पूरे प्रदेश के अंग्रेजी शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का कार्य किया गया।

(ङ) [illegible] :

संस्थान से प्रशिक्षित अध्यापक/अध्यापिकाओं के शिक्षण कार्य का मूल्यांकन करने के लिए संस्थान के प्राध्यापकगण प्रदेश के विभिन्न विद्यालयों में जा कर [illegible] किया करते हैं तथा किसी केन्द्र स्थान में शिक्षकों को एकत्रित करके उनकी कठिनाइयों को दूर करते हैं। आवश्यकता पड़ने पर प्रदर्शन पाठ देकर समस्याओं का [illegible] पर ही निराकरण कर दिया जाता है।

2. संगोष्ठी, कार्यशालाएँ एवं विस्तार सेवाएँ

(क) संगोष्ठी :

संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष एक संगोष्ठी आयोजित की जाती है जिसमें प्रदेश के अंग्रेजी शिक्षाविद्, प्रशिक्षण संस्थाओं के शिक्षक-प्रशिक्षक तथा अध्यापक/अध्यापिकाओं को आमंत्रित किया जाता है। गोष्ठी में ऐसे विषयों पर परिचर्चा होती है जो समयोचित हों तथा गोष्ठी में आमंत्रित व्यक्तियों द्वारा दिये गये सुझावों पर भविष्य के कार्यक्रम निर्धारित किये जाते हैं।

(ख) कार्यशाला :

इसी प्रकार प्रतिवर्ष एक कार्यशाला का भी आयोजन किया जाता है जिसमें किसी समस्या का समाधान निकालने हेतु आमंत्रित अध्यापक/अध्यापिकाएँ उस पर कार्य करती हैं। उदाहरण के लिए जब माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा सपुस्तक परीक्षा प्रणाली का परीक्षण हुआ, इस संस्थान ने उन सिद्धान्तों के आधार पर प्रतिदर्श परीक्षा प्रश्न पत्रों का निर्माण किया तथा उन्हें माध्यमिक शिक्षा परिषद को प्रदान किया। गत वर्ष इण्टरमीडिएट की अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकों पर प्रश्न बैंक का निर्माण कराया गया।

(ग) परामर्शदात्री सेवाएँ :

संस्थान के प्राचार्य तथा विशेषज्ञों की सेवाएँ परामर्शदाता के रूप में प्रदेश तथा प्रदेश के बाहर की विभिन्न संस्थाओं में उपलब्ध करायी जाती हैं। बहुधा प्रदेश के बाहर से भी विभिन्न संस्थाओं द्वारा पृच्छाएँ की जाती हैं अथवा परामर्श की अपेक्षा की जाती है जो संस्थान द्वारा उपलब्ध करायी जाती है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली तथा केन्द्रीय अंग्रेजी और विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद द्वारा समय-समय पर आयोजित विभिन्न कार्यशालाओं, विचारगोष्ठियों तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में संस्थान के विशेषज्ञों की विशेषज्ञता की माँग की जाती है।

3. शोध कार्य/अध्ययन/परियोजनाएँ

संस्थान में शोध कार्य तो प्रारम्भ से ही होता रहा परन्तु राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के एक विभाग के रूप कार्यरत होने के पश्चात शोध कार्यों पर और अधिक बल दिया जाने लगा है। प्रकाशन योग्य शोध पत्रों/अध्ययन/परियोजनाओं का प्रकाशन किया जाता है। परिषद की एक इकाई के रूप में जिन शोध पत्रों/अध्ययन/परियोजनाओं का अब तक प्रकाशन हो चुका हैं उनके नाम इस प्रकार हैं :—

1. जूनियर हाई स्कूल के छात्रों की अंग्रेजी भाषा की त्रुटियों का अध्ययन।

A study of pupils errors in Englihs in Junior High Schools.

इस अध्ययन में जूनियर हाई स्कूल में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के लिखित कार्यों की समीक्षा की गयी। छात्रों की भाषागत त्रुटियाँ, उनके कारण तथा उन त्रुटियों को दूर करने के लिए उपायों पर विस्तार से विचार किया गया।

2. अंग्रेजी के शिक्षकों के अंग्रेजी ध्वनियों के उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों का विश्लेषण।

An analysis of the errors of English sounds in the pronunciation of teachers of English.

अंग्रेजी के शिक्षक, जो संस्थान में विभिन्न कार्यक्रमों के लिए उपस्थित होते हैं— उनके अंग्रेजी वाचन को रिकार्ड किया गया तथा अंग्रेजी उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों का विशद विश्लेषण किया गया। अन्त में उनके सुधारने के उपायों का वैज्ञानिक विवरण दिया गया।

3. अंग्रेजी व्याकरण शिक्षण में सुधार लाने हेतु सुझाव—दो भागों में।

Suggestions for bringing improvement in the teaching of English grammar Part I & II.

लघु प्रशिक्षण तथा अनुगमन कार्यक्रमों के शिक्षकों की अंग्रेजी भाषा संबंधी अशुद्धियों का अध्ययन किया गया तथा उनके आधार पर इन दो पुस्तकों की रचना की गयी। इनमें व्याकरण के उन बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है जो साधारण व्याकरण की पुस्तकों में प्राप्त नहीं होते और जिनकी आवश्यकता अध्यापकों को अनुभव होती है। इनकी जानकारी से शिक्षक इन बिन्दुओं को और अच्छी तरह से सिखा पायेंगे।

(4) अंग्रेजी के साहित्य निधि का सन्दर्भ ग्रन्थ :

A Reference Book of Literary Heritage in English.

किसी भी भाषा के सीखने में उसके साहित्य का सम्पूर्ण रूप से बहिष्कार नहीं किया जा सकता। संस्थान के विशेषज्ञों ने अनुगमन कार्यक्रमों को संचालित करते समय यह अनुभव किया कि वर्तमान समय में भाषा पक्ष पर अधिक महत्व दिया जाना है क्योंकि विद्यार्थी अंग्रेजी साहित्य से सर्वथा अपरिचित रह जाते हैं। कुछ शिक्षकों द्वारा भी इस दिशा में मार्गदर्शन के लिए अनुरोध किया गया जिसके फलस्वरूप इस ग्रन्थ की रचना हुई। शिक्षित युवा वर्ग में अंग्रेजी साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करने की दिशा में इस ग्रन्थ का योगदान रहेगा जिसमें अमूल्यवान साहित्य कृतियों से उद्धरण एकत्र किए गये हैं।

(5) उत्तर प्रदेश की हाईस्कूल कक्षाओं में अंग्रेजी पढ़ाने वाले अध्यापकों द्वारा किये गये अंग्रेजी लिखित कार्य की अशुद्धियों का अध्ययन

A study of errors in written English committed by teachers of High School.

सतत शिक्षा कार्यक्रम के संचालन के समय यह अनुभव किया गया कि अध्यापकों को अपनी अशुद्धियों की जानकारी प्रायः नहीं रहती। इस अध्ययन द्वारा उनके द्वारा की गयी अशुद्धियों का विश्लेषण किया गया जिससे लघु एवं दीर्घकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उन बिन्दुओं पर सघन अभ्यास कराया जा सके। विद्यार्थियों के अंग्रेजी ज्ञान के स्तर को उन्नत करने के लिए यह आवश्यक है कि अध्यापकों का भाषा ज्ञान भी उपयुक्त हो।

(6) अंग्रेजी अध्यापकों के सहायतार्थ अतिरिक्त शिक्षण सामग्री का प्रणयन।

Ways of increasing support material to the teachers of English

यह अध्ययन अध्यापकों के अंग्रेजी उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों का है। त्रुटियों का विश्लेषण करने के पश्चात कुछ निष्कर्ष निकाले गये हैं जिनके आधार पर निदानात्मक अभ्यास कार्य इंगित किये गये हैं।

(7) जूनियर हाईस्कूल के छात्रों की अंग्रेजी वर्तनी को सुधारने के उपाय।

Improvement of English spellings of students studying in J. H. S.

संस्थान द्वारा संचालित दीर्घकालीन तथा अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने वाले अध्यापकों के लिखित कार्य की समीक्षा करने पर वर्तनी की अनेक त्रुटियाँ मिलीं।

अंग्रेजी वर्तनी की भ्रामकता सर्वविदित है। एक अक्षर से कई ध्वनियों का बोध होता हैं और एक ही ध्वनि को भिन्न प्रकार की वर्तनियों से समझाया जाता है। फिर भी उसके कुछ सिद्धान्त हैं, कुछ नियम हैं, अध्यापकों के प्रयोगार्थ उन्हीं नियमों को इस पुस्तिका में एक ही स्थान पर एकत्र करके रखा गया है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त निम्नलिखित शोध/अध्ययन/परियोजना संस्थान द्वारा पूर्ण किये गये हैं :—

(1) विद्यार्थियों के हस्तलेख की त्रुटियों का अध्ययन तथा उन त्रुटियों को दूर करने के उपाय।

A study of deficiencies in pupil's handwriting and suggesting ways to remedy them

नियमित कार्यक्रमों के दौरान छात्रों के सम्पर्क में आने से यह ज्ञात हुआ कि वर्तमान समय में विद्यार्थियों के हस्तलेख पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता है। अंग्रेजी हस्तलेख में कई बातें शिक्षण योग्य होती है जैसे बड़े और छोटे अक्षरों के आकार, उनका रेखा से नीचे जाना या ऊपर जाना इत्यादि। बहुधा अध्यापक भी इन नियमों को नहीं जानते। अतः यह एक बहुत ही उपयोगी पुस्तिका है।

(2) राष्ट्रीय एकता पर स्रोत सामग्री

Source Material on National integration

आज की आवश्यकताओं को देखते हुए एक बहुधर्मी समाज में एकता के परिप्रेक्ष्य में लेखकों, कवियों और विचारकों की रचनाओं से प्रासंगिक उद्धरणों के चयन के दृष्टिकोण से विभिन्न मतों के अध्यापक प्रतिभागियों के रुझान का अध्ययन किया गया। अध्ययन की अवधि में स्पष्ट रूप से देखा गया कि कुछ महान लेखकों एवं कवियों के विचार सामाजिक एकता को सम्बल प्रदान करने के लिए बहुत ही उपयोगी हैं। इसी के आधार पर यह संकलन किया गया। इस पुस्तिका में भारत की महान विभूतियों के उन लेखों व भाषाओं के अंश सम्मिलित हैं, जो राष्ट्रीय एकता के लिए अनुप्रेरित करते हैं।

(3) उच्च माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी लेखन के शिक्षण में सुधार लाने के सुझाव।

Suggestions for bringing improvement in the teaching of written English at the Higher Secondary stage.

अनुगमन कार्यक्रमों के दौरान देखा गया कि अंग्रेजी शिक्षण के सभी पक्षों की तरह लेखन पक्ष भी अत्यन्त दुर्बल है। कदाचित अध्यापक वर्ग को इस पक्ष के शिक्षण के सम्बन्ध में जो जानकारी होनी चाहिए वह नहीं हैं क्योंकि अधिकतर अध्यापक प्रशिक्षित नहीं हैं। इस अभाव को दूर करने के लिए इस पुस्तिका की रचना की गयी है। यह शोध कार्य निश्चय ही इस स्तर के अध्यापकों का, विद्यार्थियों के अंग्रेजी लेखन में सुधार लाने के उपायों के सम्बन्ध में, मार्गदर्शन कर सकेगा।

(4) हाईस्कूल स्तर पर काव्य शिक्षण का पुनर्वीक्षण तथा उसे सुधारने के सुझाव।

A Review of teaching of poetry at the H. S. level and few suggestions for its improvement.

इस परियोजना का उद्देश्य हाईस्कूल स्तर पर पढ़ाने वाले अध्यापकों को काव्य शिक्षण के सम्बन्ध में उपयोगी बातें बताना है और साथ ही हाईस्कूल की अंग्रेजी पाठ्य-पुस्तक में दी गयी कविताओं को कैसे पढ़ाया जाना चाहिए, यह भी बताया गया है। यह कार्य वास्तविक कक्षा-शिक्षण पर आधारित है।

(5) भारतीय लेखकों द्वारा लिखी गयी अंग्रेजी साहित्य की कृतियों से उद्धरणों का संकलन।

A literary heritage of Indian writing in English.

अंग्रेजी साहित्य का यह सौभाग्य है कि इसको द्वितीय भाषा के रूप में जानने वाले भी इसमें उत्तम कोटि का साहित्य सृजन करने में समर्थ हैं। दीर्घकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि में प्रतिभागी अध्यापकों को पाठ्यपुस्तकों में दिये गये भारतीय लेखकों की कृतियों से अत्याधिक परिचित कराया जाता है। इस दिशा में और अधिक सामग्रियों से उनका परिचय कराने के लिए इस संकलन की रचना की गयी है ताकि अध्यापकों के

माध्यम से विद्यार्थियों का भी इन रचनाकारों की रचनाओं से परिचय हो जाय। यह सामग्री महान भारतीय लेखकों और कवियों की अंग्रेजी कृतियों को आद्योपान्त पढ़ने के लिए पाठक को अनुप्रेरित करेगी।

(6) इण्टरमीडिएट स्तर पर व्यावसायिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विद्यार्थियों की व्यावसायिक निपुणताओं की अभिवृद्धि।

Promoting vocational skills in English for vocational purposes at the Intermediate level.

इस परियोजना का उद्देश्य माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा निर्धारित व्यवसाय-परक पाठ्यक्रमों में उन क्षेत्रों का पता लगाना है जहाँ अंग्रेजी की विशेष शब्दावली का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है।

इसका दूसरा उद्देश्य प्रत्येक व्यवसायपरक पाठ्यक्रम के लिए विशेष उद्देशीय अंग्रेजी का पाठ्यक्रम प्रस्तुत करना है।

(7) छात्रों में प्रभावी सम्प्रेषण के विकास हेतु अध्यापकों की कार्यकुशलता में अभि-वृद्धि निमित्त तकनीक—भण्डार का विस्तरण।

Broadening Teacher's repertoire of teaching techniques to enable learners to communicate effectively.

इस परियोजना का उद्देश्य अंग्रेजी के अध्यापकों को विभिन्न प्रकार की विधि एवं विधाओं से परिचित कराना है। ये विधियाँ भाषा विज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित तथा तर्कसंगत है।

4. शिक्षणोपयोगी साहित्य/सामग्री का प्रणयन

अंग्रेजी शिक्षण के स्तर को उन्नत करने हेतु शिक्षण के अतिरिक्त पाठ्यक्रम पाठ्य-पुस्तकें, शिक्षण सामग्री तथा परीक्षा प्रणाली में भी सुधार लाने की आवश्यकता को समझते हुए संस्थान ने आरम्भ से ही इन कार्यों को अत्यन्त महत्व दिया है। इसके फलस्वरूप सर्व-प्रथम जूनियर हाईस्कूल तथा हाईस्कूल कक्षाओ के लिए अंग्रेजी पाठ्यक्रम की रचना की गयी। तत्पश्चात उन पाठ्यक्रमों पर आधारित पाठ्यपुस्तकों की रचना की गयी। उचित ढंग से शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सहायक शिक्षण सामग्री तथा शिक्षकों के प्रयोग हेतु हस्त पुस्तिकाओं की भी रचना की गयी। पूर्व में तत्कालीन पाठ्यपुस्तकों के आधार पर ग्रामोफोन रिकार्ड, दीवाल चित्र तथा फ्लैश कार्डस भी तैयार किये गये।

रेडियो पाठ-कक्षा 9, 10 के प्रयोगार्थ :

परिषद के आदेश से संस्थान द्वारा कक्षा 9 तथा कक्षा 10 के अंग्रेजी पाठ्यक्रम पर आधारित 30 रेडियो पाठों का लेखन तथा ध्वनि अंकन वर्ष 1990-91 के शिक्षा सत्र में आकाशवाणी, लखनऊ द्वारा प्रसारित किये जाने हेतु तैयार किये गये हैं। इन रेडियो पाठों में हाई स्कूल कक्षाओं के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तकों तथा अंग्रेजी व्याकरण पर पाठ प्रस्तुत किये गये हैं। यह प्रयास किया गया है कि यह पाठ अंग्रेजी भाषा का ज्ञानवर्धन करने के साथ-साथ विद्यार्थियों के लिए परीक्षा की दृष्टि से भी लाभप्रद हो।

5. केन्द्रीय वित्तीय सहायता से आयोजित कार्यक्रम

वर्ष 87-88 तथा 88 89 में संस्थान को केन्द्रीय सरकार के केन्द्रीय अंग्रेजी तथा विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद के माध्यम से वित्तीय सहायता प्राप्त हुई।

इस वित्तीय सहायता का उद्देश्य अंग्रेजी भाषा शिक्षण संस्थानों का सुदृढ़ीकरण है। इसके अन्तर्गत पुस्तकों तथा श्रव्य दृश्य सामग्रियों का क्रय, कार्यशालाओं का आयोजन, ग्रामीण तथा आदिवासी क्षेत्रों में अंग्रेजी पठन-पाठन के स्तर को बेहतर बनाने के लिए शोध के आधार पर सहायक शिक्षण सामग्रियों का प्रणयन तथा अन्य शोध कार्यों का प्रणयन सम्मिलित है। इस योजना के अन्तर्गत संस्थान द्वारा वर्ष 88-89 में तीन तथा वर्ष 89-90 में दो कार्यशालाएँ आयोजित की जा चुकी हैं।

पुस्तकों तथा अन्य सामग्रियों के क्रय करने हेतु अनुदानित राशि का अधिकांश उपयोग हो चुका है।

ग्रामीण तथा आदिवासी क्षेत्रों में अंग्रेजी शिक्षण के स्तर को उन्नत करने हेतु सामग्रियों के निर्माण हेतु शोध कार्य किया जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि संस्थान के अपने अनुमोदित कार्यक्रमों को सम्पादित करने के साथ-साथ संस्थान के विशेषज्ञ केन्द्रीय योजनान्तर्गत स्वीकृत कार्यक्रमों को पूर्ण करने के लिए दत्तचित्त हैं। इन योजनाओं की विशेषता यह है कि प्रदेश के दुर्गम क्षेत्रों में निवास करने वाले छात्र/छात्राओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है। आदिवासी एवं देहाती क्षेत्रों में अंग्रेजी शिक्षण की प्रभावी व्यवस्था अनिवार्यतः वांछित है। इसी दृष्टिकोण से इन क्षेत्रों के लिए विशेष पठन सामग्रियों के निर्माण और अंग्रेजी शिक्षकों/शिक्षिकाओं के पत्राचार प्रणाली के माध्यम से प्रशिक्षण की व्यवहार्य व्यवस्था का अध्ययन करने का विशेष प्रयास किया जा रहा है।

संस्थान का कार्यकलाप निम्नलिखित रेखा चित्र से स्पष्ट हो सकता है :—

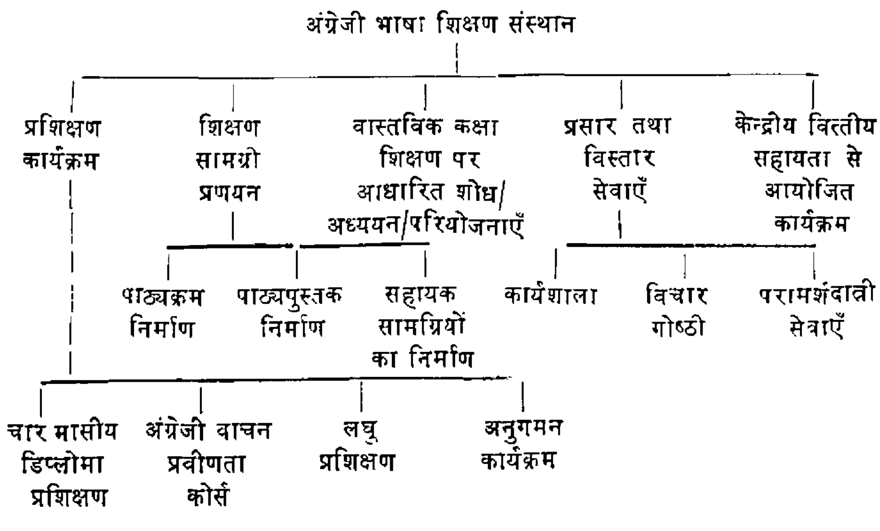

संस्थान अपनी आयु के लगभग 35 वर्ष पूरे कर चुका है और इस अल्पावधि में इसने प्रदेश में अंग्रेजी पठन-पाठन के स्तरोन्नयन की दिशा में विशिष्ट योगदान किया है। राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की स्थापना के विगत एक दशक में इसकी विशिष्ट उपलब्धियाँ रही हैं। प्रशिक्षण एवं शोध दोनों ही पक्षों में इसने अपने लक्ष्य को सदैव प्राप्त किया है। परिषद के वर्तमान निदेशक महोदय श्री हरि प्रसाद पाण्डेय के नेतृत्व, प्रेरणा एवं कुशल निर्देशन से इस संस्थान की गतिविधियों को एक नयी दिशा मिली है। यह निरन्तर अपने उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में प्रयत्नशील रहा है और आशा है कि भविष्य में इसके स्वरूप को एक नया आयाम मिलेगा। संस्थान की नवीन संज्ञा के अनुरूप यदि इसकी गतिविधियों का विस्तार करते हुए अन्य विदेशी भाषाओं के पठन-पाठन की व्यवस्था शासन द्वारा की गयी, जैसा कि संकल्पित है, तो यह प्रदेश एवं देश के व्यापक हित में समर्पित भाव से कार्य कर सकेगा और परिषद की इकाइयों में इसका विशिष्ट स्थान अक्षुण्ण रहेगा।

● ●

एक स्मरण

सन् 1974 ई० की जनवरी के आस-पास की बात है। अंग्रेजी भाषा शिक्षण संस्थान पहले राजकीय सेन्ट्रल पेडागाजिकल इन्स्टीट्यूट, इलाहाबाद के प्रांगण में तीन या चार कमरों में संचालित होता था। मेरे कार्यकाल में इसकी वर्तमान इमारत का नक्शा बना। हमारे रायल्टी फन्ड के दो लाख रुपये के योगदान से यह पी० डब्ल्यू० डी० की देख-रेख में दो तीन वर्ष में बन कर तैयार हुई। उन्हीं दिनों राज्य विज्ञान संस्थान की स्थापना हुई। इसके लिए जगह की नितान्त आवश्यकता थी और कुछ चर्चा हमारी नयी इमारत के संदर्भ में भी सुनने में आयी। आँग्ल भाषा कहाँ विज्ञान के मुकाबले में ठहर पायेगी, इसलिए तुरन्त शुभ मुहूर्त निकलवा कर मैंने श्री देवी दत्त जोशी को आदेश दिया कि प्रधान कर्णिक की देख-रेख में नयी इमारत में पदार्पण किया जाय। मुझे तारीख तो याद नहीं है, लेकिन हम लोगों ने पुरानी इमारत को खाली कर दिया और एलनगंज स्थित नव निर्मित वर्तमान इमारत में पहुँच गये। फिर डॉ० राम लाल सिंह जी अध्यक्ष, लोक सेवा आयोग से उसका उद्घाटन कराया। मेरा स्वप्न तो माननीय उप राष्ट्रपति महोदय या प्रदेश के राज्यपाल महोदय से उद्घाटन कराने का था।

तत्कालीन बेसिक शिक्षा निदेशक माननीय श्री निवास शर्मा जी से इसके पश्चात भेट होने पर उन्होंने मुझसे पूछा कि आपने इमारत परिवर्तन के सम्बन्ध में मुझसे आदेश क्यों नहीं लिया। मैंने तुरन्त उत्तर दिया, 'जो चीज मेरे अधिकार क्षेत्र की है, उसके लिए मुझे आपसे पूछने की क्या आवश्यकता थी।' फिर मैंने कहा, 'आप भी तो ऐसा ही करते हैं, आपका अनुसरण मुझे करना ही चाहिए था।' माननीय श्री निवास शर्मा जी मुस्कराये और वही उनकी स्वीकृति थी। मैं उनका आभारी हूँ।

हस्ताक्षर
रा० दा० गुप्त
अवकाश प्राप्त निदेशक,
आंग्ल भाषा शिक्षण संस्थान, उ० प्र०,
इलाहाबाद

● ●

प्रकाशन विभाग

(पाठ्यपुस्तक विभाग, लखनऊ)

राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश का प्रकाशन विभाग मुख्यतः प्राइमरी तथा जूनियर हाईस्कूल स्तर की पाठ्यपुस्तकों की व्यवस्था के दायित्व का निर्वहन करता है। यह विभाग मानक स्तर की पाठ्य सामग्री की रचना, उसके प्रकाशन, मुद्रण की व्यवस्था तथा नियन्त्रित मूल्यों पर प्रदेश के समस्त अंचलों में पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता अपने सीमित मानवीय संसाधनों के माध्यम से सुनिश्चित करता है।

प्रदेश के समस्त छात्रों को समय से, उचित मूल्य पर मानक स्तर की समान पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पाठ्यपुस्तकों की राष्ट्रीयकरण योजना का सूत्रपात हुआ। इस प्रदेश में यह कार्य 1941–42 से प्रारम्भ हुआ और तब से विभिन्न चरणों में प्राइमरी तथा जूनियर हाईस्कूल स्तर की पाठ्यपुस्तकों का राष्ट्रीयकरण किया जाता रहा।

वर्ष 1981 से राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद की स्थापना के पश्चात इस विभाग की कार्य व्यवस्था को विशेष गति मिली और वर्तमान में यह विभाग अपने दायित्वों के साथ-साथ पाठ्य सामग्री विकास आदि से सम्बन्धित परिषद के विभिन्न विभागों के कार्यों मे संयोजकत्व भी कर रहा है।

पाठ्यपुस्तकों को शैक्षिक अधिगम प्रक्रिया का सशक्त एवं प्रभावी माध्यम बनाने के लिए इसकी विषय सामग्री को सामाजिक अपेक्षाओं और आकांक्षाओं के अनुरूप अद्यतन स्वरूप प्रदान करना आवश्यक होता है जिससे प्रत्येक क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों की झलक इसमें मिल सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के प्रति यह विभाग निरन्तर प्रयत्नशील रहा है।

(क) पाठ्य सामग्री की समीक्षा एवं मूल्यांकन :

प्राइमरी तथा जूनियर हाईस्कूल स्तर की पाठ्य सामग्री की समीक्षा की व्यवस्था विभाग द्वारा की जाती है। राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद की स्थापना के पश्चात समीक्षा विषयक कार्यों को व्यापक स्वरूप प्रदान किया गया है।

(1) प्राइमरी तथा जूनियर हाईस्कूल स्तर की भाषा तथा सामाजिक विषय की पाठ्य सामग्री की समीक्षा राष्ट्रीय एकीकरण की दृष्टि से करायी गयी। इस कार्य के सम्पादन हेतु भाषा तथा सामाजिक विषय विषयक दो राज्य स्तरीय समितियों का गठन किया गया। इन समितियों ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा उपलब्ध कराये गये दिशा निर्देशों के आधार पर प्रचलित पाठ्य सामग्री का परीक्षण

कर सुझाव दिये । समिति की संस्तुतियों के अनुसार पाठ्यपुस्तकों में संशोधन समायोजित किये जा चुके हैं । समिति की संस्तुति के आलोक में जूनियर हाईस्कूल स्तर की इतिहास विषय की 3 तथा हिन्दी भाषा सहायक पाठ्यपुस्तक की 3 पुस्तकों की नवरचना भी की जा चुकी है ।

(2) शैक्षिक सत्र प्रारम्भ होने से पूर्व एवं मुद्रण की व्यवस्था से पहले विभिन्न विशेषज्ञ विभागों के माध्यम से पाठ्य सामग्री को अद्यतन स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से नियमित रूप से समीक्षा करा कर अपेक्षित संशोधनों को समायोजित किया जाता है ।

(3) राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद के दिशा निर्देशन में विभाग द्वारा निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्राइमरी तथा जूनियर हाईस्कूल स्तर की पाठ्य सामग्री की समीक्षा भी करायी गयी है ।

- पर्यावरण
- प्रदूषण
- सामाजिक वानिकी
- स्वास्थ्य शिक्षा
- श्रम का महत्व
- मानवीय मूल्य
- जनसंख्या शिक्षा
- स्वतन्त्रता आन्दोलन
- वनो का संरक्षण

(4) उक्त बिन्दुओं के सन्दर्भ में की गयी समीक्षाओं से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर पाठ्य सामग्री में यथोचित संशोधन किया जा चुका है ।

(5) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत उल्लिखित दिशा निर्देशों तथा समान केन्द्रिक तत्वों के परिप्रेक्ष्य में प्राइमरी तथा जूनियर हाईस्कूल स्तर की पाठ्य सामग्री की समीक्षा की जा चुकी है ।

(6) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा कार्य सहायता योजना के आधार पर प्रदेश स्तर पर राज्य स्तरीय समिति का गठन हुआ । प्रदेशीय कार्य योजना के अनुसार प्राइमरी तथा जूनियर हाईस्कूल स्तर की पाठ्यपुस्तकों के सन्दर्भ में कार्यवाही सम्पादित हो रही है ।

(ख) पाठ्य सामग्री का विकास :

प्राइमरी तथा जूनियर हाईस्कूल स्तर की पाठ्य सामग्री के विकास की व्यवस्था इस विभाग द्वारा सम्पन्न की जाती है । इस कार्य सम्पादन में परिषद के प्रारम्भिक शिक्षा

विभाग, विज्ञान और गणित विभाग, हिन्दी संस्थान तथा विदेशी भाषा विभाग की महत्व-पूर्ण भूमिका रहती है। लेखक मण्डल में बाल साहित्य विशेषज्ञों, शिक्षाविदों तथा विषय विशेषज्ञों को रखा जाता है। प्रत्येक पुस्तक में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद के प्रतिनिधि को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया जाता है।

(1) जूनियर हाईस्कूल स्तर की इतिहास की 3 तथा हिन्दी भाषा की 3 पुस्तकों की नवरचना की गयी है।

(2) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सन्दर्भ में पाठ्यक्रम को नवीन स्वरूप प्रदान किया गया और इसके अनुसार प्रथम चरण में कक्षा एक की 1 तथा कक्षा तीन की 4 कुल पाँच पुस्तकों की नवरचना की गयी और इनका प्रचलन शैक्षिक सत्र 1990 से किया जा चुका है। प्रदेशीय कार्ययोजना के द्वितीय चरण में कक्षा 2, 4 तथा 6 की पाठ्यपुस्तकों की नवरचना का कार्य अन्तिम चरण में है। विभाग का प्रयास है कि उक्त कक्षाओं की निर्माणाधीन पुस्तकों का प्रचलन शैक्षिक सत्र 1991 से हो सके।

(ग) पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन/मुद्रण :

प्रदेशीय व्यवस्था के अन्तर्गत कक्षा 1 से 8 तक की पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन/मुद्रण प्रदेश स्थित निजी प्रकाशकों/मुद्रकों से कराया जाता है। शासन द्वारा अनुमोदित विज्ञप्ति के आधार पर प्राप्त आवेदन पत्रों पर निर्धारित प्रक्रिया के अन्तर्गत विचार करते हुए कार्य आवंटन हेतु योग्य प्रकाशकों/मुद्रकों का चयन किया जाता है।

(1) चयनित प्रकाशकों/मुद्रकों को उनकी क्षमता के आधार पर कार्य आवंटित किया जाता है, इसके लिए विभाग से नियमानुसार अनुबन्ध आदि की व्यवस्था है।

(2) पुस्तक मुद्रण हेतु विभाग द्वारा आवंटियों को आदर्श प्रति प्रदान की जाती है। इस आदर्श प्रति का निर्माण विभाग द्वारा विशेष रूप से कराया जाता है।

(3) राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों के मुद्रण के लिए कागज की व्यवस्था विभाग द्वारा की जाती है।

(4) राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों के आवरण पृष्ठों के कागज तथा इनके मुद्रण की व्यवस्था भी विभाग द्वारा करायी जाती है।

(5) राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों के आवरण-पृष्ठों के मुद्रण में गुणात्मक सुधार लाने के सम्बन्ध में विभाग द्वारा गम्भीरता से प्रयास किया जा रहा है, जिससे आवरण-पृष्ठों का मुद्रण आकर्षक एवं सुरुचिपूर्ण हो सके।

(6) पाठ्यपुस्तकों के मुद्रण स्तर को सुधारने की दिशा में विभाग सतत प्रयत्नशील है। इसके लिए निरीक्षण व्यवस्था को अधिक गतिशील बनाया जा रहा है और मानक स्तर के मुद्रण के प्रति प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए "मैरिट योजना" की व्यवस्था है। संबंधित समिति की संस्तुति पर इस योजना के अन्तर्गत जहाँ एक ओर उच्च स्तरीय मुद्रण के लिए

प्रशंसापत्र आदि देने की व्यवस्था है वहीं निम्न स्तरीय मुद्रण हेतु दण्ड की भी व्यवस्था है। कार्य की स्तरीय स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से इस योजना को व्यापक स्वरूप प्रदान किया जाना प्रस्तावित है।

वर्तमान में प्रकाशन विभाग प्राइमरी तथा जूनियर हाईस्कूल स्तर (कक्षा 1 से 8) की 86 राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों की प्रकाशन/मुद्रण की व्यवस्था कर रहा है। इनमें 33 उर्दू माध्यम की पाठ्यपुस्तकें भी हैं। इनका स्तरानुसार विवरण निम्नवत् हैं :—

कक्षा 1 से 5 तक (हिन्दी माध्यम)

कक्षा	हिन्दी	गणित	सामा० वि०	विज्ञान	नैतिक शिक्षा	योग
1	1	–	–	–	–	1
2	1	1	–	–	–	2
3	1	1	1	1	–	4
4	1	1	1	1	1	5
5	1	1	1	1	1	5
						योग—17

कक्षा 1 से 5 तक (उर्दू माध्यम)

कक्षा	उर्दू	गणित	सामा० वि०	विज्ञान	योग
1	1	–	–	–	1
2	1	1	–	–	2
3	1	1	1	1	4
4	1	1	1	1	4
5	1	1	1	1	4
					कुल योग—15

कक्षा 6 से 8 (हिन्दी माध्यम)

कक्षा	हिन्दी	गणित	संस्कृत	अंग्रेजी	भूगोल	इति०	विज्ञान	कृषि	नैतिकशि०	योग
6	2	2	1	1	1	1	1	1	1	11
7	2	2	1	1	1	1	1	1	1	11
8	2	2	1	1	1	1	1	1	1	11
										योग—33
								कक्षा 6, 7 तथा 8 के लिए सामान्य हिन्दी		1
								जनरल इंगलिश		1
								स्काउट गाइड		1
										कुल योग—36

कक्षा 6 से 8 तक (उर्दू माध्यम)

कक्षा	उर्दू	गणित	विज्ञान	इतिहास	भूगोल	योग
6	1	2	1	1	1	6
7	1	2	1	1	1	6
8	1	2	1	1	1	6
	उर्दू माध्यम कक्षा 6, 7 तथा 8 हेतु					कुल योग—18
						महायोग—86

उपर्युक्त सारणियों से स्पष्ट है कि यह विभाग 86 राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों की, छात्रसंख्या के आवश्यकतानुसार, लगभग 6 करोड़ प्रतियों के प्रकाशन/मुद्रण की व्यवस्था प्रतिवर्ष करता रहा है। इस कार्य में प्रदेश के लगभग 1000 प्रकाशक/मुद्रक सम्बद्ध हैं। वस्तुत: राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन और मुद्रण का वर्तमान स्वरूप बहुआयामी है और इन विभिन्न आयामों के समन्वय का कार्य भी प्रकाशन विभाग सम्यक रूप से कर रहा है। साथ ही यह सन्तोष का विषय है कि गत वर्षों में कागज आदि की विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए विभाग शैक्षिक सत्र का आवश्यकता के अनुसार पाठ्यपुस्तकों की व्यवस्था कर सकने मे समर्थ हो सका।

(घ) पाठ्यपुस्तकों का वितरण एवं अनुश्रवण :

प्राइमरी तथा जूनियर हाई स्कूल की राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों के वितरण की व्यवस्था विभागीय नियंत्रण में सम्बन्धित आवंटियों द्वारा की जाती है। परिषद के गठन के पश्चात इसे प्रभावी और व्यापक स्वरूप प्रदान किया गया है।

1. मानक स्तर की तथा विभागीय अपेक्षा के अनुसार पाठ्यपुस्तकों के मुद्रण को सुनिश्चित करने के लिए जनपदीय शिक्षा अधिकारियों को विस्तृत एवं विशिष्ट निर्देश प्रदान किये जाते हैं। निरीक्षक पाठ्य सामग्री मुद्रण स्तर, कागज तथा आवरण पृष्ठ का विभागीय निर्देशों के आलोक में परीक्षण करने के पश्चात ही इन पुस्तकों को बिक्री हेतु अवमुक्त करते हैं।

2. जनपदीय शिक्षा अधिकारी अपने जनपद की आवश्यकतानुसार पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता को सुनिश्चित करते हैं। इस कार्य में यदि उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई होती है तो विभाग द्वारा उसका परिमार्जन किया जाता है।

3. अनुश्रवण सम्बन्धी व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाने के लिए निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की अध्यक्षता में जनपदीय शिक्षा अधिकारियों की बैठकें आयोजित की जाती हैं, जिसमें दिशा निर्देश प्रदान करते हुए उनके कार्य क्षेत्र तथा विभाग की अपेक्षाओं से उन्हें अवगत कराया जाता है।

4. अनुश्रवण सम्बन्धी व्यवस्था पर प्रभावी नियन्त्रण के लिए साप्ताहिक सूचनाऐं संकलित की जाती हैं।

5. पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता के संदर्भ में पुस्तकों के मुद्रण, कागज तथा आवरण-पृष्ठों की उपलब्धता का अनुश्रवण भी सम्यक रूप से किया जाता है।

(ङ) राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों का मूल्य निर्धारण :

प्रदेशीय व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों के मूल्य को निर्धारित करने के लिए शासन द्वारा 'मूल्य निर्धारण समिति' का गठन हुआ है। यह समिति पाठ्यपुस्तकों की उत्पादन प्रक्रिया के समस्त घटकों पर विचार कर इन पाठ्यपुस्तकों के मूल्य निर्धारण की संस्तुति करती है। इसका एक मात्र उद्देश्य नियंत्रित एवं समान मूल्य पर इन पाठ्य-पुस्तकों को उपलब्ध कराना है।

(च) अन्य क्रियाकलाप :

प्रकाशन विभाग प्राइमरी तथा जूनियर हाई स्कूल स्तर की राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों से सम्बन्धित कार्यों के अतिरिक्त अन्य विभागीय कार्यों का सम्पादन भी वर्तमान में कर रहा है :—

1. अनौपचारिक शिक्षा साहित्य के मुद्रण की व्यवस्था।

2. अनुपूरक साहित्य के चयन के सन्दर्भ में शासन द्वारा गठित राज्य स्तरीय समिति की बैठकों का सम्पादन तथा पुस्तकों की चयन प्रक्रिया सम्बन्धित कार्यवाही।

3. शिक्षा संहिता की धारा 334/सी और 338 के अन्तर्गत पुस्तकालयों आदि के लिए शिक्षण/शिक्षणेतर सामग्री का चयन।

4. केन्द्र पुरोनिधानित योजना के अन्तर्गत क्रय किये जाने वाले साहित्य का चयन।

5. अन्य विभागीय/सामयिक कार्य।

इस प्रकार प्रकाशन विभाग राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद का एक ऐसा विभाग है जो अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए अपने बहुआयामी कार्यों में समन्वय स्थापित कर अपने सीमित मानवीय संसाधनों से गुरुतर कार्यों का सम्पादन कर रहा है। परिषद के गठन के पश्चात विभाग की कार्य व्यवस्था को व्यापकता मिली है। नवीन संबोधों और अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य को नया स्वरूप प्रदान किया जा रहा है। इस परिवर्तित कार्य व्यवस्था का प्रभाव राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों की सम्पूर्ण उत्पादन प्रक्रिया पर पड़ा है। देश के अन्य प्रदेशों की व्यवस्थाओं को देखने, समझने तथा उपयुक्त कार्यों को अपनी प्रदेशीय व्यवस्था में समायोजित करने के अवसर भी बढ़े हैं, जो राष्ट्रीय स्तर पर समान शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में अत्यधिक उपयोगी हैं।

———

Sub. ... Systems Unit,
... Educational
... ation
... Marg, New Delhi-110016
... D-6414
Date ... 3-10-91

NIEPA DC
D06414

मुद्रक : विश्व वाणी प्रेस, 1064, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद, फोन : 53797